



अंक - 38 तिरुता



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
राजकोट एवं शाखा कार्यालय अहमदाबाद, गुजरात



गिरनार परिवार

प्रकाशन

“गिरनार”

कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका

प्रकाशक

महालेखाकार

(लेखा एवं हकदारी),
राजकोट का कार्यालय एवं
अहमदाबाद शाखा कार्यालय,
गुजरात

अंक - 38
गिरनार
2024-25

मूल्य

राजभाषा हिंदी के
प्रति निष्ठा व समर्पण

मुद्रक

अक्षर ग्राफिक - राजकोट

मुख्य संरक्षक



श्री आर.के.सोलंकी
महालेखाकार

संरक्षक



श्री डेनिस डेनियल
उप महालेखाकार/प्रशासन



श्री नेमा राम
उप महालेखाकार/निधि,
लेखा व वीएलसी



श्री राजेन्द्रन नायर
उप महालेखाकार
शाखा कार्यालय अहमदाबाद

प्रकाशन सलाहकार समिति



श्री एस. आर. धुरंधर
व. लेखा अधिकारी
हिंदी



श्री के. सी. टेलर
व. लेखा अधिकारी
हिंदी

संपादक मंडल



श्री प्रमोद कौरव
सहायक लेखा अधिकारी
हिंदी



श्री आर. सी. तिवारी
सहायक लेखा अधिकारी
हिंदी



श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
वरिष्ठ
हिंदी अनुवादक



श्री सुखदेव गोयल
कनिष्ठ
हिंदी अनुवादक



श्री सोमदत्त यादव
कनिष्ठ
हिंदी अनुवादक



सुश्री निरमा कुमारी गुप्ता
कनिष्ठ
हिंदी अनुवादक

अस्वीकरण :

पत्रिका में दी गई रचनाओं के लिए रचनाकर स्वयं उत्तरदायी है, इनसे संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का नाम	प्रकार	रचनाकार / पदनाम	पृ.सं.
1	हमारे ए.जी. सर, श्री आर.के.सोलंकी	लेख	श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल/व.हिंदी अनुवादक	11
2	जीना सीख लिया...	कविता	श्री संजय जे.अनडकट/व.लेखा अधिकारी	16
3	राजस्थान का शिमला	लेख	श्री राहुल धायल/स.लेखा अधिकारी	17
4	जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती	लेख	श्रीमती अर्चना महरिया/पत्नी श्री राहुल धायल	21
5	39 साल: अनुभव और स्मृतियाँ	लेख	श्री एस.आर.धुरंधर/व.लेखा अधिकारी	25
6	मातृभूमि के रक्षक	कविता	श्री रवि कुमार/स.लेखा अधिकारी	27
7	हर निशा के बाद सुबह होती है	लेख	श्री प्रमोद कौरव/स. लेखा अधिकारी	29
8	सफलता के 2 मंत्र	लेख	श्रीमती शिवानी कौरव/पत्नी श्री प्रमोद कौरव	30
9	मलाल	लेख	श्री केतन आनंद/स. लेखा अधिकारी	31
10	जयपुर : गुलाबी नगर का आकर्षण	लेख	श्री मोहित कुमार/स. लेखा अधिकारी	33
11	जीवन का उद्देश्य	लेख	श्री पमपम कुमार/स. लेखा अधिकारी	35
12	प्रकृति एक वरदान	लेख	श्री विवेक पटेल/स. लेखा अधिकारी	36
13	ओ साथी चल	लेख	श्री अतुल चौधरी/स. लेखा अधिकारी	39
14	जूनागढ़ का भारत में विलय	लेख	श्री मनीष शर्मा/स. लेखा अधिकारी	41
15	सांस्कृतिक धरोहर नाहरगढ़ का किला	लेख	श्रीमती शेफाली शर्मा/पत्नी श्री मनीष शर्मा	43
16	रील्स: एक व्यसन	लेख	सुश्री रिंकी गुप्ता/स. लेखा अधिकारी	47
17	ज्ञान-जीवन की शक्ति	लेख	श्री मुकेश शर्मा/स. लेखा अधिकारी	51
18	द्वारका की यात्रा	लेख	सुश्री लवी आर्य/स. लेखा अधिकारी	54
19	विशाखापट्टनम की यात्रा	लेख	सुश्री लक्ष्मी रानी/स. लेखा अधिकारी	56
20	कश्मीर की यात्रा	लेख	श्री अर्पित अग्रवाल/स. लेखा अधिकारी	57
21	एक बेचैनी सी रहती हैं	कविता	श्री गौरव कुमार उदेनिया/स. लेखा अधिकारी	58
22	माँ के जीवन का कड़वा सच	लेख	सुश्री चांदनी नारेजा/व. लेखाकार	60
23	समय और सफलता	लेख	सुश्री निरमा कुमारी गुप्ता/क. हिंदी अनुवादक	62
24	दोस्ती	कविता	सुश्री कविता/बहन श्री निरमा कुमारी गुप्ता	63
25	राजकोट गेमिंग जोन	लेख	श्रीमती नीलम/पत्नी श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल	68
26	भारत का सिरमौर - कश्मीर	लेख	श्री सोमदत्त यादव/क. हिंदी अनुवादक	72
27	अद्वितीय असम	लेख	श्रीमती प्रियंका यादव/पत्नी श्री सोमदत्त यादव	77
28	विकास	कविता	श्री दीपक परमार/एमटीएस	78
29	भारत अर्थात् इंडिया	लेख	श्री अभिषेक पंड्या/व. लेखाकार-अहमदाबाद	81
30	मोटे अनाज और हमारा स्वास्थ्य	लेख	श्री राकेश कुमार/स. लेखा अधिकारी-अहमदाबाद	83
31	जीवन की सार्थकता	लेख	श्री विकास कुमार सोहू/स.लेखा अधिकारी-अहमदाबाद	85
32	में क्यों रुकूँ	कविता	श्री राजेश सी. तिवारी/स. लेखा अधिकारी-अहमदाबाद	86
33	कोई ख्वाब	कविता	श्री रोहित जुरैल/एमटीएस-अहमदाबाद	87
34	एकांत और अकेलापन	लेख	श्री सुखदेव गोयल/क. हिंदी अनुवादक-अहमदाबाद	89
35	संवाद जो तुमसे कभी हुए नहीं.	कविता	श्री नीरज नांगल/स. लेखा अधिकारी	91

अमित शाह गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री भारत सरकार



प्रिय देशवासियो।

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1940 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहासलिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धो-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़े बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिस को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवा गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है इसका इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संकेनेकका हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण दिखाई इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय के उद्गम देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष माहृत्य देत की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वीं खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम !

नई दिल्ली

14 सितंबर 2024

अमित शाह

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व इकावरी) हरियाणा,
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382
फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA
LEKHA BHAWAN PLOT NO-4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160020
E-mail:- agaharyana@cag.gov.in
EPABX No. 2610957, 2613211, 2615382 Fax No-0172-2603824

हिंदी कक्षा/पावती/2023-24/05
दिनांक: 15.04.2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ हिंदी,
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.), गुजरात,
राजकोट - 360 001

महोदय,
विषय : हिंदी पत्रिका 'गिरनार' के 37वें अंक की ई-प्रति के प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 20.03.24 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'गिरनार' के 37वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं रूप-रेखा सुव्यवस्थित है। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री ऐनी जीजोबजानकारीपरक लेख 'प्राकृतिक संसाधन लेखांकन', सुश्री स्वाति कुमार का लेख 'शब्दों का ताना-बाना' तथा श्री हुसैनी सादिकोट का लेख 'ईश्वर का अस्तित्व-2' ज्ञानवर्धक है। इसके अतिरिक्त, श्री राहुल धायब का वाच्य वृत्त 'मेघालय' पठनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र बंद. उच्च महालेखाकार (पशा.) महोदय के अनुमोदन से भेजा जा रहा है।

भवदीय,
(डॉ. सुधा तिवारी)
हिंदी अधिकारी

26 APR 2024

09/04/2024
26-04-2024
26-04-2024

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit) Chhattisgarh, Raipur

दिनांक: 17-04-2024
Date: 17-04-2024

क्र. हिन्दी कक्षा/पावती/2023-24/जा. 299

प्रति,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं ह.),
गुजरात रेसकोर्स रोड, राजकोट-360001

विषय:- गिरनार अंक-37 की ई पावती का प्रेषण के संबंध में।
संदर्भ :- सं.हि.अनु.(ले.व.ह.)/गिरनार-37/06/2023-24/132 दिनांक 20-03-2024

महोदय/महोदया
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह ई-पत्रिका 'गिरनार' के अंक-37 की पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक-मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

(जितेन्द्र कुमार अग्रवाल)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्षा

25 APR 2024
Office of the P.A.G. (A & E)
Chhattisgarh, India

पॉस्ट - विधानसभा, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 492005 (छत्तीसगढ़)
Post - Vidhansabha, Zero Point, Raipur - 492005 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 0771-2281401 • फैक्स/Fax : 2582505 • ईमेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

संदेश

कार्यालय महादेशिक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
एजीसीआर भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110 002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT,
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
A.G.C.R. BUILDING I.P. ESTATE,
NEW DELHI-110 002

सं. प्रशा/रा.भा.पत्रि./23/2023-24/04 दिनांक 18.04.2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.)
गुजरात, राजकोट-360001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'गिरनार' के 37 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,
उपयुक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "गिरनार" के 37 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री जीजा कुरप का लेख "भारत के विकास में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की भूमिका" और श्री मुना कुमार की कविता "तापरवाही" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
संपादक एवं हिंदी अधिकारी

10 (सामान्य अक्षरी)
26-04-2024
26-04-2024

दूरभाष / Phone : +91-11-23702357, फैक्स / Fax : +91-11-23702359, E-mail : pdaiaca@cag.gov.in

सरकार भारत
भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
विभाग प्रमुख, भिक्ता - 111 003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Bhimabhai Pradish, Bhihata 111 003

संख्या: हि.क./आर्य पत्रिका/2023-24/11/10/30/2024/दिनांक: 09-05-2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं ह.), गुजरात,
रेस कोर्स रोड, राजकोट-360001

विषय:- 'गिरनार' पत्रिका के 37वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'गिरनार' के 37वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए बधाई एवं सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित लेख 'प्राकृतिक संसाधन लेखांकन', ईश्वर का अस्तित्व-2, शिक्षा का बदलता स्वरूप, श्री आशुपति उर्वी, भारत विश्व का नगर, शब्दों का ताना बाना, किस्मत अधीन-अधनी, मनोवैज्ञानिक प्रकल्प, आवश्यकता एवं अविष्कार, भक्त मूल्य आदि लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। इन के अतिरिक्त कविताएँ, जेदनी, रेस उक, अंतरिक्ष बंदर, दोस्तों, ज्ञानवर्धक, प्रेमज्य आदि भी शान्ति उत्कृष्ट एवं रुचिकर हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Signed by Anuradha Sood
Date: 09-05-2024 15:56:13
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
Anuradha Sood, SAG(HINDI)-AS,
HINDI



श्री आर. के. सोलंकी
महालेखाकार

“गिरनार” हिंदी पत्रिका के 38 वें अंक हेतु संदेश

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिये को सूल।

हिन्दी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा कही गई ये उपरोक्त पंक्तियां किसी भी राष्ट्र के उत्थान में मातृभाषा की महत्ता को स्पष्टता के साथ परिभाषित करती हैं।

इसी क्रम में हमारी राजभाषा हिंदी के विकास व संवर्धन हेतु कार्यालय द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दी पत्रिका 'गिरनार' का प्रकाशन किया जाता है। जो कि राजभाषा के प्रचार प्रसार में पत्रिका के माध्यम से यह योगदान हमारा एक विनम्र प्रयास है। पत्रिका हेतु निरंतर रचनाएं देने वाले कार्मिक एवं प्रकाशक मण्डल में शामिल अधिकारियों व कर्मचरियों के प्रयास सराहना के पात्र हैं।

आशा करता हूँ 'गिरनार' पत्रिका का 38वां अंक आपको पसंद आएगा और आपके राज भाषा संबंधी ज्ञान संवर्धन में सहायक सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

जय भारत, जय हिंदी!



श्री डेनिस डेनियल
उप महालेखाकार/ प्रशासन

“गिरनार” हिंदी पत्रिका के 38 वें अंक हेतु संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'गिरनार' के 38वें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय के सदस्यों द्वारा हिंदी पत्रिका में स्वरचित रचनाएँ देना एवं हर वर्ष कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि कार्यालय के सभी सदस्यों में हिंदी के प्रति उनका अपना एक रुझान है और उनका हिंदी के प्रति रुझान होना स्वाभाविक भी है क्योंकि हिंदी की व्यापक स्वीकार्यता एवं अन्य भाषाओं के साथ सहज निकटता हिंदी के सरल व सहज होने का प्रतीक है।

इस अंक के प्रकाशन के साथ-साथ मैं आशा करता हूँ कि आगे भी कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका प्रकाशित होती रहेगी और राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार होता रहेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई |

जय हिन्द!



श्री नेमा राम

उप महालेखाकार/निधि,
वीएलसी एवं लेखा

“गिरनार” हिंदी पत्रिका के 38 वें अंक हेतु संदेश

इस कार्यालय द्वारा प्रति वर्ष गृह-पत्रिका **“गिरनार”** का प्रकाशन किया जाता है। इस वर्ष 38वें अंक के प्रकाशन पर मुझे हर्षानुभूति हो रही है।

हर वर्ष प्रकाशित होने वाली गृह-पत्रिका **“गिरनार”** के माध्यम से कार्मिकों की अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभाएँ परिलक्षित होती है।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **“गिरनार”** का सदैव एक विशिष्ट योगदान रहा है। **“गिरनार”** पत्रिका हिंदी के प्रति प्रेम जागृत करने में मददगार सिद्ध होगी। इसी उद्देश्य के साथ यह अंक प्रकाशित किया जा रहा है और आशा करता हूँ यह आपको पसंद आएगा। इसके साथ ही समस्त **“गिरनार”** परिवार को पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिन्द! जय भारत!



श्री राजेन्द्रन नायर

उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
(शाखा कार्यालय, अहमदाबाद)

“गिरनार” हिंदी पत्रिका के 38 वें अंक हेतु संदेश

इस कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका **“गिरनार”** के 38वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। जैसा की सर्वविदित है की राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता हेतु एक सर्वव्यापी भाषा की आवश्यकता होती है। राजभाषा हिंदी को सम्पूर्ण देश में कार्यालयी भाषा के तौर पर संवैधानिक दर्जा मिला है। कार्यालयी पत्रिकाएँ कार्मिकों के विचारों, भावनाओं और अभिव्यक्ति का दर्पण होती है।

इन पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ कार्मिकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा का प्रमाण है। हमारे कार्यालय के कार्मिक शासकीय कार्य में हिंदी का प्रयोग कर हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी गृह पत्रिका **“गिरनार”** का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिंद ।



श्री एस.आर.धुरंधर
(व.लेखा अधिकारी/हिंदी)

“गिरनार” हिंदी पत्रिका के 38 वें अंक हेतु संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "गिरनार" के 38वें अंक का विमोचन करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस हिंदी पत्रिका के प्रकाशन का कठिन कार्य विद्वान लेखकों के सहयोग के बिना संभव नहीं था।

इस कार्यालय में कार्मिकों का हिंदी के प्रति लगाव एवं कार्य विशेष सराहनीय है। यहाँ का **हिंदी पखवाड़ा**, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ एक बड़े पैमाने पर मनाया जाना और गिरनार पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों के सहयोग से अंक दर अंक समृद्ध होता जा रहा है। गुणवत्तायुक्त पाठ्य-सामग्री, विद्वजन पाठकों तक पहुंचाने का हमारा यह एक प्रयास है। इस अंक की रचनाएँ भी आपको मंत्रमुग्ध कर देंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस अंक के संपादन कार्य की सराहना करते हुए आप सभी पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ तथा इस अंक के लिए भी आपके सुझावों का हृदय से स्वागत करता हूँ।

जय हिन्द! जय हिंदी!



श्री के.आई.कुंतार
(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ हिंदी)
शाखा कार्यालय अहमदाबाद

“गिरनार” हिंदी पत्रिका के 38 वें अंक हेतु संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका **“गिरनार”** के 38वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं आमजन की भाषा है। यह अत्यंत सरल, सहज और सुबोध भाषा है जिसे जन साधारण द्वारा आसानी से लिखा, पढ़ा और बोला जा सकता है।

राजभाषा के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार पर ही हमारा साहित्यिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय विकास निर्भर है। राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है कि हम राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास में सहभागी बनें।

कार्यालयी पत्रिकाएं न केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में सहायक होती हैं अपितु कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन क्षमता और शैली को निखारने में भी बहुत सहायक होती हैं। पत्रिका के इस अंक को समृद्ध करने में कार्यालय के कार्मिकों ने अपनी अद्भुत लेखन क्षमता और रचना कौशल का परिचय दिया है। रचनाकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों पर आधारित अत्यंत रूचिकर, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक रचनाएँ प्रेषित कर इस अंक को प्रभावशाली बनाने में सहयोग दिया है। उम्मीद है कि गृह पत्रिका का यह अंक पाठकों की ज्ञान पिपासा को तृप्त करेगा। पत्रिका का सफल प्रकाशन हिंदी के प्रति कार्यालय के कार्मिकों की जागरूकता और समर्पण की भावना का ही प्रतिफल है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई।

जय हिन्द।

“हमारे ए.जी. सर, श्री आर.के.सोलंकी, सभी के लिए एक प्रेरणास्रोत के रूप में”



श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
व. हिंदी अनुवादक

प्रायः इस जगत में ऐसा कहा जाता है कि इंसान के जीवन का संघर्ष उसके माँ के गर्भ में आने के पश्चात प्रारंभ हो जाता है। यहाँ संघर्ष से हमारा तात्पर्य है यह कि जब शिशु अपनी माँ के गर्भ में होता है तो वह जन्म लेने तक अपनी माँ के गर्भ में जीवित रहने के लिए संघर्ष करता है, फिर वही शिशु जब दुनिया में जन्म ले लेता है तो वह अपने जन्म के बाद धीरे-धीरे बड़ा होकर अपने आने वाले जीवन के सभी पड़ावों से गुजरते हुए और संघर्ष करते हुए जीवन में आगे बढ़ता है। शिशु से बालक बनता है और फिर बालक बनने के पश्चात वह स्कूल जाकर अपनी स्कूली शिक्षा ग्रहण करता है और वहाँ वह अपने जीवन में ज्ञान हासिल करने के बाद उसी ज्ञान के बल पर वह अपने जीवन को एक नई दिशा देने हेतु अपने लिए कोई न कोई रोजगार का क्षेत्र चुनता है, वह क्षेत्र किसी प्रकार का सरकारी क्षेत्र भी हो सकता है और निजी क्षेत्र भी।

ये हम सब भलीभाँति जानते हैं कि व्यक्ति द्वारा एक बेहतर जीवन जीने के लिए धन की नितांत आवश्यकता होती है, जो उसको अपने द्वारा चयनित किसी प्रकार के रोजगार/व्यवसाय चयनित करने पर ही मिलता है, जिससे उसका जीवनयापन होता है। इसलिए, व्यक्ति अपने जीवन को एक बेहतरीन जीवन बनाने और उसे एक सार्थक दिशा देने हेतु कोई न कोई एक बेहतर रोजगार/व्यवसाय जो वह चाहता है, उसको चाहिए ही होता है। उसी अपने मनचाहे रोजगार की तलाश में व्यक्ति अपने लिए कोई न कोई एक रोजगार तलाश करता ही है और उसे पाने के लिए जब तक उसे अपना मनचाहा रोजगार मिल नहीं जाता है, तब तक उसके लिए संघर्षमय रहता है।

इस बात का उदाहरण हम आज के जमाने में उन लाखों युवा/युवतियों को देख कर लगा सकते हैं जो अपने मनचाहे रोजगार को पाने हेतु प्रतियोगी परीक्षाएं देते रहते हैं और अपना भाग्य तब तक आजमाते रहते हैं जब तक उन्हें उनका मनचाहा रोजगार मिल नहीं जाता है। जो सफल हो जाते हैं वे सफलता की पहचान बन जाते हैं और जो रह जाते हैं वे फिर से अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कर्मरत हो जाते हैं।

ये सब बातें होते हुए भी एक बात और है जो व्यक्ति के जीवन में बहुत ही अहमियत रखती है और वो बात है “हमारा भाग्य”। भगवान ने वो कैसा लिखा है? हमें किस प्रकार का जीवन मिला है और हम अपने जीवन में क्या-क्या हासिल करेंगे और सफल होंगे/असफल होंगे आदि-आदि जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों से गुजरते हुए हम किस मुकाम पर पहुंचेंगे ये सब बातें भी हमारे भाग्य पर ही निर्भर करती है।

इसी भाग्य और मेहनत का उदाहरण हैं हमारे प्रेरणारूपी स्रोत ए.जी सर, जो इस बात का एक बेहतर उदाहरण कहे जा सकते हैं। हमारे ए.जी. सर जिनका पूरा नाम श्री राजेश कुमार कांतिलाल सोलंकी है और जो पूरे कार्यालय में श्री आर.के. सोलंकी सर के नाम से जाने जाते हैं। सर की भी नौकरी में आने के बाद जीवन यात्रा कुछ ऐसी ही रही है कि सर ने अपने जीवन में पूरी ईमानदारी और कठिन परिश्रम करते हुए और उस पर विश्वास रखते हुए “आई.ए.एंड ए.डी विभाग” (Indian Audit & Accounts

Department) के नाम से भी जानते हैं, इस विभाग में सर ने जो एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है, वो तो अपने आप में बहुत ही अद्भुत, अकल्पनीय और अविश्वसनीय है। उनकी इस विकास यात्रा के बारे में जब भी किसी को पता चलता है तो पहली बात तो यह होती है कि सामने वाला व्यक्ति इस बात पर बिल्कुल भी यकीन ही नहीं करता है कि ऐसा भी हो सकता है कि एक व्यक्ति जो लिपिक के पद पर भर्ती हुआ हो और एक दिन कार्यालय अध्यक्ष के पद पर विराजमान हो जाए और जब उसे पूरी तरह से यकीन हो जाता है और आश्चर्य हो जाता है तो वह भी ए.जी. सर की तारीफ करने से अपने आपको रोक नहीं पाता है और सर की तारीफ करते हुए जरूर कहता है कि वाकई, आपके सर बहुत ही भाग्यशाली व्यक्ति है, जिनकी नौकरी की विकास यात्रा बहुत ही बढ़िया रही है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति यह सोच ही नहीं सकता है कि वह किसी सरकारी विभाग में एक साधारण से लिपिक जैसे पद पर नियुक्त होगा और एक दिन कार्यालय अध्यक्ष जैसे बड़े पद पर विराजमान होगा और साथ में सामने वाला व्यक्ति यह भी अवश्य कहता है कि उन्होंने अपना, अपने घर और परिवार वालों और कार्यालय और विभाग सभी का नाम रोशन किया है। सही में बहुत ही भाग्यशाली है

आप के सोलंकी साहब। ए.जी. सर ने लिपिक के पद पर नियुक्त होने से लेकर महालेखाकार के पद प्राप्ति तक जो इतिहास रचा है, तो उसे देखते हुए तो लगता नहीं है कि शायद ही दूसरा कोई और व्यक्ति इस इतिहास की पुनरावृत्ति कर सकेगा।

सर के व्यक्तित्व की बात करें तो सर बहुत ही हंसमुख प्रवृत्ति के हैं, बहुत ही मिलनसार हैं। किसी भी कार्मिक को कार्यालयी कार्यों संबंधी यदि किसी भी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है तो वह कार्मिक सर से मिलकर समस्या पर समाधान हेतु मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकता है और सर भी उस कार्मिक की समस्या का समाधान जहाँ तक संभव होता है, उस समस्या हेतु मार्गदर्शन भी करते हैं। सर का भी यही प्रयास रहता है कि किसी भी प्रकार की कोई भी कार्यालयी समस्या किसी भी कार्मिक के कार्यों में बाधा न उत्पन्न करें और सम्पूर्ण कार्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता रहे। सर के सरकारी सेवा संबंधी विचारों को जानने के पश्चात तो यही बात पूर्ण रूप से स्पष्ट होती है कि कार्यालय का कार्य किसी भी स्थिति में रुकना नहीं चाहिए और ना ही सरकार का किसी भी प्रकार से कोई नुकसान होना चाहिए। कार्यालय और कार्यालयी कार्यों के हित में जो भी उचित रहता है, सर, तुरंत उस कार्य को करने हेतु स्वयं भी तत्पर रहते हैं और अधिकारियों/ कर्मचारियों को समय-समय पर निर्देश भी देते रहते हैं। सर का मानना है कि कार्मिक को अपने सेवाकाल के दौरान अपना कार्य पूरी ईमानदारी और मेहनत से करना चाहिए। वे कार्यालयी हित को सर्वोपरि मानते हैं।

सर की सरकारी सेवा की बात करें तो निःसंदेह कोई भी व्यक्ति सर की सेवा संबंधी उपलब्धियों को देखते हुए इनसे प्रेरित हुए बिना नहीं रह पाएगा। तो आइए, सर के जन्म से लेकर उनकी सरकारी जीवन यात्रा के बारे में जानते हुए उनके द्वारा विभाग के एक स्थानीय कार्यालय के इस शीर्षस्थ पद पर आसीन होने तक की इस विकास यात्रा से रु-ब-रू होने का प्रयास करते हैं:-

श्री आर के सोलंकी, जिनका जन्म दि.22-11-1964 को गुजरात राज्य के अहमदाबाद जिले में हुआ। सर, ने अपनी स्कूली शिक्षा का शुभारंभ अहमदाबाद शहर में कक्षा (1) से कक्षा (7) तक नगरपालिका के स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते हुए किया, इसके पश्चात, कक्षा (8) से कक्षा (12) तक आगे की शिक्षा भी प्रदेश के एक सरकारी स्कूल से पूर्ण की और उसके बाद स्नातक स्तर की शिक्षा भी सर ने गुजरात विश्वविद्यालय से बी.कॉम द्वितीय श्रेणी प्राप्त करते हुए अपनी शिक्षा पूर्ण की। कक्षा (1) से स्नातक स्तर की शिक्षा के दौरान सर की शिक्षा का माध्यम गुजराती ही रहा। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद जैसे हर किसी

युवा का रोजगार पाने का सपना होता है, ठीक इसी प्रकार सर के सामने भी यही उद्देश्य था कि अब शिक्षा पूर्ण करने के बाद रोजगार प्राप्त किया जाए और सर का यह सपना भी जल्द ही पूर्ण हुआ जब वे कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद में रोजगार के सभी चरणों को पूर्ण करते हुए दि.15-11-1985 को लिपिक के पद पर नियुक्त हुए। इसके आगे सर के नौकरी संबंधी करियर की बात करें तो वो सफर कुछ इस तरह से रहा।

श्री आर.के.सोलंकी सर के करियर की शुरुआत (भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग) में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद में दि.15-11-1985 से लिपिक के पद पर नियुक्त होने के बाद से होती है। वे इस पद पर नियुक्ति पाने के बाद इसी कार्यालय में अगले 6 साल दि.24-04-1991 तक कार्यरत रहे।

इसके बाद सर दि.25-04-1991 में लेखापरीक्षक के पद पर इसी कार्यालय में पदोन्नत हुए और इस पद पर कार्य करते हुए वे इस पद पर दि.03-06-1993 तक कार्यरत रहें।

इसके पश्चात, वे इसी कार्यालय में दि.04-06-1993 को विभागीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अनुभाग अधिकारी (Section Officer) बने और इस पद पर दि.02-06-1996 तक रहें।

आगे इसी क्रम में बढ़ते हुए वे सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (ए.ए.ओ) के रूप में दि.03-06-1996 से दि.13-05-1999 तक कार्यरत रहें।

फिर वे अहमदाबाद स्थित इसी कार्यालय में ही दि.14-05-1999 को लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में पदोन्नत हुए और दि.15-08-2002 तक इस पद पर कार्यरत रहें।

दि.16-08-2002 को वे फिर पदोन्नत हुए और व.लेखापरीक्षा अधिकारी बने, जिसके बाद वे इस पद पर दि.14-10-2008 तक रहें।

जीवन में फिर वो दिन भी आया जब वे अगले पद पर दि.15-10-2008 को विभाग के एक बड़े पद पर अर्थात् सहायक महालेखाकार जिसे अंग्रेजी में ए.ए.जी (Assistant Accountant General) और संक्षिप्त में (AAG) के रूप में भी जाना जाता है, के रूप में पदोन्नत हुए और इस पद पर पदोन्नत होने के पश्चात वे स्थानीय कार्यालय स्तर से आगे बढ़ते हुए अखिल भारतीय स्तर पर सेवा होने के अनुसार उनके पदनाम की पट्टी पर उनके नाम के आगे “भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा, (आई.ए. एंड ए.एस.)” लिखा गया। दि.15-10-2008 को सर के कार्यालयी जीवन में एक बड़ा दिन कहा जा सकता है क्योंकि वे इससे पहले तो कार्यालय में स्थानीय स्तर पर जाने जाते थे, इस पद पर पदोन्नत होने के बाद वे विभाग में अखिल भारतीय स्तर पर भी पहचाने जाने लगे।

(Assistant Accountant General) के पद पर पदोन्नत होने के बाद वे अखिल भारतीय स्तर के अधिकारी के रूप में दि.25-12-2008 तक (आई.ए.एंड ए.डी) विभाग में गुजरात में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद में कार्यरत रहें। इस कार्यालय के विषय में कहे तो निःसंदेह कहा जा सकता है कि ए.जी. सर के लिए वह कार्यालय बहुत ही भाग्यशाली रहा, जहाँ सर लिपिक के पद से सहायक महालेखाकार (ए.ए.जी) के पद तक पहुंचे। भाग्य की ऐसी कृपा दृष्टि बहुत ही कम व्यक्तियों पर होती है, जो अपने जीवनकाल में एक अविश्वसनीय कीर्तिमान स्थापित कर देते हैं।

यह भी निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आज भी इस कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी यह तो जरूर कहते होंगे कि कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) गुजरात, राजकोट में महालेखाकार के

पद पर विराजमान श्री सोलंकी सर, अपनी सेवा के प्रारंभिक दिनों में इसी कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्यरत थे और यही से (Assistant Accountant General) के पद पर पदोन्नत होने के बाद अखिल भारतीय स्तर पर दूसरे कार्यालयों में स्थानांतरित हुए। ऐसा कहना उस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा स्वाभाविक भी होगा क्योंकि ऐसा कहते हुए उन्हें सदैव ही अपने कार्मिक पर गर्व की अनुभूति होती होगी कि हमारे कार्यालय में एक कार्मिक ऐसे भी थे, जो इस कार्यालय में एक लिपिक के पद पर नियुक्त हुए थे और आज वह कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) गुजरात, राजकोट में महालेखाकार के पद पर विराजमान हैं और गहराई से देखा जाए तो बात केवल यही तक सीमित नहीं हो जाती है, बल्कि सर से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति जैसे कि उनके स्कूल में उनके अध्यापकगण, जिनसे सर ने शिक्षा ग्रहण की, जहाँ से उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की होगी, उन शिक्षकों को कितने गर्व की अनुभूति होती होगी कि उनके यहाँ से उनके द्वारा शिक्षित विद्यार्थी आज इतने बड़े सरकारी पद पर ए.जी. कार्यालय, राजकोट में न केवल महालेखाकार के पद का मान बढ़ा रहा है, बल्कि साथ साथ उन्होंने हमारा हमारा मान भी बढ़ाया है।

इसी तरह, गुजरात राज्य में AG कार्यालय के इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखें तो, चाहे वह राजकोट स्थित कोई एजी कार्यालय हो या अहमदाबाद स्थित कोई एजी कार्यालय हो, इस संबंध में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्री आर.के. सोलंकी सर, संपूर्ण गुजरात में महालेखाकार के पद पर आसीन होने वाले पहले ऐसे गुजराती व्यक्ति होंगे जिन्होंने लिपिक के पद से एक ए.जी. कार्यालय के उच्चतम पद तक अपना सफर तय किया है। एक गुजराती व्यक्ति होते हुए भी ए.जी. सर ने अपने सभी कार्यालयी दायित्वों को पूर्ण किया और इस पद पर आसीन होने के पश्चात न केवल अपना, परिवार व विभाग का मान बढ़ाया बल्कि इसके साथ-साथ सर ने अपनी इस उपलब्धि के साथ संपूर्ण गुजरात राज्य का मान भी बढ़ाया है। सर, के इस कार्यालयी सफर का इतिहास हमेशा-हमेशा के लिए सभी प्रदेशवासियों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में जाना जाएगा और जब भी न केवल गुजरात स्थित एजी कार्यालयों के महालेखाकारों के बारे में इस प्रकार के कार्यालयी सफर कोई चर्चा होगी तो, संपूर्ण गुजरात के साथ-साथ संपूर्ण (आई.ए. एंड ए.डी.) विभाग में भी निःसंदेह सर का नाम बड़े ही आदर सम्मान के साथ लिया जाएगा।

इसके पश्चात, सर, ए.ए.जी. बनने के बाद विभाग में ही नवी मुंबई में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) शाखा कार्यालय, मुंबई में उप महालेखाकार जिसे हम अंग्रेजी में (Deputy Accountant General) और जिसे हम संक्षिप्त रूप में DAG के पदनाम से भी जानते हैं, के पद पर पदोन्नत होकर इस कार्यालय में दि.26-12-2008 को पदस्थापित हुए और दि.30-06-2014 तक इस कार्यालय में उप महालेखाकार के पद पर कार्यरत रहे।

विकास यात्रा के आगे बढ़ने का क्रम जारी ही था, फिर इसी क्रम में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) गुजरात, राजकोट में व.उप महालेखाकार के पद पर पदोन्नति पाते हुए, दि.01-07-2014 से दि.31-12-2022 तक सर, व.उप महालेखाकार के पद पर विराजमान रहे।

इसके पश्चात, सर के जीवन में फिर और भी बड़ा दिन भी आया जब सर को विभाग में किसी एक राज्य के एक ए.जी. स्थानीय कार्यालय में कार्यालय अध्यक्ष के पद पर आसीन होना था और पदोन्नति की इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए, ए.जी.सर ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-II, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज में दि.02-01-2023 को कार्यालय अध्यक्ष के रूप में अर्थात् महालेखाकार जिसे अंग्रेजी में Accountant General कहा जाता है, के पद पर विराजमान हुए और वहाँ से ट्रांसफर होने के बाद

दि.16-01-2023 से ए.जी. सर वर्तमान में अब अपने गृह-राज्य (गुजरात) में कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) गुजरात, राजकोट में इस पद की गरिमा को और भी गरिमामय बनाने हेतु कार्यरत हैं।

अपने सेवाकाल के दौरान, सर ने विभिन्न पदों पर रहते हुए, कार्यालयी कार्यों हेतु अपनी सेवाएं दी हैं। सर ने विभागीय सेवा करते हुए वर्ष 2015 में दाफुर (सूडान), वर्ष 2016 में निकोसिया, वर्ष 2018 में कैलिफोर्निया, बार्कले (अमेरिका) और वर्ष 2022 में NICL, SAIL Kathmandu, नेपाल में भी कई विदेशी सरकारी कार्यों संबंधी (Foreign Assignments) भी संपन्न किए हैं। अपने सेवाकाल के दौरान, ए.जी. सर ने देश में विभिन्न सरकारी संस्थानों में विभिन्न प्रकार के कार्यालयी प्रशिक्षणों में भाग लिया है और सफलतापूर्वक अपने दायित्वों को संपन्न किया है।

सर की इस जीवन यात्रा को देखते हुए निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि वाकई, सर ने विभिन्न कार्यालयों में कार्य करते हुए अपने कर्तव्यों का बहुत ही मेहनत और ईमानदारी से निर्वहन किया है। इसी वर्ष 2024 में वे दि.30-11-2024 को अपने ही गृह-राज्य (गुजरात) में महालेखाकार के पद से सेवानिवृत्त हो रहे हैं। जो कि निःसंदेह उनकी सेवानिवृत्ति के बाद सर एक मिशाल के रूप में इस कार्यालय में ही नहीं बल्कि संपूर्ण विभाग में भी जाने जाएंगे। वे इस कार्यालय में सहायक महालेखाकार के पद से नीचे नियुक्ति पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए सदैव ही एक प्रेरणास्रोत रूप में बने रहेंगे। निःसंदेह कार्मिक उनसे, उनकी विकास यात्रा से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का प्रयास तो अवश्य करेंगे और करना भी चाहिए, क्योंकि जीवन में आगे बढ़ने में कोई बुराई नहीं होती है। सर ने न केवल अपना, घर, परिवार का नाम रोशन किया है बल्कि संपूर्ण विभाग के साथ-साथ जिस कार्यालय में नियुक्त हुए थे उस कार्यालय का और साथ ही उनकी सेवानिवृत्ति वाले दिन कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) गुजरात, राजकोट का नाम भी रोशन हो जाएगा क्योंकि सर दि. 30-11-2024 को इसी कार्यालय से सेवानिवृत्त भी होने जा रहे हैं।

ए.जी. सर की विकास यात्रा को देखते हुए हिंदी भाषा में अक्सर लोगों द्वारा कही जाने वाली एक कहावत कही जा सकती है कि **“भाग्य भी उन्हीं व्यक्तियों का साथ देता है जो अपनी मेहनत पर यकीन करते हैं और हिम्मत से अपने द्वारा चयनित मार्ग पर आगे भी बढ़ते हैं”।**

सर, की इन उपलब्धियों को देखते हुए तो निश्चित ही कहा जा सकता है कि यदि व्यक्ति अपनी इच्छाशक्ति से किसी लक्ष्य को हासिल करने के विषय में ठान ले तो भाग्य भी उनका साथ अवश्य देता है। किसी भी व्यक्ति द्वारा नौकरी में आने के बाद उसको कोई नहीं कहता या कहेगा कि तुम्हें आगे बड़े पद हेतु प्रयास करना चाहिए। नौकरी मिल गई यही बहुत है। जहाँ लगे हो वही लगे रहो, एक दिन पदोन्नति पाते-पाते बड़े पद तक पहुंच ही जाओगे। बल्कि विभाग/कार्यालय तो हमेशा से ही ऐसे व्यक्तियों को आगे बढ़ाने में मददगार रहा है जो एक अच्छे पद पर रहते हुए भी और भी कोई बड़ा अधिकारी बनने के लिए कर्मशील रहते हैं, उसके लिए कर्म करते हैं और कड़ी मेहनत से और कोई बड़ी परीक्षा उत्तीर्ण कर या तो अपने ही विभाग में पुनः नियुक्ति पा लेते हैं या किसी और विभाग/ मंत्रालय में नई नियुक्ति पा जाते हैं। इसलिए यह सही ही कहा जाता है कि यदि व्यक्ति अपने जीवन में किसी बड़े पद की प्राप्ति को अपने सच्चे मन से अपना लक्ष्य बना ले तो, और अपनी पूरी मेहनत और ईमानदारी से उस ओर बढ़े भी तो निश्चित ही एक दिन वह अपने लक्ष्य में कामयाब भी हो जाता है। इस उद्देश्य हेतु बस आवश्यकता है तो सच्ची मेहनत और ईमानदारी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने और उसे पाने की।



जीना सीख लिया... श्री संजय जे. अनडकट वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अपनो को ढूँढने की कई नाकामयाब कोशिश कर ली हमने,
फिर खुद को ही अपना समझकर जीना सीख लिया हमने।

बेवजह ही अब तक दुनिया को भला-बुरा समझा हमने,
फिर समझ में आया कि खुदगर्जी ही इंसान की फ़ितरत है।

ऊपर वाले ने नजर ही कुछ ऐसी दी है हमें,
कि दुनिया दौड़ती है वहाँ जहाँ खालीपन नजर आता है हमें ।

इसी दुनिया में जीना और रहना है हमें,
खुद को कैसे बचाए उससे, इसी फ़िक्र में ज़िंदगी गुजरती है।

दो वक्त की रोटी काफी है, जिंदा रहने के लिए,
दुनिया के साथ खड़े रहने की हसरत न कभी थी, न है और न रहेगी।

राजस्थान का शिखर



श्री राहुल धायल
सहायक लेखा अधिकारी

हमारा प्यारा राजस्थान प्राकृतिक विविधताओं से भरा प्रदेश है, इस प्रदेश में क्षेत्रफल का एक बड़ा प्रतिशत रेगिस्तान है लेकिन मेवाड़, बागड़ व माउंट आबू क्षेत्र सबसे अधिक जंगल वाला क्षेत्र है। इस बार का यात्रा वृत्तान्त दक्षिणी राजस्थान के इसी भू-भाग का है जो अपने शौर्य, बलिदान व धार्मिक रूप से पूरे विश्व में अपना अलग स्थान रखता है। अब आगे की यात्रा पर मैं आपको अपने मित्रों अनिल, सौरभ, दीपक, अविनाश, राकेश, सोम और कशिश के साथ ले चलता हूँ। यह यात्रा वृत्तान्त आपको इस उदयपुर व उसके आस-पास के सभी पर्यटन स्थलों की सम्पूर्ण जानकारी देगा।

राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र पहाड़ी क्षेत्र है जहाँ राजस्थान की गर्म जलवायु का असर नजर नहीं आता, अपितु यहाँ का वातावरण इसे बाकी मरू प्रदेश से अलग बनाता है। सितम्बर 2023 को बातों-बातों में अकस्मात् ही हमारी यह भ्रमण योजना बन गई। हमने राजकोट से माउंट आबू के पास स्थित आबू रोड़ तक जाने के लिए रेल मार्ग का माध्यम चुना। ट्रेन नियत समय पर आबू रोड़ रेलवे स्टेशन पहुँची। आबू रोड़ रेलवे स्टेशन के बाहर निजी वाहन द्वारा माउंट आबू तक पहुँचा जा सकता है। हमने एक निजी वाहन इस यात्रा के लिए चुना। आबू रोड़ से माउंट आबू तक की इस यात्रा में हरे-भरे घने जंगल युक्त पहाड़ों पर घुमावदार सड़क व इस सड़क के एक तरफ ऊँचे पहाड़ दूसरी तरफ गहरी घाटी है। रास्ते में लंगूरों के झुंड के झुंड देखे जा सकते हैं।

इस एक घंटे के सुहाने सफर हमने गहरी घाटियाँ, पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियाँ, चारों तरफ फैली हरियाली व बीच-बीच में आते छोटे-छोटे कई झरनों व रुई के जैसे प्रतीत होते बादलों आदि का सभी का भरपूर लुत्फ उठाया। यहाँ पहुँच कर हमने नाश्ते का आनंद लिया। यहाँ के सभी रेस्तरां में गुजराती थाली तो विशेष रूप से मिलेगी क्योंकि यहां आने वाले सैलानियों में गुजराती लोगों की संख्या सर्वाधिक होती है। माउंट आबू धार्मिक दृष्टि से जैन धर्म के लिए विशेष स्थान रखता है। यहां 11 वीं से 13 वीं शताब्दी में निर्मित दिलवाडा के जैन मंदिर स्थित है जो कि मंदिर निर्माण की नागर शैली में बने हैं।

दिलवाडा मंदिर पाँच मंदिरों का समूह है। इसमें सबसे प्राचीन विमल वसही मंदिर है जो प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जी को समर्पित है इसके अतिरिक्त यहाँ लूना वसही मंदिर पितलहार मंदिर, श्री पार्श्वनाथ मंदिर श्री महावीर मंदिर भी स्थित हैं। बाहर से सादगी से युक्त व अन्दर से उत्कृष्ट कलाकारी वाले ये मंदिर मनमोहक हैं। दिलवाडा के जैन मंदिरों के पश्चात हम अरावली की सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर को देखने निकल पड़े। माउंट आबू से गुरु शिखर की दूरी लगभग 15-16 किमी. है। इस यात्रा के मार्ग बहुत सारे मोड़ लिए हुए हैं। जो हरे-भरे वृक्षों से युक्त इतने सुन्दर है कि पता ही नहीं चला कब गुरुशिखर आ गया। गुरुशिखर की ऊँचाई 1722 मीटर है। यहाँ भगवान श्री विष्णु जी के रूप गुरु दत्तात्रेय जी का गुफा रूपी मंदिर है। मंदिर में दर्शन करने हेतु कुछ दूर पैदल सीढ़ियों द्वारा चढ़ना पड़ता है। सीढ़ियों के किनारे खाने-पीने की स्टालें व हस्त निर्मित सामग्री की दुकानें भी थीं। ऊँची चोटी पर शांत व सुरम्य वातावरण में स्थित यह मंदिर अंदर से

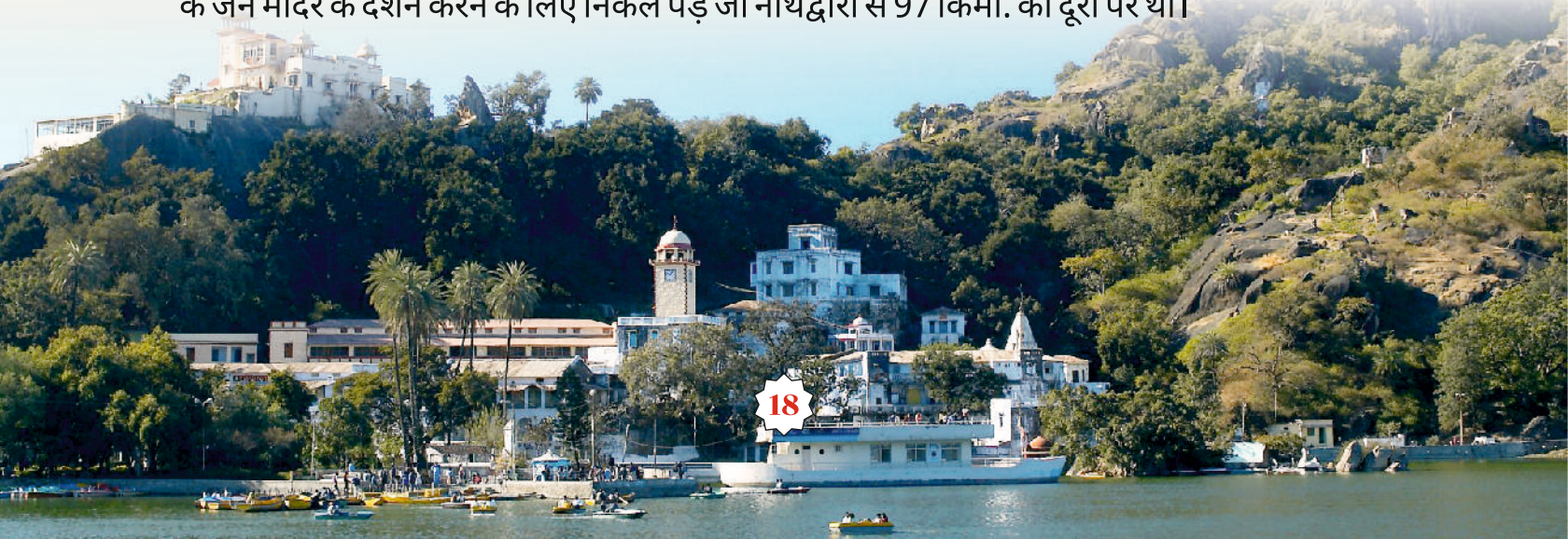


संगमरमर से निर्मित है। यहाँ पीतल का एक बहुत बड़ा घण्टा भी लगा हुआ है। अरावली की सबसे ऊँची चोटी पर खड़े होकर माउंटआबू की खूबसूरती निहारना एक शानदार अनुभव है। आधे घंटे के आसपास हमने समय व्यतीत किया और वापिस आ गये। गुरुशिखर से वापिस आते समय हमने 'शूटिंग पॉइंट' पर कुछ तस्वीरे खिंचाई। उसके बाद हम अचलगढ़ की तरफ निकल पड़े। यहाँ एक प्राचीन शिव मंदिर है। मंदिर के द्वार पर दो गज प्रतिमाएँ हैं। इस शिव मंदिर की विशेषता ये है कि यहाँ पर शिव जी के अंगूठे के निशान की पूजा की जाती है। मान्यता है कि जब वहाँ की भूमि डोल रही थी, तब लोगों की प्रार्थना पर शिव जी ने यहाँ अपने पैर का अंगूठा रख कर भूमि को स्थिर किया था, आज अंगूठे के उसी चिन्ह की पूजा होती है। मंदिर के अंदर की शिल्पकारी उत्तम है, यहाँ मंदिर के बाहर एक छोटा हस्तशिल्प सामग्री का बाजार है, जहाँ से मैंने जय के लिए कुछ खिलौने खरीदे। दिनभर घूमने-फिरने से थकान हो रही थी, अतः सांयकाल के भोजन के पश्चात हम सभी लोग होटल वापिस आकर सोने चले गये।

अगले दिन प्रातः हम सभी ने नाश्ता किया व नक्की झील घूमने के लिए निकल गये। इस झील के बारे में कहा जाता है कि यह झील देवताओं द्वारा नाखून से खोदी गई है। यहाँ पास में ही रसिया बालम व राजकुमारी का मंदिर भी है। यह झील चारों तरफ से ऊँची पर्वत माला से घिरी हुई लगभग 2 किमी. के दायरे में फैली हुई है। यह मीठे पानी की राजस्थान की सबसे ऊँची झील है। नक्की झील में बोटिंग की सुविधा भी है। इसके किनारे पर एक सुन्दर बगीचा भी है। झील के भ्रमण के पश्चात सौरभ की विशेष मांग पर हम सभी हनीमून पॉइंट/अनादर पॉइंट देखने पहुंचे। यहां आकर ऐसा लगता है कि हम प्रकृति की गोद में आकर बैठ गए हैं। शहरी भागदौड़ भरी ज़िन्दगी से कुछ समय निकालकर इस प्राकृतिक वातावरण में आकर समय बिताना सुख का अहसास प्रदान करता है। इसके बाद हमने माउंटआबू वन्यजीव अभ्यारण्य का भ्रमण किया। यह क्षेत्र भालुओं के लिए काफी अनुकूल है। यही कारण है कि इस क्षेत्र में भालुओं की बहुत संख्या है। यहाँ एक कृत्रिम तालाब भी बना हुआ है जिसका नाम ट्रेवर नाम के अभियंता के नाम पर है। यहाँ एक सनसेट पॉइंट भी है, यह स्थान सूर्यास्त का खूबसूरत नजारा देखने के लिए विश्व प्रसिद्ध है। अस्त होते सूर्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि बड़ा सा एक आग का गोला आसमान से उतरकर धरती की गोद में समा रहा हो। सूर्यास्त होते ही अंधकार गहरा होना प्रारंभ हो गया। अतः हम वापिस लौट आए।

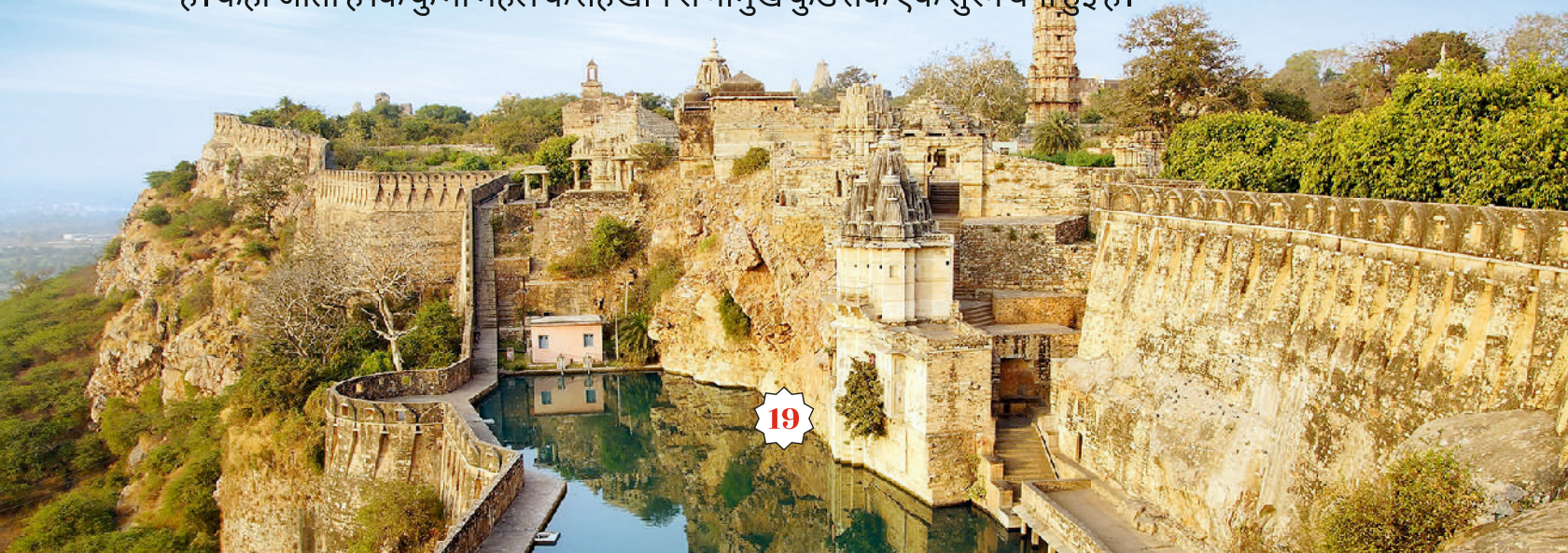
हमारा आगे का **नाथद्वारा** जाने का कार्यक्रम था, वहाँ हमारे साथी कार्मिक विकास जैन द्वारा आगे की सारी व्यवस्था की गई थी। वहाँ होटल में जाकर हम सो गये। अगले दिन प्रातः हमने श्रीनाथ जी के मंदिर में मंगलारती में भाग लिया। यह एक वैष्णव मंदिर है जो भगवान कृष्ण के 7 वर्षीय शिशु का अवतार घर है। मूल रूप से मथुरा में पूजी जाने वाली इस मूर्ति को 1672 ई. में यमुना के किनारे से यहाँ लाया गया था।

आप गर्भगृह में प्रवेश करने पर भगवान कृष्ण की मनमोहक व खूबसूरती से गढ़ी गई काली पत्थर की मूर्ति को देखने पर दिव्य उपस्थिति महसूस करते हैं। इस प्रातः दर्शन के बाद हम सभी विश्वप्रसिद्ध रणकपुर के जैन मंदिर के दर्शन करने के लिए निकल पड़े जो नाथद्वारा से 97 किमी. की दूरी पर था।



यह राजस्थान के पाली जिले के देसूरी तहसील के सादड़ी में स्थित है। यह स्थान जोधपुर व उदयपुर के बीच में अरावली पर्वत की घाटियों में स्थित है। यह स्थान मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। इन मंदिरों का निर्माण धन्ना नाम के सेठ ने किया था। उसे 'धरणार सेठ जी' की उपाधि दी गई थी। यहाँ स्थित प्रमुख मंदिर का नाम **'रणकपुर का चौमुखी मंदिर'** है। इस मंदिर के चारो तरफ चार द्वार हैं। इस मंदिर में प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ जी की मूर्ति स्थापित है। रणकपुर में मंदिर की प्रतिष्ठा 1439 ई. में हुई थी। प्रधान मंदिर वर्गाकार व चौमुखा है, मंदिर में कुल 24 मण्डप, 84 शिखर व 1444 स्तम्भ हैं। इस जगह पर आकर आपको असीम शांति की प्राप्ति होती है।

यहाँ से अगला स्थान हमारा विश्व प्रसिद्ध कुम्भलगढ का किला है। यह किला अपनी विशाल दीवारों व शाही वन्यजीव अभ्यारण्य के लिए प्रसिद्ध है। यह राजसमंद जिले में स्थित है जिसे राणा कुंभा ने बनवाया था। इस किले का मुख्य आकर्षण इसकी दीवारें हैं जो चीन की दीवार के बाद दुनिया की सबसे लंबी दीवार है जिसकी कुल लम्बाई 36 किमी है व इसकी चौड़ाई 15 फीट है, मतलब दो कारें एक साथ इस किले की दीवार पर चल सकती हैं। यह राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा किला है। महाराणा कुंभा, महाराणा प्रताप, महाराणा उदयसिंह, महाराणा सांगा जैसे प्रतापी व पराक्रमी राजाओं का संबंध इसी किले से है। इस दुर्ग का एक काला इतिहास भी है, महाराजा कुंभा की मृत्यु इसी दुर्ग में उनके पुत्र ऊदा ने कर दी थी व स्वयं महाराणा बन गये केवल एक बार इस किले पर विधर्मियों का कब्जा हुआ था जिसे महाराणा प्रताप ने दोबारा जीत कर अपने साम्राज्य में मिलाया। इस किले पर ही महाराणा प्रताप का जन्म स्थान है। इस किले में घूमते-घूमते कब शाम हो गई, पता ही नहीं चला। अब तक की इस यात्रा का सबसे बड़ा पड़ाव अगले दिन आने वाला था, हम अगले दिन विश्व प्रसिद्ध चित्तौड़ के किले की यात्रा पर चलेंगे जिसके लिए कहा जाता है कि **"गढ तो चित्तौड़गढ, बाकी सब गढैया"**। रात्रि को खाना खाने के बाद हमने विश्राम किया व अगले दिन का प्लान बनाया। अगले दिन सुबह-सुबह ही हम नाश्ता करके इस किले की तरफ चल पड़े। इस किले का निर्माण महाभारत काल में पांडव भीम द्वारा करवाया गया था। इस बात के प्रमाण किले में स्थित भीमताल व भीमगोड़ी से माने जाते हैं। इतिहासकारों के अनुसार इस किले का निर्माण 7वीं शताब्दी में चित्रांगद मौर्य द्वारा करवाया गया था। मछली के आकार का यह किला 700 एकड़ भूमि पर एक पहाड़ी के ऊपर बना हुआ है। खड़ी चट्टानों व ढलान जैसी प्राकृतिक सुरक्षा के अलावा किले में प्रवेश के लिए 7 द्वारों को पार करना पड़ता है जो कि सुरक्षा की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। मेवाड़ के शासक सूर्यवंशी थे व सूर्य देव के रथ के 7 घोड़े जुते हुए होते हैं अतः प्रतीक स्वरूप यहाँ 7 द्वार बनवाये गये हैं जो कि क्रमशः **1.)** पांडव पोल, **2.)** भैरों पोल **3.)** हनुमान पोल **4.)** गणेश पोल **5.)** जोड़ना पोल **6.)** लक्ष्मण पोल **7.)** राम पोल है। किले में स्थित विजय स्तंभ, पद्मिनी महल व संग्रहालय में प्रवेश के लिए टिकट लेना पड़ता है, बाकी निःशुल्क है। टिकट घर से थोड़ा आगे चलने पर कुंभा महल है। इसकी भव्य इमारत स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करती है। कहा जाता है कि कुंभा महल के तहखाने से गौमुख कुंड तक एक सुरंग बनी हुई है।



यहाँ एक नवलखा भंडार भी है। यहाँ एक कृष्ण जी को समर्पित एक कुम्भश्याम मंदिर भी है यहाँ कुम्भश्याम की मूर्ति स्थापित है। नागर शैली में बना यह मंदिर पिरामिड के आकार का है। खूबसूरती से तराशे गए इन मंदिरों की दीवारों पर बनी एक भी प्रतिमा अपने वास्तविक स्वरूप में मौजूद नहीं है। सभी का कोई न कोई भाग खंडित है जो कि आक्रमणकारियों की क्रूर मनोदशा को दर्शाता है। कुम्भश्याम मंदिर के पास ही मीरा बाई का मंदिर है मीरा बाई इसी मंदिर में श्रीकृष्ण जी की भक्ति में लीन रहती थी। वे यहीं पर भजन व कविता रचना व गायन किया करती थी। मंदिर के सामने मीराबाई के गुरु रैदास जी के पद चिन्ह की छतरी है।

चित्तौड़ के इसी किले में विश्व प्रसिद्ध स्मारक विजय स्तम्भ है। इसका निर्माण महाराणा कुंभा ने महमूद खिलजी पर विजय के उपलक्ष्य में करवाया था। यह 122 फिट लंबा व 9 मंजिला स्मारक है। इस पर कुल 157 सीढ़ियां हैं जो ऊपर चढ़ने के लिए हैं। यह स्तम्भ नीचे से चौड़ा, बीच में से संकरा व ऊपर से पुनः चौड़ा है। विजय स्तम्भ में विष्णु जी के अवतार, रामायण व महाभारत के दृश्य को उकेरा गया है। इसी कारण इसे हिंदू देवी-देवताओं का अजायबघर व भारतीय मूर्तिकला का शब्द कोष भी कहते हैं। 9 वीं मंजिल पर कीर्ति प्रशस्ति लिखी गई है। संपूर्ण विजय स्तम्भ पर की गई बारीक व सुन्दर कारीगरी उस समय की स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को दर्शाती है।



चित्तौड़ किला अपने जौहरों के कारण भी प्रसिद्ध है। वीरों की इस भूमि पर तीन बार जौहर हुए। प्रथम बार सन् 1303 में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा आक्रमण किए जाने पर जब राणा रतन सिंह ने केसरिया किया, तब महारानी पद्मिनी ने मेवाड़ की आन की रक्षा हेतु अन्य वीरांगनाओं के साथ जौहर किया था। दूसरी बार सन् 1534 में बहादुरशाह द्वारा आक्रमण किए जाने पर रानी कर्णवती ने अन्य वीरांगनाओं के साथ जौहर किया था। तीसरी बार सन् 1567 में अकबर द्वारा आक्रमण किए जाने पर वीर राजपूत पत्तासिसोदिया की पत्नी फूल कँवर ने अन्य वीरांगनाओं के साथ अग्निस्नान किया था।

वर्तमान में इस स्थल पर बगीचा है पुरातत्व विभाग द्वारा इस स्थल की खुदाई करवाये जाने पर राख की कई परते पाई गई, जो कि वीरांगनाओं के करुण बलिदान को दर्शाती है। यहाँ पर समिधेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर है। गर्भगृह में शिव जी की त्रिमुखी बड़ी प्रतिमा स्थित है। मंदिर के नीचे गौमुख कुंड का सुंदर दृश्य दिखाई देता है। गौमुख कुंड किले में स्थित सबसे सुंदर स्थलो में से एक है। यहाँ गाय के मुख की आकृति बनी हुई है, जिसमें से गिरने वाला प्राकृतिक जल लगातार यहां स्थित शिवलिंग का अभिषेक करता रहता है, इसी कारण इसे गौमुख कुंड कहते हैं। पास में ही रानी पद्मिनी की प्रतिमा एक कक्ष में स्थापित है। चित्तौड़ के किले में बहुत से छोटे-बड़े जलाशय स्थित हैं। इस किले में कई सारे उद्यान है। यहाँ सीताफल के वृक्ष भी बहुत अधिक हैं, इसी किले में सफेद रंग के जलाशय में स्थित रानी पद्मिनी का महल है जो बहुत सुंदर है। इसके पास ही एक पुष्प वाटिका है। मेवाड़ के राजाओं के शौर्य व वीरांगनाओं के जौहर की याद दिलाते चित्तौड़ के किले के विशाल स्वरूप के आगे राजस्थान के बाकी सभी किले बहुत छोटे प्रतीत होते हैं। शौर्य गाथा, मातृभूमि प्रेम, विशालता व स्थापत्य कला की उत्कृष्टता के कारण चित्तौड़ का किला हमेशा से ही पर्यटकों का पसंदीदा स्थल रहा है। यह यात्रा हम सभी मित्रों के लिए ताउम्र यादगार बनी रहेगी जिसके द्वारा हमने इन अमूल्य पलों को एक साथ बिताया। उम्मीद करता हूं कि आपने भी हमारे साथ इस यात्रा का भरपूर आनंद लिया होगा।



जलवायु परिवर्तन: एक वैश्विक चुनौती



श्रीमती अर्चना महरिया, अध्यापिका
पत्नी श्री राहुल धायल, सहायक लेखा अधिकारी

भरत ही नहीं विश्व के समक्ष जो सबसे बड़ी चुनौतियां हैं, उनमें जलवायु परिवर्तन सबसे गंभीर चिंता का विषय हैं। भविष्य में पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम देखने को मिलेंगे।

शहरी स्थानीय निकायों के लिए प्रमुख चिंता का विषय यह है कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम बड़े स्तर पर दिखेंगे। भारत में पहले से अधिक तीव्रता वाले बाढ़, चक्रवात, कड़के की ठंड और भयंकर लू चलने की घटनाएं हो रही हैं, परिणामस्वरूप होने वाली मौतों और जनस्वास्थ्य पर इस के दुष्प्रभाव के अलावा, ये घटनाएं नगर निकायों द्वारा की जाने वाली आर्थिक कल्याण योजनाओं पर भारी प्रभाव डालती हैं। चूंकि अब वैश्विक आबादी के आधे से अधिक लोग शहरों में रहते हैं और जनसांख्यिकीय रूप से इसमें वृद्धि तय है। इस कारण जलवायु परिवर्तन की समस्या के समाधान हेतु शहरों में जो प्रयास होगा वह काफी हद तक जलवायु परिवर्तन से संबंधित चुनौतियों से निपटने के लिए विश्वव्यापी प्रयासों का भविष्य निर्धारित करेगा। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में शहरों को प्रमुख भूमिका निभाने के लिए, नगर निकायों को जलवायु परिवर्तन के खिलाफ कठोर नीति अपनाने को प्राथमिकता देना चाहिए और इसे नगर निकायों की एक प्रमुख जिम्मेदारी माननी चाहिए।

शहरों के ऊपर अतिरिक्त जिम्मेदारी है क्योंकि वे तीन चौथाई ऊर्जा की खपत करते हैं और लगभग 75 प्रतिशत वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करते हैं। ये जलवायु परिवर्तन के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ इस लड़ाई में शहरों को प्रमुख भूमिका निभाने के लिए, नगर निकायों को जलवायु परिवर्तन के खिलाफ कठोर नीति अपनाने की प्राथमिकता देनी चाहिए और इसे नगर निकायों की एक प्रमुख जिम्मेदारी मानी जानी चाहिए। दुर्भाग्य से भारतीय नगर निकायों के कानून में 'प्रिप्रेशन एंड इम्प्लीमेंटेशन ऑफ क्लाइमेट एक्शन प्लान' को अनिवार्य घोषित करने वाला कोई शब्द उपलब्ध नहीं है। राज्यों के लिए यह अच्छा होगा कि वे यथाशीघ्र नगर निकायों के कार्य में 'जलवायु कार्य योजना' की तैयारी, कार्यान्वयन और निगरानी को अनिवार्य करें।

जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम : रिसर्च से पता चलता है कि, एशिया महाद्वीप मौसम संबंधी आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित है 1980 और 2020 के बीच इस तरह की लगभग 3000 घटनाएं हुई हैं,



जिसने 48 करोड़ लोगों को प्रभावित किया और 7 लाख जानें ले ली। इन प्राकृतिक आपदाओं से मौतें अधिकतर गरीब देशों में केंद्रित हैं। जलवायु परिवर्तन से तापमान में हुई वृद्धि, व्यावसायिक स्वास्थ्य और श्रम उत्पादकता के लिए गहरा खतरा उत्पन्न करते हैं, विशेषकर उन लोगों के लिए जो गरम इलाकों में शारीरिक श्रम का काम करते हैं तथा साथ ही जलवायु परिवर्तन के कारण श्रम क्षमता में सबसे ज़्यादा आई कमी में दक्षिण पूर्वी एशिया क्षेत्र शामिल है। स्वास्थ्य को लेकर जलवायु सूचना सेवाएं यानि लक्षित या अनुरूप जलवायु सूचना, उत्पाद और सेवाएं जो स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहायक होंगे दक्षिण पूर्व एशिया में सबसे कम रहीं। 2035 तक, जलवायु परिवर्तन के कारण स्वास्थ्य पर अपरिवर्तनीय प्रतिकूल प्रभाव, वैश्विक दरिद्रता नवीनीकरण की कई नीतियों को विफल कर देगा और 102 करोड़ से अधिक लोगों को अत्यधिक गरीबी में धकेल देगा। जलवायु परिवर्तन उभरती स्वास्थ्य समस्याओं जैसे वायु प्रदूषण से जुड़ी हृदय संबंधी बीमारियों और श्वास संबंधी रोगों में और वृद्धि कर देगा। मौसम की तीव्र घटनाओं की आवृत्ति में बढ़ोतरी, समुद्र का बढ़ता जलस्तर, तापमान में वृद्धि और वर्षण का बदलता पैटर्न भी प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणामों का कारण बनेगा।

इस बात की संभावना है कि जलवायु परिवर्तन तीव्र मौसम संबंधी घटनाओं से जुड़े स्वास्थ्य ज़ोखिमों को बढ़ाएगा, जो अब नियमित, प्रचंड, लंबे समय तक हो रहा है और जिसकी ज़्यादा स्थानिक सीमा है। सूर्य की पराबैंगनी विकिरण में इज़ाफ़ा, बढ़ता वायु प्रदूषण, बढ़ते खाद्य और जल से दूषण, जनित संक्रामक रोगों का विस्तार या पुनः उभरना और संवेदनशील आबादी के सामने तेज़ी से खड़ी हो रही स्वास्थ्य चुनौतियां जलवायु परिवर्तन के कुछ अतिरिक्त ज़ोखिम हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु में बदलाव से जुड़ा तीव्र मौसम अस्पताल भवनों को नष्ट कर सकता है, बिजली और पानी में कटौती और पहली पंक्ति में हेल्थकेयर की आपूर्ति को प्रभावित कर सकता है क्योंकि बाधित मार्ग, आपूर्ति और आवश्यक सेवाओं (जैसे ऊर्जा और जल आपूर्ति) तक पहुंच को सीमित करने के साथ ही मरीज़ तक स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुंचाने में बाधा बन सकता है।

WHO के मुताबिक, 2030 और 2050 के बीच, जलवायु परिवर्तन के कारण कुपोषण, मलेरिया, डायरिया और गर्मी से सालाना करीब 2,50,000 अतिरिक्त मौतें होने की आशंका है। 2030 तक स्वास्थ्य पर सीधे होने वाले नुकसान की कीमत हर साल 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर और 40 करोड़ अमेरिकी डॉलर के बीच होने का अनुमान है। समूचा विश्व समुदाय अत्यधिक गर्मी, बीमारियों के बदलते स्वरूप, आपदाओं के साथ ही खाद्य और जल सुरक्षा पर ग्लोबल वॉर्मिंग के संभावित विनाशकारी प्रभावों से उत्पन्न स्वास्थ्य ज़ोखिमों से जूझ रहा है। हालांकि विभिन्न डिग्री के असर, संवेदनशीलता और अलग-अलग क्षेत्रों की संयोजन क्षमता के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का असर एकसमान रूप से नहीं फैलेगा। स्वास्थ्य के निर्धारक तत्व जलवायु परिवर्तन के बहु सामाजिक और पर्यावरणीय असर से प्रभावित हो रहे हैं जो वायु प्रदूषण की दुर्दशा, तापमान में तीव्र उतार-चढ़ाव, पर्याप्त और सुरक्षित पेयजल की कमी, खाद्य असुरक्षा और अभाव और रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी के रूप में सामने आ रहे हैं।

प्राकृतिक आपदाएं और वर्षा की स्थिति भी आवश्यक सेवाओं और मेडिकल सुविधाओं को प्रभावित कर रहा है एवं संपत्ति और खाद्य स्रोतों को नष्ट कर रहा है। अत्यधिक तापमान सीधे तौर पर हृदय और श्वास संबंधित गंभीर बीमारियों से जुड़ा है, विशेषकर वृद्धजनों में, जो ओज़ोन के बढ़ते स्वरूप और वायुमंडल में अन्य प्रदूषकों से और भी बढ़ सकता है। उदाहरण के तौर पर, 2003 में गर्मी के मौसम में हीटवेव के दौरान यूरोप में 70,000 से अधिक मौतें रिकॉर्ड की गई थीं, और सूक्ष्म कणिका तत्वों के बीच लंबा एक्सपोज़र क्रोनिक ब्रोंकाइटिस की बढ़ती संख्या, फेफड़ों की घटती कार्य क्षमता और फेफड़ों के कैंसर और हृदय रोगों

से बढ़ती मृत्यु दर से संबंधित हैं। इसके अलावा, जलवायु से जुड़ी प्राकृतिक आपदाओं की संख्या 1960 से चार गुना अधिक बढ़ गई है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करने की प्रतिबद्धता से आगे, विकसित अर्थव्यवस्थाओं को कमज़ोर देशों के लिए खासकर महामारी के दौरान उनके जलवायु लक्ष्यों को हांसिल करने में मदद पहुंचाने के लिए वित्त स्रोतों को भी तैयार करना चाहिए।

चूंकि दुनिया की आधी से ज़्यादा आबादी समुद्र से 60 किलोमीटर की सीमा के भीतर रहती है, इस लिए प्राकृतिक आपदा और अधिक गरम तापमान ज़िंदगियों और आजीविका पर खतरा बना हुआ है और बार-बार होने वाली संक्रामक जल जनित बीमारियां जैसे हैजा और डायरिया के रोग जैसे गियार्डियासिस, साल्मोनेलोसिस और क्रिप्टोस्पोरिडिओसिस और मानसिक स्वास्थ्य विकार जैसे पोस्ट ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर होने का कारण बन सकता है। जलवायु में परिवर्तन संबंधित प्लान बहुत से देशों में 'स्थानीय जलवायु योजनाएँ'(LCP) कानूनी तौर पर अनिवार्य हैं। यूरोप में, उदाहरण स्वरूप डेनमार्क, फ्रांस, स्लोवाकिया और द यूनाइटेड किंगडम (UK) ने LCP के अंगीकरण को अनिवार्य कर दिया है। यू.के. में एलसीपी का अस्तित्व सन् 2008 से है, जहाँ स्थानीय योजना प्राधिकरणों अपने स्थानीय योजना दस्तावेजों में इसे इन शब्दों में वैधानिक जिम्मेदारी के रूप में शामिल किया है - "नीतियाँ इस तरह डिजाइन की जाएं कि स्थानीय योजना प्राधिकरणों के अधिकार क्षेत्र की भूमि का विकास एवं उपयोग जलवायु परिवर्तन के शमन और अनुकूलन में योगदान करे"। कई देशों में यह सलाह भी दी जा रही है कि शहरी सरकारें जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों को स्थानीय नीति की अन्य प्रक्रियाओं के साथ एकीकृत कर दिया जाए।

इस बात के सबूत भी हैं कि राष्ट्रीय नियमों के बनने से अग्रणी शहरों की 'स्थानीय जलवायु योजनाओं' के कार्य पर ठोस प्रभाव पड़ा है। शहरों को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने की तैयारी के लिए अपना होमवर्क मजबूती से करना होगा। उन्हें ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को मापने और इसके उत्सर्जन को कम करने की योजना बनाने के लिए और शहरों को जलवायु-परिवर्तन के अनुकूलन बनाने के लिए एक व्यापक सिटी एक्शन प्लान (CAP) को विकसित करना होगा। जलवायु परिवर्तन कम करने के अंतर्गत गर्मी उत्पन्न करने वाली ग्रीन हाउस गैसों के वातावरण में प्रवाह को एक निश्चित समय-सीमा के भीतर कम करने वाली योजनाएं बनानी होंगी। इस तरह की कम करने के लक्ष्य को इन गैसों के स्रोतों में कटौती करके पाया जा सकता है, जैसे बिजली एवं यातायात में जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी करके और आर्थिक गतिविधियों को सतत् तरीके से संचालित करके अनुकूलन के तहत वास्तविक या अपेक्षित भविष्य की जलवायु को समायोजित करना शामिल है और जलवायु परिवर्तन के हानिकारक प्रभावों के जोखिम को कम करने की आवश्यकता पर बल देना है, जिसमें चरम स्तर पर होनेवाली मौसमी घटनाएं शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन संबंधी शमन और अनुकूलन की इन रणनीतियों को वित्तीय संसाधनों द्वारा समर्थित विशिष्ट कार्यान्वयन परियोजनाओं में विभाजित किया जाना चाहिए। महाराष्ट्र में, शहरों के लिए पहले से ही वार्षिक इन्वायरमेंट स्टेट्स रिपोर्ट (ईएसआर) तैयार करना अनिवार्य है, जिसके तहत परिवहन, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट, खुली जगह, पानी, सीवरेज इत्यादि का डाटा अपडेट किया जाता है। ईसीआर के डाटा को उस सीमा तक भी विस्तृत किया जा सकता है, जिससे जलवायु परिवर्तन संबंधी पूर्ण जानकारी प्राप्त निर्णय लिए जा सकें। शहरों को जलवायु-परिवर्तन कम करने के साथ-साथ अनुकूलन के लिए एक सीएपी निर्मित करना होगा।

एमसीएपी इस बात को रेखांकित करता है कि जहाँ बीएमसी जलवायु परिवर्तन कम करने संबंधी प्रयासों और सिटी रिजिलियेंस के निर्माण की दिशा में किए गए प्रयासों में अग्रणी भूमिका में रहेगा, वहीं सभी राज्य, शहरी संस्थाएं और सभी नागरिक भी जो इसके महत्वपूर्ण हितधारक हैं, सभी इसमें अहम भूमिका



रहेंगे। बीएमसी के अलावा उद्योग-जगत, अकादमिक जगत, एनजीओ, समुदाय-आधारित संगठनों, आवासीय सोसाइटियों और प्रत्येक नागरिक को जलवायु परिवर्तन संबंधी कम करने और अनुकूलन के महत्वपूर्ण कार्य में शामिल होना होगा। भारत सरकार और राज्य सरकारों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे स्पष्ट नीतिगत निर्देश दें और स्थानीय निकायों की आर्थिक मदद करें। इसके अतिरिक्त, उन्हें अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले विषयों और क्षेत्रों के लिए आवश्यक सभी कार्य करके अपने महत्वपूर्ण इरादों को जाहिर करना होगा। चूँकि जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया में शहरों को प्रभावित कर रहा है, हालांकि, अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी तीव्रता भिन्न है। फिर भी शहरों को सिर्फ अपने दायरे में काम करने की ही ज़रूरत नहीं है, बल्कि अपने अनुभवों को साझा करने और दूसरों के अनुभवों से सीखने की भी ज़रूरत है।

इस दिशा में अपनाये गए बेस्ट प्रैक्टिस साझा भी किए जा रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, C40 सिटीज् क्लाइमेट लीडरशिप ग्रुप (C40) ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को प्रमुखता देने और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए, लिये गए शहरी पहलकदमियों को साझा करने के लिए लगभग सौ के करीब बड़े शहरों को एक मंच से जोड़ा है। इसी तरह, लोकल गवर्नमेंट फॉर सस्टेनेबिलिटी (ICLEI) ने एक टिकाऊ और कम कार्बन वाले भविष्य के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध 86 देशों में 1,500 से अधिक शहरों का एक वैश्विक नेटवर्क लॉन्च किया है। देश के भीतर, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स (एनआईयूए) और वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (WRI) ने अर्बन क्लाइमेट रिजिलियेंस के निर्माण हेतु पर्यावरण-आधारित सेवाओं और प्रकृति-आधारित समाधानों को मुख्य धारा में लाने के लिए भारत का पहला राष्ट्रीय मंच बनाया गया है जो राज्य स्तर पर, शहरों में जलवायु परिवर्तन योजना संबंधित बेस्ट प्रैक्टिक्सेज की जानकारी और सुझावों का आदान-प्रदान करने वाला मुख्य कार्यकारी अधिकारियों का एक साझा मंच हो सकता है।

जलवायु संबंधी अनुभवों को अद्यतन करने, साझा करने और प्रसारित करने के लिए सभी हितधारकों के क्षमता निर्माण के लिए संस्थागत समर्थन की आवश्यकता होगी। इसके लिए सतत प्रयास होना चाहिए क्योंकि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव गतिशील होंगे, जिसके लिए लक्षित कार्रवाई और संबंधित क्षमताओं में समय-समय पर संशोधन की आवश्यकता होगी। चूँकि शहर के सभी हितधारकों के इस प्रयास में शामिल होने की आवश्यकता है और वर्तमान शहरी जीवन के कई पहलू टिकाऊ विकास के विपरीत हैं, इसलिए हरेक को पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के अनुरूप अपनी जीवनशैली को बदलना या छोड़ना होगा यानि पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार व्यवहार (ERB) करना होगा। जल संरक्षण, कम अपशिष्ट पैदा करना, सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग, हरित ऊर्जा का अधिक उपयोग और घरों में हरियाली और शहरी कृषि को बढ़ावा देने के प्रति सचेत प्रयास इत्यादि जलवायु-हितैषी क्रियाकलाप हैं जिन्हें प्रत्येक नागरिक को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। जलवायु एक्शन प्लान्स अधिक उपयोगी होंगी यदि उनमें वार्षिक उत्सर्जन कटौती का लक्ष्य शामिल हों और लू, चक्रवात और भूस्खलन के लिए रणनीतियों के संबंध में एक बहु हितधारक कार्य योजना निर्मित की जाए। वास्तव में संपूर्ण मानवता के सामने खड़ी इस बड़ी चुनौती से निपटने के लिए किसी तरह लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जा सकती।



39 साल: अनुभव और स्मृतियाँ

श्री एस.आर.धुरंधर
(व.लेखा अधिकारी)



अहमदाबाद से अपनी शिक्षा-दीक्षा पूरी करने के उपरांत मैंने 25 नवंबर 1984 को एक लोअर डिवीजन क्लर्क के रूप में कार्यालय महालेखाकार (ले.एवं ह.) राजकोट ज्वाइन करने हेतु नियुक्ति पत्र प्राप्त किया। संयोगवश 25 नवम्बर को ही मेरा जन्मदिवस आता है तो ऐसे में स्वयं के जन्मदिन पर सरकारी सेवा में आने हेतु नियुक्ति पत्र का मिलना मेरे लिए किसी सौभाग्य से कम नहीं था। समस्त प्रशासनिक औपचारिकताएं पूरी करने के पश्चात 2 दिसंबर 1985 को मैं इस कार्यालय में अपना कार्यभार संभालता हूँ। उस समय कार्यालय की कार्य संस्कृति में आज के समय जैसी कई विशेषताएँ थीं तो बहुत सी भिन्नताएँ भी थीं। जैसे कि उस समय इस कार्यालय में निजी क्षेत्र द्वारा संचालित कैटीन की सुविधा थी। कर्मचारियों को कार्यालय में ही संचालित स्टोर से राशन दिया जाता था। मनोरंजन क्लब द्वारा खेलों के अलावा सभी कार्मिकों को समय-समय पर मूवी भी कार्यालय परिसर में स्क्रीन लगाकर दिखाई जाती थी।

उस दौर में राजकोट में पानी की बहुत किल्लत थी। इस कारण हम हफ्ते में सिर्फ एक बार नहा पाते थे जब हर शुक्रवार की शाम अहमदाबाद जाना होता था। एल.डी.सी. के रूप में इस कार्यालय में मेरी प्रथम नियुक्ति डीसी अनुभाग में हुई। जहाँ पर मुझे एक ऐसे वरिष्ठ लेखाकार के साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ जो सारी गणनाएँ कैल्कुलेटर के बजाय मौखिक रूप से करने में कुशल थे। मुझे उनके व्यक्तित्व ने काफी प्रभावित किया। इसके पश्चात मेरा अहमदाबाद स्थित शाखा कार्यालय में स्थानांतरण हो गया। एल.डी.सी. के रूप में मेरी बुक अनुभाग में नियुक्ति होती है, जहाँ पर मैं फाइनेंस और अप्रोप्रियेशन अकाउंट्स टाइप करता था। मेरे इस कार्य की तत्कालीन महालेखाकार महोदय द्वारा सराहना की गई। मुझे याद है उस दौर में गणनाएँ कोम्प्टोमीटर नामक एक मशीन से की जाती थी, इस कार्य को संपादित करने के लिए कोम्पटिस्ट के नाम से एक पद हुआ करता था। अहमदाबाद स्थित इस कार्यालय में लगभग 4 साल पी.ए.ओ. में एल.डी.सी. रहने के उपरांत मेरी टाइपिंग पूल में पोस्टिंग होती है। उस समय हम परिपत्र आदि जारी करने के लिए पहले स्टेंसिल काटते थे फिर उसे गेस्टेटर को देते थे जो गेस्टो मशीन से उन पर छपाई का कार्य करता था, तब जाकर परिपत्र जारी होते थे। इस दौरान अकेले रहने के कारण मेरी संगीत व कैरम में भी रूचि जागी।

मैं अपने खाली समय में संगीत सीखता था और कैरम खेलता था। तभी मेरी कहानी में एक खास मोड़ आता है जब एक महिला व.ले.अ. द्वारा मुझे SAS की परीक्षा देने हेतु प्रेरित किया गया। मैं पढ़ाई शुरू करता हूँ और मैंने प्री तथा प्रथम चरण उत्तीर्ण कर लिया। तीन प्रयासों के बाद भी II एवं III चरण न निकाल पाने के कारण एक दिन एक महिला सहायक लेखा अधिकारी मुझे बोलती हैं कि “आखिर तुम पढ़ क्यों नहीं पा रहे। घर जाकर करते क्या हो? हमारी तरह पति को संभालना, खाना बनाना, बच्चे पालना जैसे काम तो तुम्हें हैं नहीं फिर पढ़ाई क्यों नहीं करते?” ये बात मेरे दिल पर लग गई और फिर मैंने अनवरत रूप से दिन-रात पढ़ाई की और SAS सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर लिया। SAS निकलते ही मेरी पहली पोस्टिंग राजकोट में निधि

अनुभाग में हुई। उस समय अनुभाग में लेखाकार का पद रिक्त था तो मैंने अनुभाग अधिकारी होते हुए भी इस पद का भी काम देखा व रोज नई चीजें सीखते हुए सफलतापूर्वक अनुभाग का कार्य किया। इसके 3 साल बाद मैं निधि अनुभाग (Fund Section) में ही सहायक लेखा अधिकारी बना। इस दौरान 3 माह के लिए मेरी खजाना निरीक्षण (Treasury Inspection) में नियुक्ति होती है, अपने कार्य के दौरान अहमदाबाद में पेंशन विभाग में पदस्थ खजाना अधिकारी के कामों में अनियमितताएं पाये जाने पर मैंने आपत्ति दर्ज की जिसके पश्चात उस खजाना अधिकारी का तबादला कर दिया गया। फिर मेरी सामान्य कार्यालय प्रबंधन (GOM) अनुभाग में नियुक्ति होती है। मेरे द्वारा तत्कालीन प्राधिकारी को दिए गए सुझाव अनुसार VLC अनुभाग से हटाए गए पुराने कंप्यूटरर्स निधि में पदस्थ सहायक लेखा अधिकारियों को उपलब्ध कराये गए ताकि उनसे वह EDP में कार्यरत अपने कार्मिकों पर नजर रख सकें।

इसके बाद लगभग 3 साल के लिए मैंने प्रतिनियुक्ति पर स्थानीय निकाय लेखापरीक्षा (Local Bodies Audit) अहमदाबाद में कार्य किया। ऑडिट के दौरान मेरे द्वारा निकाले गए आपत्ति बिन्दु कार्यालय की वार्षिक रिपोर्ट में छपे। इसी समय मैंने एक प्रजेन्टेशन बनाया जो तत्कालीन CAG विनोदराय जी के समक्ष महालेखाकार महोदय द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसकी CAG महोदय ने काफी प्रशंसा की जिसके बाद महालेखाकार महोदय ने मुझे अपने इस कार्य के लिए बधाई दी व गले लगाया।

अब फिर से राजकोट स्थित कार्यालय में सहायक लेखा अधिकारी के रूप में मेरी DC अनुभाग में नियुक्ति होती है। संयोगवश यहाँ कार्य करते हुए उसी खजाना अधिकारी से मेरा दोबारा पाला पड़ता है, जिसका तबादला हुआ था। संबंधित अधिकारी द्वारा बिना प्रावधान खर्च किए जाने पर मेरे द्वारा आपत्ति दर्ज की जाती है, विभाग इस बात को संज्ञान में लेता है और उस खजाना अधिकारी का पुनः स्थानांतरण हो जाता है।

कुछ साल DC में कार्य करने के उपरांत मेरी नियुक्ति निधि अनुभाग में होती है। इस दौरान मैंने तत्कालीन उप-महालेखाकार महोदय को मुंबई की तर्ज पर इस कार्यालय में भी जीईएमएस (GEMS) पोर्टल लॉन्च करने का सुझाव दिया और कालांतर में इस पर अमल करते हुए इस कार्यालय में जीईएमएस (GEMS) पोर्टल पर कार्य प्रारम्भ हुआ, जो कि आज तक जारी है। जीईएमएस (GEMS) पोर्टल के आने से वर्षों पुराने कागजी बही-खातों को संभालने की समस्या से निजात मिली व कार्मिकों को भी अपना कार्य संपादित करने में काफी सहूलियत हुई। इसके बाद मैंने 2015 में लेखा अधिकारी (A.O.) बनने के पश्चात कार्यालय में मुख्यालय के आदेश से जीपीएफ (GPF) का एस.एम.एस. (SMS) प्रोजेक्ट लागू करने में अहम योगदान दिया। प्रधान महालेखाकार श्रीमती वानी श्रीराम के कार्यकाल में 35 से 40 साल पुराने कार्यालय रिकॉर्ड का कंप्यूटरीकरण का कार्य मेरे नेतृत्व में हमारे सहकर्मियों द्वारा लगन और सहयोग की भावना से सफलतापूर्वक संपादित किया गया।

जब कोरोना काल आया उस समय मेरी नियुक्ति महालेखाकार महोदय के सचिवालय में थी। इसके बाद DC में कुछ समय कार्य करने के पश्चात मैं सा.का.प्र. व आई. टी. सपोर्ट में वरिष्ठ लेखा अधिकारी रहा। कालांतर में मैं वरिष्ठ लेखा अधिकारी बिल्स व कानून कक्ष नियुक्त हुआ और मुझे हिंदी अनुभाग का अतिरिक्त प्रभार मिला। वरिष्ठ लेखा अधिकारी हिंदी रहते हुए हमने राजभाषा की संसदीय समिति के निरीक्षण का सामना किया। उसके बाद मेहनत, लगन व पारस्परिक सहयोग की भावना से कार्य करते हुए हिंदी अनुभाग में हमने लगातार लक्ष्यों की प्राप्ति की। मुख्यालय, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान व नराकास द्वारा समय-समय पर निर्देशित समस्त कार्यों का हमने सफलतापूर्वक संपादन किया। एक समय ऐसा था जब लगभग 2 दशक पहले मैंने हिंदी दिवस पर एक व्यंग्य कविता लिखी थी, जिसमें हिंदी का कार्य सिर्फ

फाइलों तक ही सीमित होने एवं हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयास का जमीनी स्तर पर ठोस प्रमाण न मिलने के कारण मेरे मन में आक्रोश था। लेकिन अब इस बात की संतुष्टि है कि मैं खुद अपने नेतृत्व में हिंदी का कार्य सफलतापूर्वक संपादित कर पाया, जिसके दूरगामी परिणाम भी हमें कार्यालय के कार्मिकों के कार्यों में देखने को मिलते हैं। आज हमारे कार्यालय में लगभग हर कार्मिक अपना अधिकतर कार्य हिंदी में करता है व हम सफलतापूर्वक सारे लक्ष्यों को प्राप्त भी कर पा रहे हैं।

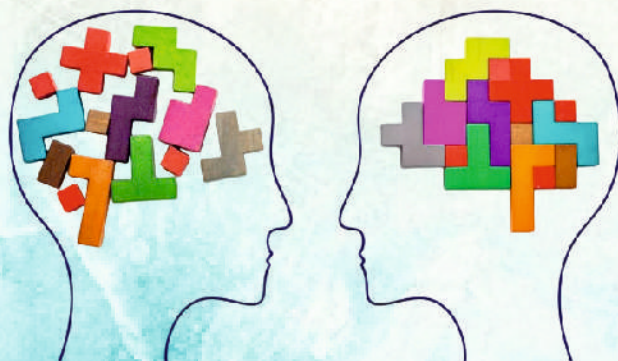
इस दौरान मैंने कार्यालय द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित पत्रिका '**गिरनार**' में '**हँस मत पगली**', '**तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त**', '**लोकडाऊन में आत्मज्ञान**' व '**आज खाने में क्या बनाऊँ**' जैसे लेख भी लिखें।

अपनी सेवा अवधि के दौरान मुझे कार्मिकों की एसोसिएशन में भी लंबे समय तक कार्य करने का सौभाग्य मिला। एसोसिएशन में रहते हुए मैंने सभी सहायक लेखा अधिकारियों को रिवोल्विंग चेयर दिलाने हेतु आवाज उठाई। इसके अलावा कार्यालय के समस्त राजपत्रित अधिकारियों को राजपत्रित होने के नाते उनके जो भी अधिकार बनते हैं उनको जमीनी स्तर दिलाने हेतु भी मैंने अपने साथियों के संग मिलकर प्रयास किए। वर्तमान में कार्यालय में संचालित क्रेडिट सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में भी मेरे 3 साल पूरे हो रहे हैं। इस दौरान इस सहकारी संस्था का नेतृत्व करते हुए समस्त सहकर्मियों के सहयोग से हमने उल्लेखनीय लाभांश संस्था हेतु प्राप्त किया।

15 अगस्त 2024 के उस यादगार क्षण का उल्लेख किए बिना मेरी ये कहानी अधूरी रहेगी, जब /CAL के महानिदेशक आदरणीय धर्मदर्शी सर के निर्देशानुसार मैंने बाकी सेवानिवृत्त होने जा रहे अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ ध्वजारोहण किया। इस सौभाग्य की प्राप्ति से मुझे काफी गर्व व हर्ष की अनुभूति हुई। इन्हीं सब सुखद स्मृतियों व अनुभवों को जेहन में लिए हुए मैं नवंबर 2024 में इस कार्यालय से सेवानिवृत्त होने जा रहा हूँ।

बहुत अच्छा लगता है जब नवनियुक्त लेखाकार और सहायक लेखा अधिकारी अक्सर आकर बोलते हैं कि “सर, आपके अनुभवों से हमें काफी प्रेरणा मिलती है और बहुत कुछ सीखने को मिलता है।” व्यक्तिगत रूप से भी जितना संभव होता है, मैं नए कार्मिकों को उतना सिखाने का प्रयास करता हूँ और मैं अपने परिचित सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से हमेशा कहता हूँ कि कोई भी मदद मुझसे चाहिए हो, तो आप कभी भी मुझसे संपर्क कर सकते हैं। नए लोगों को सिखाने व सहायता करने के लिए मेरे दरवाजे हमेशा खुले हैं।

इसी के साथ मैं उन तमाम वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने इस यात्रा के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक इस 39 वर्ष की यात्रा को सफलतापूर्वक पूर्ण कर पाना, मेरे जीवन में आए तमाम आला अफसरों के सहयोग बिना संभव नहीं था।





मातृभूमि के रक्षक



श्री रवि कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

हे मातृभूमि जल, थल के धरता
तुम ही हो जल, थल के रक्षक
हे देव धरा के निज गौरव तुम,
किस गौरव के तुम योग नहीं
तुम से ही देश का नाज़ है,
तुम से ही मातृभूमि का अभिमान है।
गगन के हर सितारे तुमसे,
हिमालय का शिखर हो,
गौरव वान हो उठा है,
मातृभूमि का कण कण सारा।
आँसू भरी आँखें तुमसे हँसती हैं,
चाहे कितना ही गहरा सन्नाटा हो,
लहरों से तूफान उठते हैं तुमसे,
किनारों की शान तुम हो।
हे मातृभूमि जल, थल के धरता
तुम ही हो जल, थल के रक्षक
कर्मों की आहट से आँगन में दीप जल उठे,
सुने आँगन की जान हो तुम,
आँखें ढूँढे तुम्हें ही हर पल,
तुम ही दिले-ए हिंदुस्तान हो।
हे मातृभूमि जल, थल के धरता
तुम ही हो जल, थल के रक्षक।

हर निशा के बाद सुबह होती है...



श्री प्रमोद कौरव
सहायक लेखा अधिकारी

“सावन की वो पहली फुहार आने वाली है।
उपवन में अब फिर से बहार आने वाली है।
गाँवों के सूखे खेतों को जाकर बता दो,
दरिया में अब के फिर से धार आने वाली है।”

ये दृश्य है उस गाँव का जहाँ लंबे समय से सूखा पड़ा हुआ है। खेतों में फसल व पेड़-पौधे जल के अभाव से सूख चुके थे। पशु-पक्षी पानी की कमी होने के कारण गाँव से पलायन कर चुके हैं और गाँव की पनहारियों को पीने का पानी लाने के लिए भी कोसों दूर जाना पड़ता है। लेकिन अब इस माहौल में आशा की एक किरण दिखाई दे रही है, क्योंकि सावन आने पर बारिश की बौछार पड़ने लगी है और वर्षा होने से गाँव के बाग-बगीचे फिर से हरे-भरे होने लगे हैं। अब गाँव के सूखे खेतों में फिर से फसलें लहलहायेंगी, क्योंकि गाँव के पास बहने वाली नदी में फिर से धार आने वाली है, वापिस आ चुकी बरसात से फिर से गाँव हरा-भरा और खुशहाल हो जाएगा।

ये दृष्टांत किसी गाँव का नहीं है, वास्तव में ये हमारे मानवीय जीवन की उस दशा का चित्रण है, जब विपत्तियों के घने बादल लंबे समय तक हमारे जीवन में छाने के बाद छटते हैं व आशावाद एवं सकारात्मकता के सूर्य की किरणों से फैले प्रकाश का उजाला होने के पश्चात जीवन में वापस खुशियों का सवेरा होता है।

मानव जीवन एक सीधी रैखिक यात्रा नहीं है, जहाँ चीजें हमेशा एक ही दिशा में चलती रहें, बल्कि जीवन सुखों व दुखों के शृंगों और गर्तों के रूप में चलने वाली वक्राकार एक रेखा है। कई बार हमारे जीवन में ऐसा भी समय आता है, जब हर चीज विपरीत दिशा में जाने लगती है। दुःख एक शृंखला के रूप में लगातार एक के बाद एक आते जाते हैं। जीवन एक बोझ लगने लगता है और धीरे-धीरे मानव के अंदर से स्वाभाविक जिजीविषा खत्म होने लगती है। ऐसे में व्यक्ति परिस्थितियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर देता है व कष्टकारी जीवन को ही अपनी नियति मान कर हर समय दुखी होकर जिंदगी को कोसता रहता है, लेकिन विपत्ति और संकट के इन क्षणों में भी हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि जीवन में समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता है। ऐसे वक्त में धैर्य रखते हुए अगर हम सकारात्मकता व आशावाद के साथ दृढ़तापूर्वक परिस्थितियों का सामना करने में सफल हो जाते हैं, तो निश्चित रूप से हम आगामी जीवन के अच्छे दिनों व सुखद लम्हों के गवाह बनते हैं, क्योंकि हर अंधेरी रात के बाद सवेरा होना निश्चित है। ऐसे वक्त में हमें स्वयं से बोलना चाहिए

कि;

“ इस उजड़ी बस्ती में बसेरा फिर से होगा।
ये वक्त भी इक रोज मेरा फिर से होगा।
तम को लेकर साथ में आई निशा तो,
खुशियों का नूतन सवेरा फिर से होगा । ”

जब हम बुरे समय में धैर्यपूर्वक स्वयं को संभाल पाने में सफल हो जाते हैं, तो खुशियों का एक नूतन सवेरा निकट भविष्य में हमारा अभिनंदन करने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

कोई भी विपरीत परिस्थिति मानवीय मन के साहस और दृढ़ निश्चय के आगे ज्यादा देर तक टिक नहीं सकती। हमारा इतिहास उठाकर देखने पर हम पाते हैं कि मनुष्य ने हर समय अपनी इच्छाशक्ति के दम पर जीवन की तमाम चुनौतियों पर विजय पाई है। विकास के क्रम में हमने बाधाओं के अनेक पहाड़ सफलतापूर्वक लांघे हैं और निर्जन में भी मानवीय प्रयासों के फलस्वरूप सभ्यता हमेशा मुस्कराई है। अतः जीवन में खराब वक्त आने पर हमें उसके सामने घुटने नहीं टेकने चाहिए, बल्कि डट कर चुनौतियों का सामना करना चाहिए। उस ईश्वरीय शक्ति एवं स्वयं की क्षमताओं में विश्वास रखते हुए हमें हर पल आगे बढ़ते रहना है और हमेशा खुद को इस भावना के साथ जीवन में अग्रसर करना है:-

“आओ सहारा में कुछ रवानियाँ लिख देते हैं।
हँसते बच्चों पे कुछ कहानियाँ लिख देते हैं।
यहाँ जिन सपनों का आ चुका है अब चौथापन,
उनके हिस्से में कुछ जवानियाँ लिख देते हैं ।”

स्वीकारोक्ति का साहस और सुधार करने की निष्ठा :- सफलता के दो मंत्र



श्रीमती शिवानी कौरव
(पत्नी, श्री प्रमोद कौरव स.ले.अ./हिंदी)

“जीवन में सबसे बड़ी महिमा कभी न गिरने में नहीं, बल्कि हर बार गिरकर उठने में है।”

-नेल्सन मंडेला

यह शब्द मानो हमें सफलता का सार बताते हैं जीवन एक ऐसी यात्रा है, जो जीत और हार दोनों से भरी हुई है महत्वाकांक्षा और प्रतिभा हमें आगे बढ़ाती है जबकि इस पथ पर निरंतर चलते हुए अंतिम विजय प्राप्त करने के लिए स्वीकार करने का साहस एवं सुधार करने की निष्ठा दो परस्पर कुंजिया हैं।

प्रत्येक व्यक्ति सफलता के मार्ग पर जब अग्रसित होता है तो उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है परंतु साहस उसे डर का सामना करने और परिस्थितियों को स्वीकार करने की क्षमता देता है। इसके लिए आवश्यक है वर्तमान परिस्थितियों को स्वीकार करना एवं असफलता से भविष्य के लिए सीख लेना। समर्पण सुधार को बढ़ावा देता है। लचीलापन एवं अनुशासन इसी से उत्पन्न होता है। समर्पण के द्वारा ही गलतियों पर प्रकाश डालकर उन्हें सुधारा जाता है जो सफलता का पथ प्रदर्शित करती है।

जब व्यक्ति साहस एवं समर्पण की खोज करता है तो व्यक्ति को अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में उसे अनेक बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। उनमें सम्मिलित हैं अस्वीकृति, अनिश्चितता, सामाजिक मापदंड एवं अधिक अपेक्षाएँ। व्यक्ति को यह अनिश्चितता हमेशा रहती है कि वह सफल होगा अथवा नहीं, वह इस यात्रा को पूर्ण कर पायेगा या नहीं एवं तरह-तरह की अस्वीकृतियों का सामना करना पड़ता है। अधिक अपेक्षाओं का दबाव व्यक्ति को आगे बढ़ने से रोकता है एवं कुछ सामाजिक मापदंड भी व्यक्ति के जुनून को कम कर उसे हतोत्साहित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आत्म-संदेह व असुरक्षा व्यक्ति के आत्म विश्वास और प्रेरणा को कमजोर बनाती है। इसके साथ ही व्यक्तिगत दायित्व, पारिवारिक जिम्मेदारियां एवं वित्तीय समस्याएं ये वे सभी कारण हैं, जो व्यक्ति के ध्यान व ऊर्जा को उसके लक्ष्य से दूर कर सकते हैं।

इन समस्याओं के समाधान हेतु अनुशासन, धैर्य, आत्म जागरूकता, लचीलापन एवं सीमित मान्यताओं और सामाजिक मापदंडों को चुनौती देने का साहस सम्मिलित है। व्यक्ति को चाहिए कि वह आत्मावलोकन करें एवं इन बाधाओं का यथोचित समाधान करें। आत्मचिंतन कर अपनी कमियों को स्वीकार करते हुए अनुकूलता एवं सीखने की इच्छा से कार्य करते हुए स्वयं में परिवर्तन करें। अंत में नेल्सन मंडेला द्वारा कही गई बात हमें याद आती है कि **"सफलता का अर्थ गिरने से बचना नहीं बल्कि प्रत्येक बार गिरने के बाद अधिक शक्ति, नई ऊर्जा एवं अदम्य साहस से पुनः उठना व प्रयास करना है।"**





श्री केतन आनंद

सहायक लेखा अधिकारी

मलाल

मोटी-मोटी बात सिर्फ इतनी सी है कि :-

जो सपनों के पीछे नहीं भागा, उसे एक वक्त के बाद ये बात लगेगी कि सपनों के पीछे दौड़ा जा सकता था और जो सपनों के पीछे भाग रहा है, उसे किसी रोज ये बात लगेगी कि अपनों के लिए भी रुका जा सकता था। हर आदमी के मलाल रह जाएंगे, आखिर में सब अपनी-अपनी मौत मर जाएंगे, सबको किसी न किसी बात का मलाल रह जाएगा।

जैसा कि निदा फ़ाजली ने कहा है; **'दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है, जो मिल गया वो मिट्टी और जो न मिल सका वह सोना है।'** और इंसानी जज़्बात ऐसे हैं, उसने क्या-क्या पा लिया वो नहीं देखता, जो नहीं मिला उसकी जरूरत बार-बार खटकती है।





श्री मोहित गुप्ता
सहायक लेखा अधिकारी

जयपुर: गुलाबी नगर का आकर्षण

मैंने अपने मित्र के साथ एक बार जयपुर, राजस्थान जाने की योजना बनाई जो अपने शानदार किलों, रंगीन महलों, जीवंत बाजारों और समृद्ध इतिहास के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसे 'गुलाबी नगरी' के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि इसकी कई इमारतें टेराकोटा से बनी हैं, जो इसे सूर्योदय और सूर्यास्त के समय एक गुलाबी रंगत प्रदान करती हैं। जयपुर की यात्रा मुझे राजशाही युग के वैभव में वापस ले गयी है, मुझे जयपुर के स्वादिष्ट राजस्थानी व्यंजनों का लुत्फ उठाने का मौका मिला और हस्तशिल्प की खरीदारी का एक अनूठा अनुभव भी मिला। इस लेख में, मैंने जयपुर के कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थलों की सैर की और शहर के भव्य महल के शाही अतीत को भी जानने का मौका मिला, जिनसे राजपूत शासन की स्थापत्य कला और शक्ति का प्रमाण मिलता है। जिसका वर्णन निम्नानुसार है:-

आमेर किला : आमेर का किला जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह किला अपने शानदार हॉल, जटिल नक्काशी और मावठा झीलों के लिए प्रसिद्ध है। शीश महल अपनी दर्पण वाली दीवारों के लिए प्रसिद्ध है, जो सूर्य के प्रकाश में जगमगा उठती हैं। इस मंदिर में शीला देवी का मंदिर स्थित है इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है।

जयगढ़ किला : जयगढ़ किला आमेर किले के पीछे स्थित है। इसे युद्ध के समय इस्तेमाल के लिए बनवाया गया था और यह दुनिया की सबसे बड़ी तोपों में से एक, जयबान तोप का घर भी है। इस तोप का वजन 50 टन है। यह किला लाल बलुआ पत्थर से बना हुआ है। इस किले में हरिहर मंदिर और काल भैरव का मंदिर है। यह किला और आमेर का किला भूमिगत मार्ग से जुड़े हुए हैं। किले से जयपुर शहर का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

नाहरगढ़ किला : अरावली पहाड़ियों पर स्थित, नाहरगढ़ किला जयपुर के शानदार दृश्य दिखाता है। किले में माधवेंद्र भगवान का मंदिर और जयपुर वैक्स म्यूजियम स्थित है। इस किले का निर्माण सवाई राजा जय सिंह द्वितीय ने करवाया था इस किले का नाम पहले सुदर्शन गढ़ था। इस किले में 9 महल है। यह महल विक्टोरियन शैली में बनवाया गया है। 1857 की क्रांति के समय यूरोपियन लोगों को सवाई राम सिंह ने यही आश्रय दिया था।



सिटी पैलेस : यह विशाल महल परिसर जयपुर के पूर्व शाही परिवार का निवास स्थान था। महल परिसर में कई आंगन, हॉल, संग्रहालय और दीर्घाएं हैं, जो मुगल, यूरोपीय और भारतीय स्थापत्य शैली का अद्भुत मिश्रण प्रदर्शित करती हैं। इस भवन में एक संग्रहालय है, जिसमें राजपूती पोशाक व हथियारों का विशाल संग्रह है इसका निर्माण जय सिंह द्वितीय ने वर्ष 1732 में करवाया था इसके आर्किटेक्ट विद्यादार भट्टाचार्य थे।

हवा महल : इस पाँच मंज़िला इमारत का निर्माण 1799 में महाराज सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। हवा महल, जिसे 'पवन महल' के नाम से भी जाना जाता है, अपनी हवादार खिड़कियों (झरोखों) के लिए प्रसिद्ध है। शाही महिलाएं इन झरोखों से बाहर देखती थीं, जुलूसों और शहर की गतिविधियों का आनंद लेती थीं। इसे कृष्ण भगवान के मुकुट की कल्पना के आधार पर बनाया गया है। इसमें 953 झरोखें हैं जिससे ठंडी और ताजी हवा आती रहती है।

गोविंद देवजी का मंदिर : जयपुर शहर के बीचों-बीच स्थित यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण आमेर के महाराज सवाई प्रताप सिंह द्वितीय ने करवाया था। मंदिर की दीवारों और छतों पर सोने का काम किया गया था, जो इसे एक अलौकिक रूप प्रदान करता है। इस मंदिर में सात आरतियाँ होती हैं यह एक बिना शिखर का मंदिर है। यह चन्द्र महल के पूर्व में बने जय निवास बगीचे के मध्य अहाते में स्थित है।

खगोलीय विज्ञान और विज्ञान के अजूबे जंतर-मंतर : जयपुर खगोल विज्ञान में महाराजा जयसिंह द्वितीय की गहरी रुचि का प्रमाण, जंतर-मंतर, एक वेधशाला परिसर का घर है। इसका निर्माण 1724 में करवाया गया था। यहाँ विभिन्न प्रकार के खगोलीय उपकरण मौजूद हैं, जिनका उपयोग समय, ग्रहों की गति और खगोलीय घटनाओं का अध्ययन करने के लिए किया जाता था। जंतर-मंतर विज्ञान और इंजीनियरिंग का एक अद्भुत उदाहरण है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची में 2010 से शामिल है। यहाँ पर उपलब्ध यंत्रों की सहायता से पंचांग तैयार किया जाता है।

जयपुर के बाज़ारों की रंगीन दुनिया न केवल खरीदारी का बल्कि शहर की संस्कृति का भी अनुभव करवाते हैं। बहुत सारी यादों के साथ मैं अपने घर वापस आ गया।





जीवन का उद्देश्य



श्री पमपम कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

एक गाँव में रजत शिवहरे नाम का एक आदमी रहता था और उस गाँव के बाहर जाती हुई सड़क के बगल में एक संत की कुटिया थी। रोजाना रजत शिवहरे उस कुटिया के पास से गुजरता और कुटिया के बाहर साधना करते संत को अपशब्द बोल कर आगे निकल जाता है और संत प्रत्युत्तर में मुस्कुरा देते थे। एक दिन तंग आकर रजत शिवहरे ने संत से पूछ ही लिया कि मैं आपको अपशब्द बोलता हूँ और आप सिर्फ मुस्कुरा देते हैं तो संत बोले कि मेरा उद्देश्य जीवन को सार्थक बनाना है तो रजत शिवहरे ने पूछा जीवन क्या है? संत फिर मुस्कुराए और बोले इस प्रश्न का उत्तर मैं कल दूंगा इतना बोल संत ध्यान मग्न हो गए।

रजत शिवहरे जीवन के प्रश्न में उलझा घर आया और रात में सोने के लिए बिस्तर पर लेटते ही उसे स्वप्न आया कि वह जंगल में है। उसने बाघ की आवाज सुनी, तो वह भागने लगा। भागते-भागते वह जंगल में झाड़ियों और लताओं से भरे एक कुएं में गिर गया। कुएं में गिरते समय वह कुएं की दीवार पर उगे एक पेड़ की शाखा में फंस गया। वह सोच रहा था, “बाघ कम से कम मुझ पर हमला करने के लिए यहाँ नहीं आ सकता है।” तभी उसने देखा कि कुएं की तली सूखी है और वहाँ बहुत सारे साँप थे। उन्होंने फुफकारते हुए फन उठाया और जो उसे काटने के लिए तैयार थे।

अब वह वास्तव में संकट में था, दो शाखाओं से लटका हुआ था, आधे कुएं के नीचे। नीचे, बहुत सारे जहरीले साँप उसे काटने के लिए इंतजार कर रहे थे और शीर्ष पर एक क्रूर बाघ उसे खाने का इंतजार कर रहा था। उस समय वह बड़ी चिंता में पड़ा हुआ था कि तभी उसे दो चूहे दिखें। उसने जो जड़ पकड़ रखी थी, उसके एक तरफ एक काला चूहा जड़ को खा रहा था और दूसरी तरफ एक सफ़ेद चूहा भी ऐसा ही कर रहा था। इसी उधेड़बुन में वह सोच रहा था कि अगर वह बाहर निकलेगा तो बाघ द्वारा खा लिया जाएगा और नीचे जाए तो विषैले दाँतों से युक्त साँपों द्वारा काट लिया जाएगा, उसके पास अधिक समय नहीं था क्योंकि उसे यह भी लग रहा था कि देर-सबेर चूहे सब खत्म कर ही देंगे। ऐसे में उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? लेकिन फिर भी वह यह सोचकर संतुष्ट था कि कम से कम मैं कुछ घंटों के लिए तो बच ही गया हूँ।

जिस समय वह इसी संकटपूर्ण स्थिति में था, तभी उसकी नजर पेड़ की शाखा पर मधुमक्खियों के एक छत्ते पर पड़ी। हवा के तेज झोकों से पेड़ की शाखा हिल रही थी जिससे कुछ शहद की बूंदें उसके चेहरे के करीब गिर रही थीं इस अवसर का लाभ उठाते हुए, उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और शहद की एक बूंद उसकी जीभ की नोक पर आ भी गई। वह उस शहद के स्वाद का आनंद लेते हुए सोचने लगा, “कितना मीठा! कितना मीठा! बाघ के जाने के बाद, उसका दोस्त आया और उसने देखा कि रजत शिवहरे नीचे संकट में है, तो वह रस्सी का एक टुकड़ा लाया और उसे अंदर फेंकते हुए बोला; “रस्सी को पकड़ो और बाहर आओ।” लेकिन रजत शिवहरे ने कहा; “नहीं! नहीं! मुझे रस्सी नहीं चाहिए। मुझे शहद चाहिए।” अचानक उसकी नींद खुली और वह घबरा गया कि इसका मतलब क्या है?

प्रातः काल वह उठ कर सबसे पहले संत के पास गया और रात के स्वप्न के बारे में बताया, उसकी बातें सुन कर संत मुस्कुराए और बोले कि **"यही जीवन है और तुम्हारे स्वप्न में गहरा दार्शनिक भाव छिपा है। जैसे मनुष्य का तात्पर्य भौतिक शरीर में अंतर्निहित आत्मा से, बाघ का तात्पर्य मनुष्य की मौत से है, जो निरंतर साये की तरह उसका पीछा करती रहती है। विषैले दाँतों से युक्त साँप का तात्पर्य लकड़ियों की चिता या कब्र है जो उसकी प्रतीक्षा कर रही है। शहद का तात्पर्य परिवार के साथ भौतिक सुखों में इंद्रियतृप्ति, तथा चूहे, दिन और रात के सूचक, मधुमक्खियाँ तथा कथित परिवार, रिश्तेदार और दोस्त से, और मित्र-गुरु माँ-पिता, जो हमें बचाने आते हैं।"** फिर संत ने इसका सार रजत शिवहरे को समझाया कि यह इस दुनिया में बद्ध आत्माओं का उदाहरण है, वे बहुत खतरनाक स्थिति में हैं। हम सभी इस कुएं में शाश्वत काल द्वारा जकड़े हुए हैं। भौतिक सुखों से आकर्षित होकर, हम आनंद लेते रहना चाहते हैं और कुएं के अंदर ही रहना चाहते हैं, भले ही इतनी सारी समस्याएँ हों। लेकिन समय हमें पकड़ लेता है। समय और ज्वार किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करते हैं। परमेश्वर की भक्ति के महत्व को सुनने के बाद भी हम गलत सोचते हैं, मुझे अभी आनंद लेने दो और बाद में कल से भक्ति करूंगा। **"हमें अपने परम मित्र/गुरु से दया और ज्ञान की रस्सी मिलती है, लेकिन हम उसे लेने से इनकार कर देते हैं और इस भौतिक दुनिया में रहने का फैसला करते हैं लेकिन कौन जानता है कि कल क्या होगा?"**



प्रकृति एक वरदान



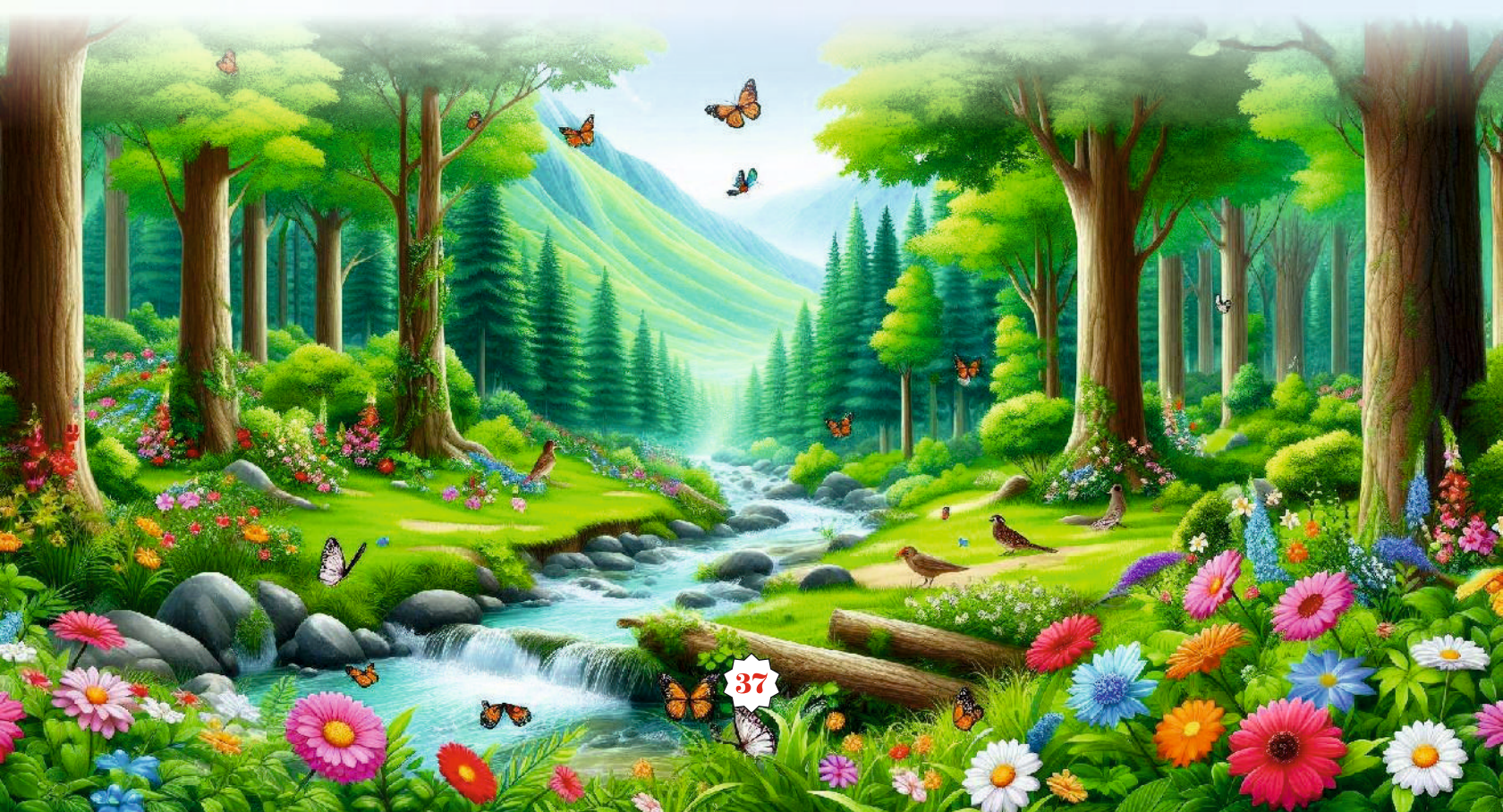
श्री विवेक पटेल
सहायक लेखा अधिकारी

प्राकृतिक प्रेम मनुष्य में सहज है। प्रकृति, उसके बदलते मूड में हर दिल से अपील करती है। अगर कोई आदमी अपनी आँखों को प्रकृति की सुंदरता से अलग करता है, तो उसे जल्द ही अपनी गलती का एहसास होता है।

अब हम प्रकृति के गौरव की ओर मुड़ते हैं। बर्फीली चोटियों के साथ ऊँचे पहाड़ क्षितिज तक बहता असीम समुद्र, गिरता हुआ पानी, चमकती हुई बर्फ की चादर के साथ नदियाँ और झीलें, मोती जैसी ओस हरी घास पर गिरती है और प्रकृति की सुंदरता को और निखारती है। रंग-बिरंगे फूलों के वन, गेहूँ, मक्का, बाजरा और जौ की जीवनदायी फसलें, पृथ्वी को कवर करने वाले अनगिनत पेड़ प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाते हैं।

प्रकृति की ओर पीठ करके और भौतिकवाद का अंध भक्त बनकर हम 'अपना जीवन' व्यर्थ करते जा रहे हैं। मानव जाति के जीवन में तकनीकी उन्नति के कारण हमारी प्रकृति का लगातार हास होता जा रहा है, जिसे संतुलित और उसके प्राकृतिक संपत्ति को संरक्षित रखने के लिए उच्च स्तर की जागरूकता की जरूरत है।

प्रकृति हमें आध्यात्मिक संदेश देने में सक्षम है। इसलिए हम सब को अपने निजी स्वार्थों के लिए प्रकृति को क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए। हमें अपने प्रकृति के बारे में पूर्णतः जागरूक होना चाहिए और इसको बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए जिससे धरती पर जीवन हमेशा संभव बना रहे।



ओ साथी चल...



श्री अतुल चौधरी
सहायक लेखा अधिकारी

गाँव का स्कूल था, सोशल साइंस के मास्टर- प्रथम विश्व युद्ध के बारे में पढ़ेंगे, मास्टरजी ने बोला हॉ बेटा! तू खड़ा हो, पढ़ अगला पैराग्राफ, बहुत अच्छे! आगे वाला पैराग्राफ राजू पढ़ेगा, शाबास राजू! इस तरह ये अध्याय खत्म हुआ। मास्टरजी ने बोला आज हमने प्रथम विश्व युद्ध पढ़ लिया। अगली क्लास में हम संविधान पढ़ेंगे। गलती उन टीचर्स की नहीं थी, जो 3 हजार रूपये महीने में विवेकानंद थोड़े बना देते वो उस लड़के को। पढ़ने में ठीक ठाक था वो लड़का, हॉ.. अंधों में काना राजा बोल सकते हैं।

गर्मी की छुटियाँ आयी, किसी ने उसके बड़े भैया को बोला, इसका नवोदय का फॉर्म भर दो। फॉर्म भरा गया, एक प्रतियोगिता दर्पण की गाइड लाकर पकड़ा दी गयी, जिसमें कुछ 70 के आस-पास अध्याय थे। भैया ड्यूटी जाते थे, शाम को 2 चैप्टर पूरा करने पर और सवालियों के संतोषप्रद जवाब देने पर गन्ने का जूस पिलाया जाता था। लड़का उसमें भी बहुत खुश था, जब गर्मियों में सब सो रहे होते थे तो दिन में, अपने 2 चैप्टर कम्प्लीट करके, भैया का इंतज़ार कर रहा होता था, सही बोले तो भैया का नहीं, जूस का। नवोदय में सिलेक्शन हुआ, पत्रकार जी आये कि रिजनल अखबार में छाप देते हैं, लेकिन पता नहीं क्यों उस छोटे से बच्चे ने मना कर दिया, शायद उसे लगा कि ये व्यक्तिगत उपलब्धि अखबार की खबर के लायक नहीं है, या शर्म आयी होगी फोटू छपवाने में।

नवोदय में उस लड़के की हालत खराब, कुछ सब्जेक्ट इंग्लिश में थे, पल्ले न पड़े वो चीज़ें। फिजिक्स के 3 चैप्टर हो गए लेकिन डाउट ये था कि ये गुरु जी फिनोमेना फिनोमना (Phenomenon) क्या बोलते रहते हैं। मैथ्स वाले गुरु जी इजकलटू इजकलटू बोलते थे, बाद में समझ आया कि वो Is equal to बोलते थे। खैर मेहनती तो था ही वह लड़का, 9th में बहुत पीछे आया लेकिन 10th टॉप किया। प्रिंसिपल ऑफिस के सामने बोर्ड पर नाम लिखे जाने पर उसे गर्व महसूस हुआ। उसके घर में ये तय हुआ कि अब इसको शिक्षा के लिए मक्का-मदीना [Kota] भेजा जाना चाहिए। भेज दिया गया। मोटी फीस जमा करवाई गई। एक तरफ उस टाइम गुस्सा तो बहुत आया फीस पर लेकिन दूसरी तरफ कोचिंग में बहुत मेहनती लोग भी थे और कोई मेहनत करेगा तो पैसा लेगा ही, वो दी हुई मोटी फीस आज उचित लगती है। लेकिन अलग ही दुनिया थी भाई, पहला टेस्ट हुआ, 5000 के आस-पास ने टेस्ट दिया, रैंक आयी 4000 के आस-पास। इस बात पर हॉ रो लेता था ठीक ठाक मात्रा में। पूरी 11th क्लास स्ट्रगल में बीती,



लेकिन घर वाले बहुत सपोर्टिव थे, पता नहीं उन्हें क्यों हद से ज्यादा विश्वास था। भैया दो ही चीजों के बारे में पूछते थे - पैसा और नींद, मम्मी बस 1 चीज़ सिर्फ खाना। कभी रैंक वगैरह पर चर्चा हुई ही नहीं, वो लड़का ही आगे से बता देता था कि इतनी आई है, उधर से जवाब आता था - कोई बात नहीं, खुश रहो ईश्वर सब अच्छा करेंगे। लेकिन अंदर आग थी, रुका नहीं, चलता रहा, बैच इम्प्रूव होता रहा और 2 साल की स्ट्रगल से टॉप बैच (A1) में आ गया। वहाँ HOD पढ़ाते थे, शानदार टीचर, महंगे टीचर, अब टॉप 50 में आने लगा।

आज भी याद है, केमिस्ट्री का पेपर हुआ था, रैंक 1 आयी थी पूरे कोचिंग में, इतने लोगो में, उस दिन फिर से रोया था थोड़ा सा। मोटी फीस ली कोचिंग वालों ने लेकिन जीवन में एक बड़ा बदलाव आया, रैंक 306, JEE एडवांस में, केमिस्ट्री में JEE एडवांस में पूरे में से पूरे नंबर। आई.आई.टी में पहुंच गया। लेकिन फिर वही कहानी, संघर्ष, यह कुछ अलग टाइप का संघर्ष था। पहली समस्या किताबें तो समझ आती थी, लेकिन कुछ प्रोफेसर फुल अंग्रेजी बोलते थे। एक बार क्लास में एक प्रोफेसर ने खड़ा किया और कुछ पूछा, जवाब आता था, लेकिन मुँह से शब्द नहीं निकले, खूब भला बुरा कहा प्रोफेसर ने, पढ़ के नहीं आते वगैरह वगैरह, अंग्रेजी में डांटा। सोच रहा था काश अंग्रेजी बोलनी नहीं आती तो समझ में भी नहीं आनी चाहिए थी क्योंकि सुन के बुरा भी लग रहा था और जवाब भी नहीं दे पा रहा था। हॉस्टल गया और अंग्रेजी में एक लम्बा सा मेल लिखा (लिखना आता था, बोलना नहीं आता था), पहले तो उस प्रश्न का उत्तर लिखा कि देखो मुझे आता है और फिर दुविधा लिखी कि अंग्रेजी के चक्कर में बगल वाले लड़के से बात नहीं करता था कि कभी कुछ अंग्रेजी में पूछ लिया तो जवाब नहीं दे पाऊँगा। प्रोफेसर बहुत अच्छी थी (MIT पास आउट दुनिया की नंबर 1 कॉलेज से पढ़ी हुई), ऑफिस बुलाया, समझाया, सोल्यूशन्स बताये, इंग्लिश स्पोकन कोर्स ज्वाइन करवाया। दूसरी समस्या दिल्ली का एनवायरनमेंट शूट नहीं कर रहा था, बीमार रहा बहुत, खाना पसंद नहीं आता था, जीवन में पहली बात पनीर खा रहा था, कागज खाने की तरह लगता था, बाकी लोग बड़े चाव से खाते थे। उस साल 10 में से सिर्फ साढ़े 5.5 CGPA [55%] आए, लेकिन यात्रा जारी रही।

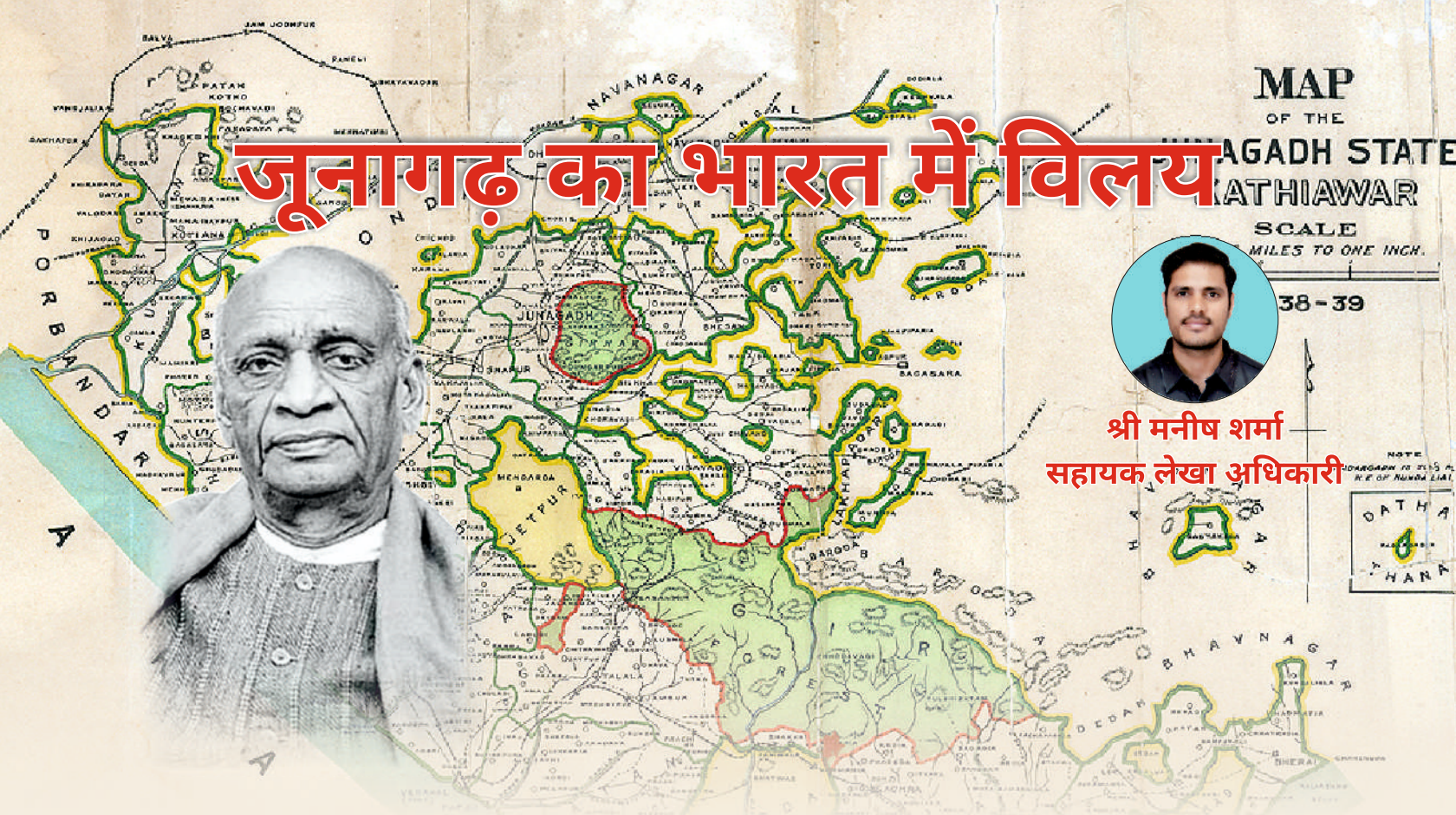
फ़ास्ट फॉरवर्ड तो 3rd ईयर इंटरशिप के लिए कम्पनीज आयी हुई थी, 3 राउंड हुए (अब अंग्रेजी ठीक थी उसकी), 3rd राउंड में सिर्फ 3 लोग बचे थे, बाकी के दोनों बहुत अच्छे थे [उनमें से एक अभी IPS है]। चांस बहुत कम थे, लेकिन थर्ड राउंड में इंटरव्यू के बजाये उन्होंने एक टास्क दिया। जो काम हमें इंटरशिप में [60 दिन में] करना था उसका एक सैंपल दिया करने को। उस लड़के को पता था, टैलेंट में वो उन दोनों से बहुत पीछे है, लेकिन मेहनत में वो पूरा गधा है। सात दिन के बाद था थर्ड राउंड। रात दिन लाइब्रेरी बैठा रहा [IITD की लाइब्रेरी 24 x 7 खुलती है] और जो काम इंटर्न में 60 दिन में करना था, उसको सात दिन में 60% कर दिया। बाद में HR ने बताया कि 3rd राउंड तो फॉर्मेलिटी थी, काम देख के ही तय हो गया था कि इसको लेना है। कम्पनीज को उस लड़के जैसे एवरेज गधे बहुत पसंद आते हैं, उसी कंपनी ने जॉब भी ऑफर की। फाइनल ईयर आ गया फाइनल ईयर SGPA - 9.2 (92%) रहा।

एस.वी. इंदुलकर अवार्ड मिला (पूरे बैच में से सिर्फ 2 को मिलता है)। एक लड़की जिसने लिफ्ट में फर्स्ट ईयर में Hi बोला था, उस समय मैंने उससे बात नहीं की थी क्योंकि वो अंग्रेजी बोलती थी क्लास में, डर लगा कि अभी अंग्रेजी बोलने लगी तो लिफ्ट में ही जान चली जाएगी। 4th ईयर तक वो अच्छी दोस्त थी, अवार्ड के दिन उसी लड़की ने गले लग के बधाई दी, अवार्ड से ज्यादा इसमें प्राउड फील हुआ। बढ़िया लाखों की जॉब थी हाथ में, लेकिन मन था कलेक्टर बनने का, देश सेवा करने का। MIT वाली प्रोफेसर ने खूब समझाया कि बाहर जा, अमेरिका-समेरिका, आगे की पढ़ाई कर लेकिन यू.पी.एस.सी. पास करने की धुन सवार थी। फिर एक नई कोचिंग में प्रवेश, लेकिन मुश्किल से 20 क्लासेज में ही गया होगा, समझ आ गया था कि अब ये सब वो खुद से कर लेगा, इतनी परिपक्वता आ गयी थी उस लड़के में। यू.पी.एस.सी. में कोशिश की खूब, उसके नोट्स पढ़ के दोस्त सेलेक्ट भी हुए। 3 मैन्स भी लिखे लेकिन यहाँ सफलता नहीं मिली।

स्टेट पी.सी.एस. भी दिया, उस समय यू.पी.एस.सी.में बिजी था इसलिए उतना टाइम स्टेट पी.सी.एस. की तैयारी को न दे सका इस कारण अच्छी रैंक नहीं आयी। लेकिन डेढ़ महीने की स्टेट पी. सी. एस.की तैयारी में एक बात समझ आ गयी कि यहां लोगों के पास ढंग के विकल्प ही नहीं है, कोई क्वालिटी की बात ही नहीं कर रहा, ढंग का कंटेंट ही नहीं है। स्टेट पी.सी.एस. एस्पिरेंट्स को पढ़ाने लगा, लोगो को बढ़िया लगा, उनको लगा कि ये लड़का मेहनती है, बातें भी ढंग की कर लेता है, खूब प्यार दिया, भर-भर के प्यार दिया। मजे की बात ये है कि वो लड़का आज भी स्ट्रगल कर रहा है। प्रतिदिन सुबह उठते ही नई लड़ाई, बस लड़ाई हमेशा नई होती है। घर वाले आज भी साथ खड़े हैं [पूछते भी नहीं कि क्या कर रहा है] आज भी बस खाना, नींद और पैसे है क्या, ये 3 ही सवाल पूछते हैं। दोस्त आज भी ब्लाइंड ट्रस्ट करते हैं, प्रॉब्लम आने से पहले कॉल कर देते हैं या रूम पर पहुंच जाते हैं।

वो एवरेज लड़का, आज भी एवरेज ही है, बस जब पीछे मुड़ के देखता है तो लगता है उस गाँव के स्कूल में सोशल साइंस की क्लास से बहुत वह आगे आ चुका है। दिल से चाहता है कि कभी किसी बच्चे को सोशल साइंस ऐसे नहीं पढ़ाई जाए, एक सपना है शिक्षा के क्षेत्र में कुछ करने का। जब आगे देखता है तो बहुत काम बाकी है, बहुत सारा, बहुत कुछ करना है, कोचिंग सिस्टम को गालियां देने की बजाये एजुकेशन सिस्टम पर काम करना है। हमेशा आभारी है वो लड़का घर वालों का, नवोदय के टीचर्स का, कोटा कोचिंग के टीचर्स का, दोस्तों का और हाँ उस ईश्वर का जो हर दिन एक नया जीवन देता है। एवरेज होना अच्छा है, अपनी कमियों के साथ आगे बढ़ना है, ये फेल और प्राउड की यात्रा चलती रहनी चाहिये। इसे ही जीवन कहते हैं।





जूनागढ़ का भारत में विलय भारतीय इतिहास के उन महत्वपूर्ण क्षणों में से एक है जिसने देश की राजनीतिक और भौगोलिक स्थिति को गहराई से प्रभावित किया क्योंकि यह घटना भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन के तुरंत बाद घटित हुई थी। इस विलय की कहानी न केवल राजनीतिक और सामरिक निर्णयों की है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र और स्वतंत्रता के प्रति जनता की आकांक्षाओं को भी दर्शाता है।

भूमिका : भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन 1947 में आजादी के समय हुआ था, जब ब्रिटिश राज खत्म हुआ और दो नए राष्ट्र भारत और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। इस विभाजन के तहत, भारतीय उपमहाद्वीप के 565 से अधिक रियासतों को यह चुनने की आज़ादी दी गई थी कि वे भारत या पाकिस्तान में से किसी एक में विलय कर लें। जूनागढ़, गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण रियासत थी, जिसका शासन नवाब महाबत खानजी-III के हाथ में था। जूनागढ़, जो कि एक छोटी लेकिन सामरिक रूप से महत्वपूर्ण रियासत थी, का मुद्दा इस चयन प्रक्रिया में बहुत जटिल बन गया था।

जूनागढ़ का भौगोलिक और राजनीतिक महत्व : जूनागढ़ गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप पर स्थित था, जिसका समुद्री तट भी था। इसका राजनीतिक महत्व इसके स्थान से जुड़ा था, क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी हिस्से में स्थित था और इसकी सीमाएँ भारत से घिरी हुई थीं।

जूनागढ़ के नवाब का निर्णय : जूनागढ़ के नवाब, महाबत खानजी III, एक मुस्लिम, जिनके पूर्वजों ने लगभग दो सौ वर्षों तक जूनागढ़ और छोटी रियासतों पर शासन किया था, ने एक असाधारण निर्णय लिया, जो कि उनकी रियासत के हितों के विपरीत था। नवाब ने पाकिस्तान के साथ विलय की घोषणा की, जो भौगोलिक रूप से अव्यावहारिक था क्योंकि जूनागढ़ के चारों ओर भारतीय क्षेत्र था और पाकिस्तान से इसकी कोई सीधी सीमा नहीं लगती थी। हालाँकि, जूनागढ़ की 80 प्रतिशत से अधिक आबादी हिंदू थी, और उनमें से अधिकांश भारत का हिस्सा बनना चाहते थे। इस निर्णय से न केवल स्थानीय जनता में असंतोष फैला, बल्कि भारतीय सरकार भी इससे सहमत नहीं थी। भारतीय सरकार ने नवाब के इस निर्णय के खिलाफ सैन्य और आर्थिक दबाव बढ़ाया।

भारतीय प्रतिक्रिया और सैन्य हस्तक्षेप : भारत सरकार ने जूनागढ़ के नवाब के निर्णय को अस्वीकार कर दिया और साथ ही जूनागढ़ को चारों तरफ से घेर लिया और आर्थिक नाकाबंदी लगा दी, जिससे रियासत के अंदर की स्थितियाँ और भी कठिनाईयों से भर गईं। इस नाकाबंदी का उद्देश्य जूनागढ़ को आर्थिक और सैन्य दबाव में लाना था, ताकि वहाँ के नवाब अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें। इसके बाद, जूनागढ़ के नवाब ने अंततः समर्पण कर दिया और भारत सरकार के आगे अपनी आधिकारिक सहमति दी। नवाब के इस कदम ने राजनीतिक परिवर्तन की नई दिशा निर्धारित की।

जनमत संग्रह और अंतिम विलय : अंततः, भारतीय सरकार ने जूनागढ़ में विलय की पुष्टि के लिए जनमत संग्रह का आयोजन किया। इस जनमत संग्रह में जूनागढ़ के नागरिकों को भारत या पाकिस्तान में विलय का चयन करने का मौका दिया गया। यह जनमत संग्रह नवंबर 1947 में हुआ, और इसमें जूनागढ़ के लोगों ने भारी बहुमत से भारत में विलय के पक्ष में मतदान किया। जनमत संग्रह के परिणामों के बाद, भारतीय सरकार ने जूनागढ़ को आधिकारिक रूप से अपने राज्य में मिला लिया।

नवाब का पलायन और पाकिस्तान की प्रतिक्रिया : नवाब महाबत खानजी III और उनके कुछ सलाहकार, जनमत संग्रह के नतीजों के बाद, कराची, पाकिस्तान चले गए। पाकिस्तान सरकार ने इस विलय को भारत के दबाव का परिणाम बताया और इसे अनुचित ठहराया। हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय और अधिकांश जूनागढ़ की जनता ने जनमत संग्रह के परिणामों को स्वीकार किया, जिससे इस क्षेत्र में शांति स्थापित हुई।

विलय के बाद के प्रभाव : जूनागढ़ के भारत में विलय के बाद, वहाँ के सामाजिक और आर्थिक ढांचे में काफी बदलाव आया। भारत सरकार ने इस क्षेत्र के विकास के लिए कई योजनाएं शुरू कीं, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। जूनागढ़ के लोगों ने भी इन परिवर्तनों का स्वागत किया और इस नए परिवेश में धीरे-धीरे अपनाया, और विलय के कुछ ही सालों में, जूनागढ़ भारतीय गणराज्य का एक समृद्ध और स्थायी हिस्सा बन गया।

निष्कर्ष : जूनागढ़ का भारत में विलय न केवल भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी, बल्कि यह दर्शाता है कि किस प्रकार ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक कारक एक साथ मिलकर एक राष्ट्र के भविष्य को आकार देते हैं। जनमत संग्रह और लोगों की इच्छा ने यह सुनिश्चित किया कि जूनागढ़ का विलय न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण तरीके से हो, जिससे यह क्षेत्र आगे चलकर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके। इस घटना ने भारतीय राज्यों के विलय की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण मिसाल कायम की, जो आज भी भारतीय एकता के संदर्भ में याद की जाती है। जूनागढ़ का विलय भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक सकारात्मक अध्याय के रूप में दर्ज हो गया।





सांस्कृतिक धरोहर - नाहरगढ़ किला



सुश्री शेफाली शर्मा

(पत्नी, श्री मनीष शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी)

राजस्थान को किलों का शहर कहा जाए तो गलत नहीं होगा। यहां इतने सारे किले हैं जिसे घूमने और जानने के लिए काफी वक्त चाहिए। इसी में से एक है **नाहरगढ़**, जहां की खूबसूरती और शान ही निराली है।

राजस्थान में अरावली पहाड़ियों के बीच स्थित है नाहरगढ़ किला, जो दिखने में जितना अद्भुत है उतना ही विशाल भी। किले को जयसिंह द्वितीय ने सन् 1734 में बनवाया था। जो एक विशाल दीवार द्वारा जयगढ़ किले से जुड़ा हुआ है। आमेर और जयगढ़ किले के ही तरह ये किला भी शहर की सुरक्षा का काम करता है। इसे देखने के लिए सैलानियों की भारी भीड़ उमड़ती है, और तो और कई मशहूर फिल्मों जैसे '**रंग दे बसंती**' और '**जोधा अकबर**' फिल्मों के कई सीन भी यहां शूट हुए हैं। तो और क्या खासियत समेटे हुए है यह किला, आइए जानेंगे इस के बारे में...

नाहरगढ़ किले का निर्माण जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1734 में अरावली पहाड़ियों पर एकांतवास स्थल के रूप में करवाया था। नाहरगढ़ किला अपनी किलेबंदी के माध्यम से जयगढ़ किले से जुड़ा हुआ है। ऐसा माना जाता है कि इस किले के निर्माण में राठौड़ राजकुमार नाहरसिंह भोमिया की आत्मा ने बाधा डाली थी। हालांकि, किले के अंदर उनके लिए समर्पित एक मंदिर का निर्माण कराकर आत्मा को शांत कर दिया गया था। सवाई रामसिंह ने 1868 में इस किले का जीर्णोद्धार करवाया था।

यह किला 700 फीट की ऊंचाई पर बना हुआ है। जिस की वजह से आज तक इस पर कोई आक्रमण नहीं कर पाया। किले में दीवाने आम, खज़ाना भवन और सैनिक विश्रामगृह भी है। इस किले में सबसे दर्शनीय माधवेंद्र भवन है जिसका निर्माण महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय के द्वारा करवाया गया था।

माधवेंद्र भवन में रानियों के लिए नौ खास कमरे बनवाए गए थे और राजा के लिए एक शानदार कमरा बनाया गया था। यह किला दो मंज़िला बनाया गया था। सभी रानियों के कक्ष बिल्कुल एक समान बनाये गए हैं। ग्रीष्म ऋतु में रानियां नीचे रहा करती थी और शरद ऋतु में ऊपर के कक्ष में। रानियों के हर महल को राजा के महल से एक गलियारे से जोड़ा गया है जिसे **राजा का गलियारा** बोला जाता है। महल में पानी की एक बावड़ी भी बनी है जो उस समय पानी की पूर्ति करता होगी। आज भी उसमें पानी है। पास में ही एक म्यूजियम भी बनाया हुआ है जिसमें कई मोम (वैक्स) की प्रतिमाएं हैं और शीश महल भी बना है। नाहरगढ़ किले से जयपुर शहर का सुंदर दृश्य दिखता है। वैसे इस किले से सूर्यास्त का सुंदर नज़ारा भी दिखता है।

नाहरगढ़ किले पर कभी हमला नहीं किया गया, लेकिन यह कुछ प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का गवाह बना, जैसे कि 18वीं शताब्दी में जयपुर पर हमला करने वाली मराठा सेना के साथ संधियाँ। इस किले ने 1857 के सिपाही विद्रोह के दौरान ब्रिटिश रेजिडेंट की पत्नी सहित इस क्षेत्र में कई यूरोपीय लोगों को शरण दी थी।

नाहरगढ़ के किले के अंदर स्थित दर्शनीय स्थल :

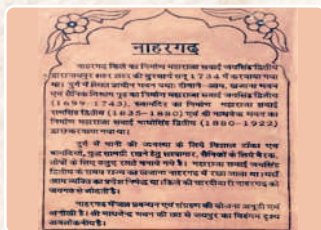
जैविक पार्क : नाहरगढ़ किले के परिसर में आकर्षक संरचनाओं के अलावा एक नाहरगढ़ जूलॉजिकल पार्क भी स्थित है जो इस किले का एक खास आकर्षण है। नाहरगढ़ अभयारण्य के 7.2 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले, जैविक पार्क को बारीक ग्रेनाइट और क्वार्ट्ज चट्टानों से सजाया गया है। यह पार्क अपने समृद्ध वनस्पतियों के लिए जाना जाता है जिसमें आप कई जानवरों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देख सकते हैं। इस जैविक पार्क में एशियाई शेर, बंगाल टाइगर और भारतीय तेंदुए भी पाए जाते हैं। सबसे खास बात तो यह है कि इस पार्क में पक्षियों की 285 प्रजातियां भी पाई जाती है जो पक्षी प्रेमियों को बेहद आकर्षित करती हैं। नाहरगढ़ जूलॉजिकल यहाँ ऐसा खास पर्यटक केंद्र है जहां पर एशियाई शेर, बंगाल टाइगर, पैंथर, भेड़िये, हिरण, लकड़बग्घा, मगरमच्छ, हिमालयी काला भालू, सुस्त भालू, जंगली सूअर, आदि जैसे जानवर पाए जाते हैं।

मूर्ति कला पार्क : नाहरगढ़ के किले में विशाल माधवेन्द्र पैलेस स्थित है। इस सुंदर महल को सवाई माधोसिंह ने अपनी वापसी की निशानी के तौर पर बनवाया था। इस के लगभग 200 वर्ष बाद क्यूरेटर पीटर ने इसे बेहतरीन मूर्तियों से सजाया। इस स्थान पर भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय 24 शीर्ष कलाकारों द्वारा बनाई गई 53 कलाकृतियां उपलब्ध हैं।

- ▶ नाहरगढ़ के किले के अंदर आप चाहें तो साइक्लिंग का मज़ा उठा सकते हैं।
- ▶ नाहरगढ़ के किले के अंदर स्थित जैविक पार्क में आप जंगली जानवरों की फोटोग्राफी कर सकते हैं।
- ▶ नाहरगढ़ के किले के अंदर एक रेस्टोरेंट भी स्थित है जिसमें आप स्वादिष्ट खाने का मज़ा भी ले सकते हैं।
- ▶ नाहरगढ़ किला घूमने के लिए अक्टूबर से मार्च तक का समय सबसे उत्तम होता है तब यहां का तापमान 20-24 डिग्री रहता है। ऐसे में आप आराम से किले के सौन्दर्य का आनंद ले सकते हैं।

यातायात के साधन :-

- ▶ **हवाई मार्ग:** जयपुर लगभग सभी बड़े शहरों से जुड़ा है तो यहां तक पहुंचने के लिए यातायात की कोई समस्या नहीं है। घरेलू एयरपोर्ट यहां से 7 किमी दूर है तो वहीं इंटरनेशनल एयरपोर्ट की दूरी 10 किमी है। एयरपोर्ट पर टैक्सी और बसों की सुविधा उपलब्ध है।
- ▶ **रेल मार्ग:** जयपुर, गांधीनगर और दुर्गापुरा ये तीन रेलवे स्टेशन हैं। स्टेशन पर मौजूद बसों और टैक्सी से आप आसानी से यहाँ तक पहुंच सकते हैं।
- ▶ **सड़क मार्ग:** जयपुर के लिए राजस्थान परिवहन निगम की हर तरह की बसें उपलब्ध हैं। जिन्हें आप अपनी सुविधा के हिसाब से चुन सकते हैं।





रील्स...एक व्यसन क्या हैं रील्स और शॉर्ट्स?



सुश्री रंकी गुप्ता

सहायक लेखा अधिकारी

30 सेकंड के छोटे-छोटे वीडियो शॉर्ट्स कहलाते हैं। वैसे कुछ वीडियो 2 मिनट तक के भी होते हैं। रील्स भी एक तरह के शॉर्ट वीडियो ही हैं। रील्स बनाने का चस्का टिकटॉक ऐप से शुरू हुआ था। भारत में टिकटॉक बैन होते ही लोग फेसबुक और इंस्टाग्राम पर हर तरह के रील्स डालने लगे। फनी, इन्फॉर्मेशनल, इमोशनल हर तरह के वीडियो की रील्स पर भरमार है। तभी तो लोगों को इसकी लत लग रही है।

इन रील्स को सेलिब्रिटी से लेकर आम लोग तक बना रहे हैं, लेकिन बच्चों और युवाओं में इसका ज्यादा क्रेज देखने को मिल रहा है। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर जो शॉर्ट वीडियो अपलोड किए जाते हैं उन्हें रील्स कहते हैं। वहीं यू-ट्यूब के शॉर्ट वीडियो को शॉर्ट्स (Shorts) कहते हैं।

पहले सफर करते समय लोग कुछ पढ़ते या रेडियो सुनते हुए वक्त बिताते थे। डेस्टिनेशन पर पहुंच कर लगता था कि उन्होंने इस समय को कितने अच्छे से इस्तेमाल किया, लेकिन अभी वो समय रील्स देखने में गुजर रहा है। स्कॉल करते हुए कैसे पूरा समय निकल जाता है, इसका लोगो को पता ही नहीं चलता। उन्हें रील्स की लत ऐसी लग गई है कि इससे खुद को बाहर ही नहीं निकाल पा रहे हैं। क्या बड़े क्या बच्चे अब तो बूढ़े लोगों को भी इसकी लत लग चुकी है।

आखिर क्यों है इन्हें देखने का ऐसा जुनून ?

रील्स, शॉर्ट्स में सबसे ज्यादा तादाद में कॉमेडी वीडियो हैं। बड़ों से लेकर बच्चे, बूढ़े तक इन वीडियो को देखते हैं और हंसते हैं, जिससे उनका माइंड रिलैक्स भी होता है। कई शॉर्ट वीडियो ऐसे होते हैं जिनमें फैशन और स्टाइल को फोकस किया जाता है, खासतौर से महिलाओं को। मार्केट के लेटेस्ट ट्रेंड के बारे में जानने के लिए इन्हें देखा जाता है। कुछ शॉर्ट वीडियो में लोग अजीबोगरीब एक्टिंग करते और डायलॉग बोलते हैं। जो नो डाउट फनी होता है जिसे लोगों को देखने में मजा आता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो खाने की नई-नई चीजों और घूमने की नई जगहों के बारे में जानना चाहते हैं। वो उस तरह के वीडियो से अपना ज्ञान बढ़ाते हैं।

कल्पना करें : यह एक शांत शाम है, और आपने काम या पढ़ाई से एक छोटा ब्रेक लेने का फैसला किया है। आप इंस्टाग्राम खोलते हैं और इंस्टाग्राम रील्स की अंतहीन स्ट्रीम को स्कॉल करना शुरू करते हैं। वे मनोरंजक, मजेदार और दिलचस्प हैं, और इससे पहले कि आप यह जान पाएं, आप उन्हें देखने में एक घंटा बिता चुके होते हैं। लेकिन यहाँ एक समस्या है - क्या आपको याद है कि आपने जो पाँचवीं रील देखी थी, वह किस बारे में थी? या उससे पहले वाली? अगर आप हम में से ज़्यादातर लोगों की तरह ही हैं, तो इसका जवाब शायद नहीं है। यह अल्पकालिक स्मृति चूक रील्स के हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने का एक तरीका है। आज के डिजिटल युग में रील्स, सोशल मीडिया दिग्गज द्वारा पेश किया गया लघु वीडियो प्रारूप, दुनिया भर में तूफान लेकर आया है। अपने 15 से 60 सेकंड के कंटेंट के साथ, यह हमारे दैनिक

जीवन की उत्पादकता में कमी ला सकता है, हमारी एकाग्रता में बाधा डाल सकता है और यहाँ तक कि हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है।

जब आप इंस्टाग्राम रील्स पर स्क्रॉल करते हैं, तो आप आसानी से लुभावने कंटेंट में खो सकते हैं। अंतहीन स्क्रॉल फीचर आपको बांधे रखता है, कॉमेडी, डांस और लाइफ़ हैक्स का लुभावना मिश्रण पेश करता है। यह शॉर्ट-फ़ॉर्म एंटरटेनमेंट के बुफ़े की तरह है। फिर भी, यहीं पर जाल बिछाया जाता है। इंस्टाग्राम रील्स पर अंतहीन स्क्रॉलिंग निस्संदेह नशे की लत है। इसे आपको स्वाइप करने और देखने के लिए डिज़ाइन किया गया है, अक्सर आपके इच्छित समय से बहुत ज़्यादा।

अध्ययनों से पता चला है कि सोशल मीडिया स्क्रॉलिंग कैफीन की लत जितनी ही आदत बनाने वाली हो सकती है। कंटेंट का निरंतर प्रवाह एक डोपामाइन-चालित फीडबैक लूप बनाता है, जिससे आपको नज़र हटाना मुश्किल हो जाता है। यह सिर्फ़ समय नहीं है जो आप खोते हैं; यह आपकी उंगलियों से फिसलती हुई उत्पादकता की एक भावना भी है।

इंस्टाग्राम रील का आकर्षण उनकी संक्षिप्तता में निहित है। वे छोटे, चटपटे और उन क्षणों के लिए एकदम सही हैं जब आप एक त्वरित विकर्षण चाहते हैं। हालाँकि, यह तेज़-तर्रार प्रारूप एक कीमत पर आता है। क्या आपने कभी रील देखी है और कुछ सेकंड बाद, यह याद करने के लिए संघर्ष किया है कि यह किस बारे में थी? यह कोई संयोग नहीं है, इसके बारे में कोई नहीं जानता है।

इंस्टाग्राम रील का प्रारूप निष्क्रिय देखने को प्रोत्साहित करता है, जहाँ सामग्री स्थायी छाप छोड़े बिना आप पर हावी हो जाती है। परिणाम? एक अल्पकालिक स्मृति जो रील की तरह ही क्षण भंगुर होती है। जुड़ाव की यह कमी मनहीनता की भावना में योगदान कर सकती है, जिससे आप बिना उद्देश्य के स्क्रॉल करते रह जाते हैं और आपकी संज्ञानात्मक क्षमताओं और फ़ोकस को खराब कर देते हैं।

ऐसे लोगों की कहानियाँ बहुत हैं जो रील-प्रेरित समय के चक्र में फंस गए हैं। आप एक छोटे ब्रेक के दौरान देखना शुरू कर सकते हैं, केवल एक घंटे बाद यह सोचकर बाहर आ सकते हैं कि समय कहाँ गया। यह केवल एक घंटा खोने के बारे में नहीं है; यह आपके काम, पढ़ाई या व्यक्तिगत परियोजनाओं पर व्यापक प्रभाव के बारे में है। रील्स पर बिताए गए घंटे जल्दी से बढ़ सकते हैं, जिससे आपको अपनी टू-टू सूची से निपटने के लिए कम समय मिलता है।

यह एक डिजिटल आकर्षण है जो आपकी उत्पादकता को पटरी से उतार सकता है और दिन के अंत में आपको अधूरा महसूस करा सकता है। रील्स पर बिताए गए अपने समय पर नियंत्रण पाना न केवल संभव है बल्कि आपकी उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण भी है। प्रत्येक लाइक, प्रत्येक स्वाइप, डोपामाइन के स्राव को ट्रिगर करता है - एक आनंद हार्मोन। यह वही है जो आपको और अधिक के लिए वापस लाता है, डिजिटल आनंद के अगले हिट की तलाश में। हालाँकि, यह आनंद क्षण भंगुर है, जिससे आप और अधिक चाहते हैं। डोपामाइन रोलरकोस्टर आपके मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। यह अल्पकालिक आनंद का एक चक्र है जिसके बाद और अधिक की इच्छा होती है, जो निराशा और यहाँ तक कि लत की भावनाओं को जन्म दे सकती है। समय के साथ, डिजिटल संतुष्टि के लिए यह निरंतर प्रयास चिंता, अवसाद और कम आत्मसम्मान में योगदान दे सकता है।

अक्सर नाचने-गाने वाले वीडियो वे सुकून के दो पल बिताने आते हैं। ऐसे में ये रील्स बनाने वाले अक्सर इस तरह का माहौल बना देते हैं जिससे लोगों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

आजकल बहुत बार लोग इनकी शिकायतें करते हुए मिल रहे हैं। ये बॉलीवुड या भोजपुरी के अश्लील गानों पर जिस तरह नाचते हैं वह लोगों को बहुत असहज कर देता है। ये लोग यहीं तक नहीं रुकते अपना टैलेंट दिखाने के लिए कई बार पब्लिक प्लेस पर ऐसे खतरनाक स्टंट करते हैं जिनसे कई मौकों पर लोगों को चोटें लग जाती हैं या उनकी जान को खतरा बना रहता है। इन वीडियो को देखने से कलेजा मुंह को आ जाता है।

आपने देखा होगा किसी नदी, पहाड़ या अन्य पर्यटन स्थल पर भी लोग अब परिवार के साथ आनंद लेने से ज्यादा रील्ल्स बनाते हुए ही दिखाई देते हैं इससे वे उस प्राकृतिक दृश्य के आनंद से वंचित रह जाते हैं। यहाँ तक कि धार्मिक स्थलों पर भी ज्यादातर लोग फोटो लेते हुए या रील्ल्स बनाते हुए ही नजर आते हैं।

रील्ल्स को लेकर सबसे बड़ी चिंताओं में से एक है उनकी लत लगने की प्रवृत्ति, खास तौर पर छोटे बच्चों के लिए। छोटे वीडियो की एक के बाद एक लगातार आने वाली श्रृंखला, अक्सर आकर्षक संगीत और जीवंत दृश्यों के साथ, रील्ल्स को और देखने का एक बाध्यकारी व्यवहार पैदा कर सकती है। बच्चों को स्क्रीन से खुद को दूर करना मुश्किल लग सकता है, जिससे स्क्रीन का समय बढ़ सकता है और नींद, शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक संपर्कों पर संभावित नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

अवसाद (डिप्रेशन) की वजह बन सकता है रील्ल्स व्यसन :

इस लत के चलते लोगों में जो सबसे बड़ी समस्या देखने को मिल रही है वो है डिप्रेशन। देर रात तक रील्ल्स या शॉर्ट्स देखने की वजह से बच्चे देर से सोते हैं जिससे उनका स्लीप पैटर्न डिस्टर्ब हो जाता है। फिर अगले दिन स्कूल या कॉलेज में दिनभर नींद आती रहती है। नींद पूरी न होने पर स्ट्रेस होने लगता है जिससे बीपी बढ़ने की परेशानी के साथ कई बार अवसाद (डिप्रेशन) भी हो सकता है। वीडियो देखने वाला शख्स खुद को वीडियो में मौजूद शख्स से कम्पेयर करने लगता है। वो भी उसकी तरह दिखना चाहता है, उसकी तरह जिंदगी जीना चाहता है और जब ऐसा नहीं होता, तो गुस्सा, चिड़चिड़ापन होना लाजमी है। बेकार और अपर्याप्तता की भावना पैदा होती है। इससे नकारात्मक विचार आ सकते हैं और आत्मसम्मान में कमी आ सकती है। धीरे-धीरे ये तनाव डिप्रेशन में बदल जाता है।

रील्ल्स व्यसन है सेहत के लिए नुकसानदेह : रील्ल्स की लत नींद में भी खलल पैदा कर सकती है। अध्ययनों में पाया गया है कि देर रात रील्ल्स देखना, शरीर के मेलाटोनिन (एक प्राकृतिक नींद हार्मोन) के उत्पादन को दबा सकता है जो नींद को बाधित करता है। इससे अनिद्रा, नाइट टेरर और नींद से संबंधित अन्य समस्याएं हो सकती हैं। स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताने से आंखें कमजोर होने लगती हैं। फिजिकल एक्टिविटी नहीं होती है जिससे वजन बढ़ने और मोटापे की समस्या हो सकती है।

सीमित ध्यान अवधि : रील की छोटी अवधि और सामग्री में तेज़ बदलाव बच्चों में कम ध्यान अवधि में योगदान करते हैं। सीखने के पारंपरिक तरीके और ऐसी गतिविधियाँ जिनमें निरंतर ध्यान की आवश्यकता होती है, वे बच्चों के लिए कम आकर्षक हो सकती हैं, जो रील की निरंतर स्ट्रीम द्वारा प्रदान की जाने वाली त्वरित संतुष्टि के आदी हैं। यह उनके शैक्षणिक निष्पादन और उन कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है, जिनमें अधिक ध्यान देने की अधिक आवश्यकता होती है।

सामाजिक कौशल पर नकारात्मक प्रभाव :

रील का अत्यधिक उपयोग बच्चों में सामाजिक कौशल के विकास में भी बाधा डाल सकता है। स्क्रीन के सामने लंबा समय बिताने से आमने-सामने की बातचीत कम हो सकती है और आवश्यक संचार कौशल के विकास में बाधा आ सकती है। इससे बचपन और बाद के जीवन में रिश्ते बनाने और बनाए रखने में मुश्किलें आ सकती हैं।

दुर्घटनाएं : हर कोई अपनी पसंद के हिसाब से रील्स क्रियेट करता है और उसे सोशियल मीडिया पर शेयर करता है ताकि वो वायरल हो सके और उनके फोलोवर्स बढ़ सके। कई सारे लोग अपनी जान की परवाह किये बिना स्टंट वीडियो बनाते हैं और किसी बड़े हादसे का शिकार हो जाते हैं। पानी का बहाव तेज होने से बह जाना, तेज हवा के चलते पहाड़ अथवा किसी ऊँचे स्थान से गिर जाना आदि रील्स बनाते समय हो सकने वाली दुर्घटनाओं के कुछ आम उदाहरण हैं।

कैसे पाएं इस लत से छुटकारा? रील्स निस्संदेह मनोरंजक हैं, लेकिन हमारे जीवन पर उनका प्रभाव गहरा है। यह केवल उन्हें पूरी तरह से त्यागने के बारे में नहीं है; यह सोच-समझकर उपयोग करने के बारे में है। संभावित नकारात्मक प्रभाव के बावजूद, मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखते हुए रील वीडियो का आनंद लेने के तरीके हैं। ज़िम्मेदार डिजिटल उपभोग का अभ्यास करने के विभिन्न तरीके निम्नलिखित हैं-

रील्स देखने में जो समय बिता रहे हैं, वो दोस्तों के साथ बिताएं।

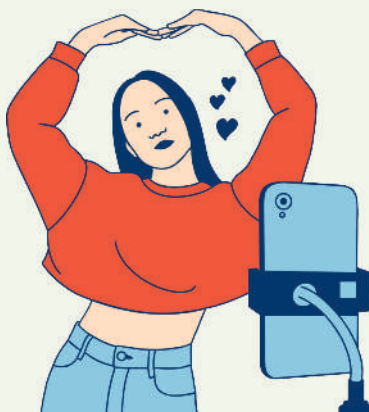
फिजिकल एक्टिविटी बढ़ाएं। लगातार रील्स देखने की वजह से बच्चे वर्चुअल ऑटिज़म (लर्निंग क्षमता कम होना, बोलना देर से शुरू करना आदि) का शिकार हो रहे हैं। जिससे उन्हें थेरपी और मेडिकल ट्रीटमेंट की भी जरूरत पड़ सकती है। उन्हें मोबाइल देना बंद करें।

अपनी भावनात्मक स्थिति और रील वीडियो के आप पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जागरूक रहें। अगर आपको नकारात्मक भावनाएँ उभरती हुई नज़र आती हैं, तो थोड़ा ब्रेक लें और ऐसी गतिविधियाँ करें जो सेहत को बढ़ावा दें, जैसे कि टहलने जाना, किताब पढ़ना या प्रियजनों के साथ समय बितायें।

रील वीडियो सहित अपने सोशल मीडिया उपयोग के लिए सीमाएँ निर्धारित करें। डिजिटल सामग्री से जुड़ने के लिए विशिष्ट समय का एक स्लॉट निर्धारित करें, और अपने दिन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इसे न बनने दें।

अत्यधिक स्क्रीन समय और सामग्री के निष्क्रिय उपभोग से जुड़े संभावित जोखिमों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए शैक्षिक अभियान शुरू करना।

रील्स मनोरंजन का एक नया रूप प्रदान करते हैं, बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर उनके संभावित प्रभाव को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। डिजिटल जुड़ाव और हमारे बच्चों की समग्र भलाई के बीच एक स्वस्थ संतुलन सुनिश्चित करने के लिए माता-पिता की जागरूकता और प्रौद्योगिकी के ज़िम्मेदार उपयोग के साथ-साथ, रील्स के बुरे पक्ष को संबोधित कर एक ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना होगा जहाँ हमारे बच्चे बौद्धिक और भावनात्मक दोनों रूप से विकसित हो सकें।





ज्ञान - जीवन की शक्ति



श्री मुकेश कुमार शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

रूप यौवन सम्पन्ना विशाल कुल सम्भवाः। विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धाः किंशुका यथा॥

रूप यौवन से संपन्न होने पर एक उच्च कुल में जन्म लेने के बावजूद भी एक व्यक्ति विद्या विहीन होने पर सुगन्धहीन फूल के समान शोभा नहीं देते। इसी प्रकार ज्ञान का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। उसके बिना मनुष्य का जीवन महत्वहीन होने लगता है। एक कहावत है, ज्ञान ही शक्ति है। उसके अनुसार ज्ञान शक्ति का कार्य करता है। एक ज्ञानी मनुष्य अपने ज्ञान के प्रभाव से विकास कर सकता है। ज्ञान से एक समाज को अच्छी दिशा में ले जाकर विकास के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। ज्ञान से आय का साधन जुटाया जा सकता है। विज्ञान संबंधी ज्ञान से मानव जीवन को और भी सुगम बनाया जा सकता है।

स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान से बीमारियों से बचाव के साथ उपचार भी किया जा सकता है। आजकल ज्ञान के समय में ज्ञान के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल है। अगर विचार किया जाए कि किसी मनुष्य में तनिक भी ज्ञान नहीं है तो ऐसा लगता है जैसे कि मानव प्राचीन समय के आरंभिक काल में पहुंच गया है, जो आज के मानव के ज्ञान की तुलना में बहुत कम ज्ञान रखता था। मानव सभ्यता में आज जो मानव उत्पत्ति में बदलाव हुए हैं, वह ज्ञान की वजह से ही हुए हैं। सामान्य शब्दों में कहूं तो यह ज्ञान की ही महिमा है कि मैंने यह लेख लिखा है और इस ज्ञान की बदौलत ही आप इस लेख को पढ़ रहे हो। ज्ञान तो सूर्य से निकलने वाली उन किरणों की तरह है जिसकी जीवन को प्रकाशमान करने की कोई सीमा ही नहीं है।

2. ज्ञान का इतिहास : ज्ञान का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव का इतिहास है। शुरुआती वर्षों में मानव अपने जीवित होने वाले अनुभवों से सीखता गया। जब पृथ्वी पर मानवीय जीवन का प्रारंभ हुआ तब वह खाने की तलाश में इधर-उधर घूमता रहता था। फिर कुछ आसपास के अनुभवों से जानकारी होने पर उसने पत्थरों से पशुओं का शिकार करना आरंभ किया। पशुओं के शिकार में उसे कई बार उसको दुर्घटना का भी सामना करना पड़ता था। उसके बाद वहीं से इन सब दुर्घटनाओं से बचने के लिए खेती करने लगा। इसके साथ-साथ उस समय में मानव ने पाषाण हथियारों का निर्माण किया और उनका उपयोग कर, उसने शिकार करना सीख लिया जिससे जीवन कुछ और आसान हो गया। इसी तरह ज्ञान को ग्रहण करते हुए मानव अपने जीवन को सुगम बनाता रहा। फिर गुफाओं में रहने लगा फिर नदियों के किनारों के आस-पास झोपड़ी का निर्माण करके अलग-अलग तरह की फसलें उगाकर भरण-पोषण करने लगा। इन सबके पीछे ज्ञान का ही प्रभाव था।

पाषाण काल में ज्ञान को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए पत्थरों पर लिखा जाने लगा। इसके साथ-साथ अलग-अलग भाषाओं का निर्माण भी हुआ। इस क्रम में गुरुकुल प्रथा का आरंभ हुआ जिसमें गुरु द्वारा शिक्षा दी जाती थी। जीवन यापन करने के साथ-साथ हमारी युद्ध कला, पाक कला और जीवन शैली को अच्छा बनाने के लिए भी गुरुकुल में शिक्षा दी जाने लगी। ज्ञान का संरक्षण करके आगे पहुंचाने के लिए साहित्य लिखे जाने लगे।

इसके साथ-साथ कविताओं और अन्य लिखे हुए साहित्य को कंठस्थ करने के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान विस्तारित करने का कार्य किया जाने लगा। उसके बाद विद्यालय, महाविद्यालय की स्थापना भी होने लगी, जिसके माध्यम से थोड़ा उच्च स्तर पर भी शिक्षा भी दी जाने लगी। आज के समय में प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ऑनलाइन माध्यम से भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। आज के समय में उपलब्ध यूट्यूब जैसे माध्यम से तो मुफ्त ही बहुत असीमित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

3. ज्ञान की शक्ति : ज्ञान की शक्ति अनंत होती है। एक ज्ञानवान व्यक्ति ज्ञान के माध्यम से दुनिया पर राज कर सकता है। ज्ञान की शक्ति से कोई भी व्यक्ति भौतिक शक्तियों को जीतने की क्षमता रखता है। यदि किसी व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त हो जाए तो वह कठिन परिस्थितियों में भी अपने विवेक का प्रयोग करते हुए अपनी सभी परेशानियों का निवारण कर सकता है। ज्ञान की शक्ति से सफलता प्राप्त की जा सकती है। ज्ञान को निरंतर अध्ययन से ही अर्जित किया जा सकता है। ज्ञान को कोई धन की तरह किसी से चुरा नहीं सकता। ज्ञान ही ऐसा होता है जिसकी कोई क्षति नहीं हो सकती। यह ज्ञान की शक्ति ही थी जिसकी बदौलत चाणक्य ने चंद्रगुप्त को भारत का राजा बना दिया। चाणक्य ने उस समय के सामान्य जनमानस से एक साधारण से लड़के को ज्ञान प्रदान करके राजा बनाया। उस समय ऐसा परंपरानुसार पीढ़ी दर पीढ़ी होता था।

चाणक्य ने वेद, उपनिषद, पुराण, और अन्य ग्रंथों का वर्षों तक गुरुकुल में अध्ययन किया और उस अध्ययन को अपने विचारों में संकलित करके "अर्थशास्त्र" नामक ग्रंथ की रचना की। चाणक्य ने चंद्रगुप्त को युद्ध कला में निपुण बनाया। उसके बाद उसने चाणक्य को किस तरह राज करना है, जिससे प्रजा राजा का सम्मान भी करें, उस तरह की कला में निपुण किया। चाणक्य ने चंद्रगुप्त को बताया कि राजा में कौन-कौन से गुण होने चाहिए। राजा के पड़ोसी राज्यों के साथ किस तरह संधि और संबंध होने चाहिए। ज्ञान की शक्ति पर गौतम बुद्ध की एक प्रसिद्ध कथा है जिसमें गौतम बुद्ध बताते हैं कि इस जीवन को सफल बनाने में ज्ञान की कितनी आवश्यकता होती है।

प्राचीन समय में एक बहुत विशाल राज्य का एक राजा था, उसको शिकार का बहुत शौक था। एक बार वो शिकार करते-करते अपने सैनिकों से बहुत आगे निकल गया और रास्ता भटक गया। वह भूखा-प्यासा इधर उधर भटक रहा था। तभी उसे एक व्यक्ति दिखाई दिया, जिससे राजा ने मदद मांगी और उसने राजा को पानी पिलाया और भोजन करवाया। इसके साथ ही उसने आराम करने के लिए राजा को अपनी झोपड़ी में भी बैठाया। राजा के पूछने पर उसने बताया कि उसका नाम रामू है और वह जंगल में लकड़ी काटकर उसको जलाकर उसका कोयला बनाकर बाजार में बेचा करता है। भोजन करने के बाद उसने राजा को उसके गंतव्य स्थान तक पहुंचने में भी मदद की। राजा रामू से बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने रामू को कहा कि अगर तुम्हें कभी जरूरत पड़े तो उसके दरबार में आना वह उसकी जरूर सहायता करेगा। कुछ वर्ष बीत गए, लेकिन बारिश की कमी से जंगल कुछ ही वर्षों में खत्म होने लगा और रामू परेशान रहने लगा। अंत में उसने राजा से मदद मांगने के लिए सोचा और वह राजा के पास गया।

द्वारपाल ने उसको भीतर जाने से रोका तो उसने बताया कि राजा को बताओ कि मैं, रामू आया है जो उनको जंगल में उस समय मिला था। राजा ने नाम सुनते ही सैनिकों को तुरंत उसको अंदर लाने के लिए कहा। राजा ने उसको नमस्कार किया और उसको उस दिन उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया। इसके बाद राजा ने उससे पूछा तो रामू ने बताया कि अब जंगल खत्म होने की कगार पर हैं। पूर्व में जो चंदन का बहुत बड़ा बागान है, वह उसको दे दिया जाए। जिससे उसका जीवन यापन हो सके। दरबारियों ने राजा के आदेश का पालन किया और रामू को चंदन का बाग दे दिया।

रामू बहुत खुश था। इसके पश्चात, छह-सात महीनों के बाद राजा का उधर से निकलना हुआ, तो राजा ने देखा कि रामू चंदन के बगीचे के बाहर चिंतित बैठा था। राजा उसके पास गया और रामू से चिंता का कारण पूछा। रामू ने बताया कि आपने जो मुझे बगीचा दिया था, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा और उसके बाद वह चुप हो गया। राजा के फिर पूछने पर उसने बताया कि महाराज अब आपका बगीचा भी खत्म हो रहा है। धीरे-धीरे यह बगीचा भी पूरी तरह से खत्म हो जाएगा। उसने फिर रामू से कहा कि तुम क्या कर रहे थे? रामू ने बताया कि मैं चंदन की लकड़ी को काटकर उसको जलाता था। फिर उसका कोयला बनाकर उसको नगर में बेच कर आ जाता था।

इस बार तुम चंदन की लकड़ी कोयला बनाकर ना बेचों, उसको ऐसे ही बेच कर आ जाओ। उसने कहा कि महाराज मुझसे ऐसे ही यह लकड़ी कौन लेगा?

राजा के कहने पर रामू बाजार में लकड़ी लेकर चला गया। जब वह लकड़ी लेकर गया तो उसने उसको दुकानदार को दिखाया कि यह लकड़ी बेचनी है। दुकानदार बहुत आश्चर्यचकित हुआ। इतनी महँगी लकड़ी उसको कहाँ से मिली चंदन की लकड़ी तो बेशकीमती होती है। उसकी सुगंध से आसपास का वातावरण महकने लगा, तो दुकानदार ने कहा, तुमको इसके ₹10 मिलेंगे। तो रामू आश्चर्यचकित होकर बोला 10 रुपये! तो दुकानदार को लगा कि शायद इसको लकड़ी का भाव पता है। उसने बोला 20 रुपये दे दूंगा रामू आश्चर्यचकित होकर फिर से बोला 20 रुपये! दुकानदार ने कहा अभी मैं इसके ₹50 से ज्यादा नहीं दे सकता हूँ और दुकानदार ने रामू को 50 रुपए दे दिए। रामू रोते हुए सोचने लगा कि राजा साहब ने मुझे कितनी मूल्यवान लकड़ी दी है। मैंने उन्हें जलाकर उनका कुछ उपयोग नहीं किया।

इस तरह कहानी का अंत करते हुए गौतम बुद्ध अपने शिष्यों को समझाते हैं कि यह शिक्षा ही है जो आपको बताती है कि आप क्या गलत कर रहे हैं, क्या सही कर रहे हैं। यह ज्ञान ही है जो आपको बताता है, क्या मूल्यवान है और क्या अनुपयुक्त है। इसलिए गौतम बुद्ध कहते हैं कि ज्ञान के प्रकाश से एक आदमी अपने अंधकार को दूर कर सकता है। ज्ञान से ही उसको जीवन कैसे यापन करना है, यह पता चलता है। ज्ञान से ही उसको अपनी खुशियाँ कैसे बढ़ानी है यह पता चलता है।

4. ज्ञान प्राप्ति के साधन: ज्ञान प्राप्ति के लिए मनुष्य जाति ने हमेशा से ही बहुत मेहनत की है। ज्ञान प्राप्ति के आज के युग में बहुत साधन हैं लेकिन भूतकाल में साधनों की बहुत कमी थी। प्राचीन काल में गुरुकुल में शिक्षा दी जाती थी परंतु उससे पहले पीढ़ी दर पीढ़ी भिन्न भिन्न साधनों से ज्ञान को पहुंचाने का कार्य किया जाता था। फिर स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा दी जाने लगी। इसके साथ-साथ आज के समय में ऑनलाइन माध्यम जिसे यूट्यूब के साथ-साथ विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।

बलिहारी गुरु अपने गोविंद दियो बताए॥

गुरु और गोविंद दोनों एक साथ खड़े हैं और सादर चरण स्पर्श करने से पहले शिष्य पूछता है। किसके चरण स्पर्श करूँ, फिर गुरु की तरह बढ़ता हुआ कहता है कि यह गुरु की वजह से ही आज मुझे गोविंद के दर्शन हुए हैं तो इस प्रकार ज्ञान प्रदान करने वाले की महत्ता तो भगवान से भी बढ़कर होती है।

ज्ञान यदि एक पिता ने 10-15 वर्ष की तपस्या से अर्जित किया है तो उसी तरह पुत्र को भी उसी तपस्या से ज्ञान अर्जित करना पड़ेगा। ज्ञान इतना पवित्र होता है कि इसको कोई अपवित्र नहीं कर सकता। इसकी कोई हानि नहीं हो सकती है यह तो जितना बाटते जाते हैं उतना ही यह बढ़ता जाता है। एक बार के लिए

आपने जो धन कमाया है तो उसकी चोरी तो हो सकती है, लेकिन ज्ञान की नहीं, ये तो वो धन है जो आपने कमा लिया, तो बस कमा लिया, इसको चुराया नहीं जा सकता है। ज्ञान के साधन के रूप में वेद, पुराण, उपनिषद, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, स्मृति ग्रंथ दर्शन, धर्म ग्रंथ काव्य नाटक आदि ज्योतिष शास्त्र में लिखे गए हैं।

5. आधुनिक युग में ज्ञान का महत्व : आज का युग, ज्ञान का युग है। आज के समय में आप कहीं पर भी जाओ आपको किसी भी चीज की ज्ञान के बिना परिकल्पना करना बहुत मुश्किल है। विज्ञान के द्वारा ही इस युग में सबसे बड़ा परिवर्तन हो सकता है। मनुष्य को जीवन यापन करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। ज्ञान के द्वारा धन अर्जित करना भी इसे जीवन यापन का एक साधन माना गया है।

आज के युग में युवा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विज्ञान व्यवसाय, चिकित्सा और अन्य जगहों पर बहुत उन्नति कर चुके हैं। इस तरह की उन्नति ज्ञान के माध्यम से ही हुई है। नई-नई तकनीक से सामान्य जीवन को बहुत आसान कर दिया है। ज्ञान के उपयोग से युवा यू-ट्यूब पर वीडियो बनाकर भी लाखों कमा रहे हैं। विभिन्न प्रकार की स्किल की सहायता से आज के समय में हर व्यक्ति अपने रोजगार को बढ़ा सकता है। इसके साथ-साथ वह आय के अन्य साधन भी बढ़ा सकता है। आज सूर्य ऊर्जा से विद्युत का उत्पादन किया जा रहा है। आज हजारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति से वीडियो कॉल की सहायता से बात की जा सकती है। यह सब ज्ञान की वजह से हो रहा है आने वाले समय में ज्ञान की बढ़ती तकनीक से चीजें और भी आसान हो जाएंगी। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बहुत रिसर्च चल रहा है। आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से मानव जीवन में निश्चित ही क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा।

6. उपसंहार- शेक्सपियर ने लिखा है : "अज्ञान ही अंधकार है" अज्ञानता एक अंधकार की तरह है और ज्ञान एक उजाले की तरह है। ज्ञान से व्यक्ति ना केवल अपने लिए कुछ अच्छा कर पाता है अपितु समाज के लिए भी अच्छा कर सकता है। अपने परिवार के लिए अच्छा कर सकता है। हर तरह की चीज में ज्ञान का अपना योगदान होता है। ज्ञान की वजह से वह परिवर्तन कर सकता है। मानव इतिहास में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। आज मानव जो भी है वह सब ज्ञान की वजह से ही है जो उसे पृथ्वी पर अन्य जीव जंतुओं की तुलना में श्रेष्ठ बनाता है। आज मानव ने कितनी उन्नति की है और उसी उन्नति के आधार पर वह आगे ही बढ़ता जा रहा है, यह सब ज्ञान और ज्ञान की वजह से ही है। अंत में यही कहना है कि हर व्यक्ति को अपना ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए और साथ ही साथ उसको ज्ञान को दूसरों को भी उस ज्ञान से लाभान्वित करते रहना चाहिए।



जीवन अमूल्य है और जीवन में सबसे अमूल्य ज्ञान है। जिसके पास ज्ञान होता है, वह सभी बाधाओं को पार कर लेता है।



सुश्री लवी आर्य

सहायक लेखा अधिकारी

द्वारका की यात्रा

सज़ा से ज़्यादा मज़ा या मज़ा से ज़्यादा सज़ा?

ये कहानी एक सत्य घटना पर आधारित है और इसके सभी पात्र वास्तविक हैं और सताए हुए हैं और कुछ पात्र धोखेबाज़ भी हैं। कहानी शुरू होती है आरजू नाम की एक लड़की से। आरजू को नई-नई नौकरी मिली जो उसे सहायक लेखा अधिकारी के रूप में अपनी मनचाही नौकरी मिल गई थी। इतने सालों की उसकी कड़ी मेहनत रंग लाई और जिसके कारण वह बहुत ही खुश हुई। नौकरी का स्थान राजकोट था और उसने अगस्त में नौकरी ज्वाइन भी कर ली थी। उसकी इच्छा अपने माता-पिता के सपनों को पूरा करने और उन्हें सैर पर ले जाने की थी। उसके माता-पिता चाहते थे कि वह गुजरात में द्वारका और सोमनाथ जाए और नौकरी मिलने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा करे।

अपने माता-पिता की इच्छा पूरी करने के लिए आरजू ने फैसला किया कि वह उन्हें आने वाले लंबे वीकेंड पर गुजरात बुलाएगी और उन्हें द्वारका और सोमनाथ घुमाएगी। उसने यह बात अपने परिवार को बताई तो वे बहुत खुश हुए। आरजू ने यात्रा की योजना बनानी शुरू कर दी। वह अपने माता-पिता को एक आरामदायक यात्रा पर ले जाना चाहती थी ताकि यात्रा के दौरान उन्हें किसी तरह की कोई परेशानी न हो। कुछ दिनों तक उसने रिसर्च की और सभी ट्रेनें और उनकी कनेक्टिविटी देखी ताकि यात्रा में कोई परेशानी न हो। उसने अपने पिता से इस योजना पर चर्चा की और उन्हें यह योजना बहुत पसंद आई। फिर शुरू हुआ ट्रेन बुकिंग का संघर्ष। उसने जल्दी से राजकोट से द्वारका, द्वारका से सोमनाथ और सोमनाथ से अहमदाबाद के लिए ट्रेनें बुक कर ली थी। सारी तैयारियाँ सुचारू रूप से चल रही थीं और सभी बहुत खुश थे।

होटल की बुकिंग करने के बाद आरजू के मन में आया कि द्वारका के दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए कैब बुक की जाए ताकि किसी को यात्रा में दिक्कत न आए और यात्रा आराम से संपन्न हो। इसी ख्याल के साथ आरजू गई सब के प्यारे सर्च इंजन गूगल पर। वहां से उसने कैब ड्राइवर्स के नंबर निकाले और रेट जानने के लिए सबको कॉल किया। अपनी सौदेबाजी के कौशल दिखाते हुए उसने एक कैब वाले को सबसे सस्ती कीमत पर मना लिया और वो इस बात से बहुत खुश हुई। वो इसी बात को अपनी सहेली अक्कू को बता रही थी और अक्कू बोली कि कैब वाला एक बार में ही मान गया मतलब और भी पैसे कम हो सकते हैं। आपको यह बता दे आरजू की सखी अक्कू मोलभाव की दुनिया की बेहताज़ बादशाह है। अब आरजू के मन में यह बात बैठ गई और उसने अक्कू को बोला कि वो अपने नंबर से कैब एजेंट को कॉल करें और मोलभाव करें। अक्कू ने उसकी बात मान ली और उसने लगाई कैब वालों को कॉल। काफी मशक्कत करने के बाद कैब एजेंट ने भी पैसे और कम कर दिए। इस बात पर इतराते हुए अक्कू ने आरजू से पार्टी मांगी और दोनों बहुत खुश हुए पर उन्हें नहीं पता था कि उनकी खुशी क्षणिक है। कैब एजेंट ने बोला कि आपको बुकिंग कंफर्म करने के लिए टोकन अमाउंट देना होगा। कैब एजेंट ने बोला कि वो वेबसाइट का लिंक भेज रहा है और उस वेबसाइट का ऐप के डाउनलोड करके आप टोकन अमाउंट जमा कर दीजिएगा और हो सके तो क्रेडिट कार्ड से करिएगा, ताकि आपको डिस्काउंट मिल जाए। आरजू ने कैब एजेंट के बताये अनुसार ऐप डाउनलोड किया एपीके से और वो सारी डिटेल्स डाल कर ट्रांजेक्शन करने जा रही थी पर तभी ट्रांजेक्शन फेल हो गया।

कैब ऐजेंट का फोन दोबारा आया कि ट्रांजेक्शन नहीं हुआ है, तो आरजू बोली कि कुछ त्रुटि है, थोड़ी देर बाद फिर से कोशिश करूँगी। तभी कुछ ऐसा हुआ जिसने आरजू की रातों की नींद उड़ा दी थी। आरजू के फोन पर एक ओटीपी आया रु.60,000 के ट्रांजेक्शन के लिए।



इतने में वो मैसेज पढ़ के कुछ समझ पाती, तभी उसके अकाउंट से रु.60,000 डेबिट हो गए और उसको इस बात से गहरा सदमा लगा। तभी उसके पास बैंक का कॉल आया कि उसके खाते से पैसे डेबिट हो गए हैं, कन्फर्म करने के लिए। उसने तभी क्रेडिट कार्ड ब्लॉक किया और बैंक में अधिक जानकारी के लिए कॉल किया। वहां उसे पता चला कि उसके साथ धोखाधड़ी हुई है क्योंकि उसने जो ऐप डाउनलोड किया था उसने उसके ओटीपी को पढ़ लिया था और जिसकी वहज से उसके रु.60,000 चले गए। उसने बैंक में शिकायत की और उनके बताए अनुसार साइबर सेल में शिकायत कर दी। उसने बैंक, साइबर सेल और पुलिस स्टेशन के चक्कर लगाए और वहां उसे बताया गया कि उसके पैसे मिलने की संभावना बहुत ही कम है। आरजू को बहुत रोना आया और उसको लगा कि इतने महीनों की बचत एक सेकंड में ही सब चली गई। अब आरजू कश्मकश में थी कि वो घरवालों को यह बात बताए या नहीं, क्योंकि वो नहीं चाहती थी कि उसके घर वाले परेशान हो और उनकी यात्रा खराब हो जाये। उसने तय किया कि वो घरवालों को यात्रा संपन्न होने के बाद ही बताएगी।

आरजू के घरवालों के आने का दिन आ गया था और वो सब कुछ भूल कर उनके साथ घूमने गई और उसने यात्रा पर बहुत मजे भी किए। मन ही मन उसे दुःख तो बहुत था पर वो अपने मम्मी पापा की खुशी देख कर सब भूल गई थी और उसने नौकरी मिलने का भगवान से शुक्रिया अदा किया।

यात्रा के अनुसार सब लोग पहले द्वारका गए और माना जाता है कि यह वह राज्य था जहाँ कृष्ण ने शासन किया था और अपनी दिव्य लीलाएँ भी की थी। द्वारका, जिसे अक्सर **"स्वर्ण नगरी" या "द्वारवती"** के रूप में भी जाना जाता है, सात मोक्ष-पुरियों (मुक्ति के शहर) में से एक है। दर्शन से प्रसन्न होने के बाद सब बेट द्वारका गए और माना जाता है कि द्वारका कृष्ण का मूल निवास स्थान है और यह क्षेत्र मंदिरों और प्राचीन खंडहरों से भरा हुआ है। उसके बाद **"नागेश्वर ज्योतिर्लिंग"** के दर्शन किए और हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार दारुका नामक राक्षस ने देवताओं और धरती के लोगों को आतंकित कर दिया था। उसे अमरता का वरदान प्राप्त था, जिससे वह लगभग अजेय हो गया था। देवताओं ने संकट में भगवान शिव से मदद के लिए प्रार्थना की। उनकी प्रार्थनाओं के जवाब में, शिव ने दारुका को हराने और शांति स्थापित करने के लिए ज्योतिर्लिंग के रूप में खुद को प्रकट किया। एक अन्य कथा में, ऐसा कहा जाता है कि नागेश्वर में ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के उस रूप का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने भक्तों को राक्षस दारुका और उसकी पत्नी से बचाने के लिए प्रकट हुआ था, जो पृथ्वी पर उत्पात मचा रहे थे। उसके बाद दर्शन किये रूक्मिणी मंदिर के जो कि द्वारकाधीश मंदिर से दो किलोमीटर की दूरी पर रहस्यमयी तरीके से स्थित है। यह मंदिर विशेष रूप से भगवान द्वारकाधीश की प्रमुख रानी श्री रूक्मिणी देवी को समर्पित है। द्वारकाधीश मंदिर में भगवान द्वारकाधीश से दूर रूक्मिणी देवी की उपस्थिति को ऋषि दुर्वासा द्वारा दिए गए श्राप के कारण माना जाता है।

द्वारका के दर्शन संपन्न करने की बाद हम लोगो की टोली सोमनाथ जी के दर्शन करने निकल पड़ी।



सोमनाथ मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से प्रथम ज्योतिर्लिंग है, जिसे भगवान शिव का सबसे पवित्र निवास स्थान माना जाता है। मंदिर कई किंवदंतियों से जुड़ा हुआ है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, मंदिर मूल रूप से चंद्र देवता चंद्र द्वारा बनाया गया था और विभिन्न आक्रमणकारियों द्वारा इसको क्षति पहुँचाने के बाद फिर से इसे कई बार बनाया गया है। ऐसा माना जाता है कि मंदिर के ज्योतिर्लिंग को पांडवों ने पुनर्स्थापित किया था और बाद में सोलंकी और चालुक्य सहित विभिन्न शासकों द्वारा इसका पुनर्निर्माण किया गया था। दर्शन से आनंदित होकर अब समय था बिछड़ने का, सब की आँखें नम हो गई थी और आरजू ने अश्रुपूरित नेत्रों से मम्मी पापा को विदा कही।

अब बात आती है आरजू की शिकायत की, उस बात को कई महीने बीत गए हैं लेकिन कार्रवाई अभी भी चालू है। लेकिन उसने उम्मीद छोड़ दी है कि उसके पैसे वापस मिलेंगे। देखिये अब आगे क्या होता है, आरजू के पैसे वापस आते हैं या नहीं, ये तो हमें नहीं पता पर द्वारका का ट्रिप उसके लिए सज़ा से ज्यादा मजेदार रहा। अंत में मुझे यही कहना है कि आरजू की यात्रा से पहले उसके साथ बहुत बुरा हुआ जिससे उसका नुकसान हो गया पर फिर भी द्वारका की यात्रा उसके लिए यादगार रही। जो कोई भी इसे पढ़ रहा है, कृपया ऐप के और किसी किसी अन्य तरह की वेबसाइट से ऐप डाउनलोड करने के संबंध में सावधानी बरतें क्योंकि कॉल पर ओटीपी पूछना अब एक पुरानी पद्धति बन गई है। तकनीक के बढ़ने और उसका गलत उपयोग किए जाने के कारण अब अपराधियों को बैंक लूटने की ज़रूरत नहीं है, न ही उन्हें कोई अपराध करने के लिए बाहर जाना पड़ता है। अब उनके पास उनकी गोद में पास वो सब कुछ है जिसकी ज़रूरत उन्हें धोखाधड़ी करने के लिए पड़ती और जो बहुत हद तक काफी भी होती है। उनके हथियार अब बंदूकें नहीं हैं बल्कि वो माउस कर्सर और पासवर्ड हैं जिनकी सहायता से वे साइबर हमला कर सकते हैं। साइबर धोखाधड़ी का दायरा बहुत व्यापक है और लगातार विकसित होता ही जा रहा है।

सतर्क रहें। सावधान रहें, क्योंकि जुर्म आपकी चौखट पर कभी भी दस्तक दे सकता है।



सुश्री लक्ष्मी रानी
सहायक लेखा अधिकारी

विशाखापट्टनम - मेरा प्रिय शहर

विशाखापट्टनम, जिसे प्यार से '**विजाग**' तथा '**सिटी ऑफ डेस्टिनी**' के नाम से भी जाना जाता है। मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह शहर भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिण-पूर्वी तट पर स्थित है और समुद्र तल, पहाड़ियाँ, चौड़ी सड़के, हरियाली तथा सांस्कृतिक धरोहर इसे विशेष बनाते हैं।

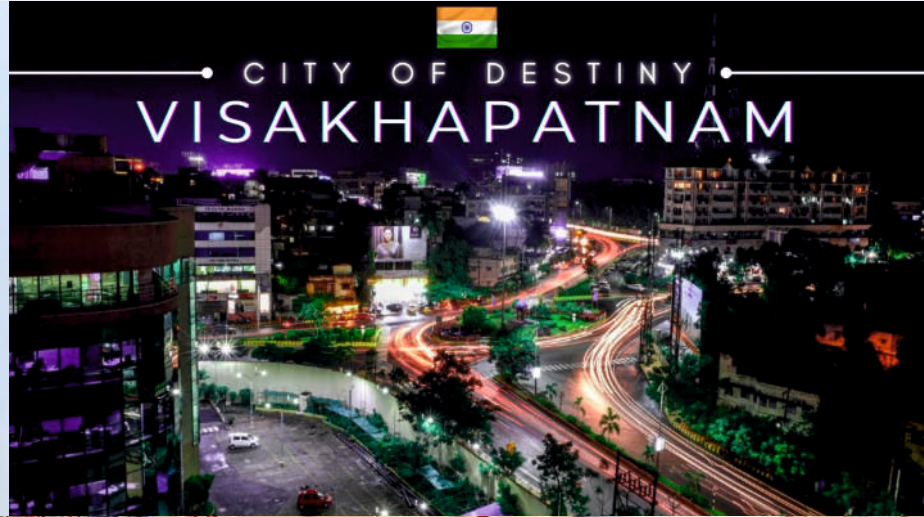
यह शहर मेरे लिए खास इसलिए है क्योंकि यहाँ पर मैंने भारतीय नौसेना में अपने करियर की शुरुआत कोरोना महामारी के दौरान की थी। यहाँ मैंने 3 साल 6 महीने तक सेवा की और इस अवधि ने मेरे जीवन को नई दिशा दी। मेरी नियुक्ति वहाँ 20 मार्च 2020 को हुई। जो मेरी पहली नौकरी और पहले लॉकडाउन की शुरुआत थी। कोरोना महामारी की वजह से वहाँ पर शुरुआती दिनों में बहुत दिक्कत हुई; ना घर था, ना खाना। फिर वहाँ कार्यरत एक कर्मचारी ने बहुत मदद की उन्होंने कठिन समय में घर तथा विद्युत केतली उपलब्ध करवाई।

मेरी सहेली नेहा और मैंने अपने अधिकांश दिन मैगी खाकर निकाले। बाद में मकान मालिक ने हमें बर्तन और सिलेण्डर भी दे दिया, जो हमारे बहुत काम आया। एक बार नौसेना में सेवा करने का मेरे बचपन का एक सपना था, जो अब पूरा हो चुका था। इस दौरान मैंने नौसेना की कार्यप्रणाली को समझा। वहाँ की सख्त ट्रेनिंग और अनुशासन को देखा। वहाँ के सैनिकों के सुबह उठने से लेकर लेकर, नियमित शारीरिक प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान, उनके लिए हर एक दिन नई चुनौती और एक सीख के रूप में था। मैं वहाँ पर सिविलियन्स थी। इसलिए ट्रेनिंग का लाभ न उठा सकी। लेकिन वहाँ के लोगों से बहुत कुछ सीखा।

अब कोरोना कम हो चुका था और मेरी और नेहा (मेरी सहेली) की घूमने की शुरुआत हो चुकी थी। हम सबसे पहले कैलाशगिरि घूमने गए। यह जगह बहुत शांत तथा ऊँचाई पर थी। यहाँ की ठंडी हवा और हरियाली मन को बहुत भाई। यहाँ पर भगवान शिव और पार्वती की विशाल मूर्ति इस स्थल की भव्यता को और बढ़ा रही थी। यहाँ पर टाइटैनिक आकार के जहाज जैसी एक जगह थी, जहां खड़े होकर एकदम टाइटैनिक जैसा दृश्य महसूस होता है, क्योंकि एकदम नीचे समुद्र किनारा स्थित था।

उसके बाद हम **रिसिकोंडा बीच** पर गए। यह समुद्र तट अपने सुनहरे रेत और शांत वातावरण के लिए जाना जाता है। यहाँ पर पानी में तैरना, रेत पर खेलना, या बस समुद्र की लहरों को घंटों देखना, इन सब में घंटों बीत जाते थे। **आरके बीच**, पर खासतौर से शाम के समय एक अलग ही अहसास होता था। सूर्योदय के समय यहाँ का दृश्य बेहद सुंदर होता है। यहाँ पर बहुत सारे म्यूज़ियम भी हैं। विशाल एक्वेरियम भी पहली बार देखा। यहीं पर पनडुब्बी संग्रहालय भी था। यह संग्रहालय भारतीय नौसेना के गौरव को दर्शाता है। जिस पनडुब्बी के रूप में संग्रहालय विकसित किया गया था वो पूर्व में भारत की नौसेना में पाँचवी पनडुब्बी के रूप में थी। इसका नाम आईएनएस कुर्सुरा (S20) था।

यहाँ के प्रमुख मंदिर तिरुपति बालाजी सीमाचलम थे। ये दोनों ही विशाखापट्टनम के बाहरी इलाके में स्थित हैं और ये मंदिर वेकटेश्वर तथा लक्ष्मी नारायण भगवान से संबंधित है। इन दोनों मंदिरों में आने पर मुझे हर बार एक नया आत्मिक बल और शांति का अहसास होता था। यह जगह और यहाँ के लोग दोनों ही मुझे अपने बहुत करीब लाते गए, न जाने कब मेरे साढ़े तीन साल वहाँ बीत गए। वहाँ से आते समय मेरी आँखों में आँसू और बहुत सारी यादें थीं। यहाँ की विविधता, सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर मेरे दिल के बहुत करीब हैं। यहाँ मेरा घर नहीं, लेकिन यहा से मेरा गहरा लगाव है और हमेशा रहेगा।





श्री अर्पित अग्रवाल
सहायक लेखा अधिकारी

कश्मीर की अविस्मरणीय यात्रा



पहला दिन (2 जनवरी 2024) : हम श्रीनगर पहुंचे और डल लेक पर शिकारों की सवारी का आनंद लिया। झील की ठंडक और उसके आसपास के हरे-भरे परिदृश्य ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। शाम को, हमने नेहरू पार्क और गुलाब बाग का भ्रमण किया, जहां रंग-बिरंगे फूलों की सुगंध मन को बहुत भायी।

दूसरा दिन (3 जनवरी 2024) : हमने गुलमर्ग की ओर रुख किया। वहाँ पर केबल कार (Cable Car) की सवारी करके पहाड़ियों के अद्भुत दृश्य देखें। बहनों ने बर्फ से खेला और माता-पिता ने वहाँ शांति का आनंद लिया।

तीसरा दिन (4 जनवरी 2024) : हम सोनमर्ग पहुंचे। यहाँ हरी-भरी घाटियां और बर्फ से ढकी चोटियाँ हमें बेहद सुंदर लगीं। हमने एक चोटी सी ट्रेक की और वहाँ के प्रकृतिक सौंदर्य की सराहना की।

चौथा दिन (5 जनवरी 2024) : श्रीनगर वापस लौटे और पारंपरिक कश्मीरी भोजन का आनंद लिया। इसके बाद हम मार्केट गए और वहाँ के हस्तशिल्प निर्मित सामान की खरीदारी की।

पांचवा दिन (6 जनवरी 2024) : घर की ओर लौटने से पहले, हमने श्रीनगर की कुछ और खूबसूरत जगहों का दौरा किया और यात्रा के हर पल को सँजोने की कोशिश की। **चार दिन की इस यात्रा ने हमारे परिवार को कश्मीर की सुंदरता और वहाँ की संस्कृति का गहरा अनुभव करवा दिया।**





एक बेचैनी सी रहती है...



श्री गौरव कुमार उदेनिया
सहायक लेखा अधिकारी

एक बेचैनी सी रहती है,
जरा उथल-पुथल सी रहती है।
कैसे मैं लिखूँ वो लफ़्जों में,
मन में जो खलल सी रहती है।

खिड़की से झाँकता रहता है,
मन घड़ी ताकता रहता है।
पल हर-पल बढ़ती रहती है,
भीतर जो हलचल होती है।

न अंत कहीं पे होता है,
न सिरा शुरू का दिखता है।
मैं कितना कुछ समझाता हूँ,
ये बेहद बेअकल होती है।

ख्याल तितर-बितर हैं सब,
सुध मेरी इधर-उधर है अब।
मैं खुद को कोसता रहता हूँ,
ये मुझको कोसती रहती है।

हलक में जैसे कुछ फंसा हुआ है,
कल और कल में आज धंसा हुआ है।
मैं कितना ही दूर भागता हूँ,
ये मेरे संग-बे-संग होती है।

मैं खुद को ढूँढता रहता हूँ,
ये मुझको खो कर हँसती हैं।
ये कश्मकश में उलझा कर मुझको,
मेरी किस्मत की लकीरें बुनती हैं।

यूँ होगा तो क्या होगा,
जो वो होगा तो क्या होगा।
जो कुछ नहीं हुआ तो क्या होगा,
ये पल हर-पल पूछती रहती है।

क्या अंत है इन सवालियों का,
कोई सिरा है इन जवाबों का।
मैं इससे भागता रहता हूँ,
ये मुझको ढूँढती रहती है।

एक बेचैनी सी रहती है...



सुश्री चाँदनी एस नारेजा
वरिष्ठ लेखाकार

माँ के जीवन का कड़वा सच

कहाँ से शुरू करूँ समझ नहीं आता कि कैसे लिखूँ कैसे बताऊँ, चलो शुरू तो करूँ मैटरनिटी छुट्टी के दौरान माँ के साथ रहता बच्चा जैसे जैसे समझना सीखते जाता है वैसे-वैसे उसको समझ आने लगती है कि मेरी जिंदगी में सबसे महत्वपूर्ण इंसान दिन के कई घंटे मुझसे दूर हो जाता है। ऐसी दुविधा का सवाल हर एक बच्चे के मन में रहता है। मैं जब छोटी थी तब मुझे भी ऐसा महसूस होता था। मेरे जैसे कई बच्चे दो हाथ जोड़कर आँखों में पानी के साथ माँ से विनती करते होंगे कि “माँ आप आज छुट्टी ले लो ना!”

थोड़े हजार रुपयों की नौकरी के लिए अपने बच्चे का गुम होता एक कीमती बचपन एक बहुत बड़े सौदे की तरह एक नौकरी करती माँ को बहुत महंगा पड़ता है। नौकरी करती हर माँ के पर्स में पैसे तो होंगे परंतु उसके साथ-साथ ढेर सारा अफसोस भी होगा कि वह समय से अपने काम पर तो पहुँच जाती है लेकिन वो ये कहीं ना कहीं जानती है कि वह प्रोफेशनल काम को पूरा करने के चक्कर में वह खुद के शरीर का हिस्सा कहीं और छोड़ के आती है।

“मेरे होने की वजह मेरी माँ है

मेरी खुशी मेरी माँ है

सब के लिए अपना अपना खुदा होता है

मेरे लिए तो खुदा भी मेरी माँ है।”

नौकरी कर रही हर माँ एक योद्धा की तरह है, जो अपने परिवार के भविष्य के लिए बच्चे के बचपन को कुर्बान करते हिचकिचाती नहीं है। बच्चों के भविष्य को अच्छा बनाने के लिए वह रोज सुबह नौकरी पर जा कर जैसे कोई घर बनाने के लिए सीमेंट की जरूरत पड़ती है, वही सीमेंट वह वहाँ इकट्ठा करती है। रोज सुबह बच्चों से दूर होकर वह अपने हृदय पर पत्थर बांध कर कितना वक्त अपने काम में बिता देती है। वर्षों से की जी तोड़ मेहनत करके वह अपने परिवार के लिए एक ऐसा मजबूत महल खड़ा करती है जिसमें आई हुई दरारें बच्चे को नहीं दिखती है।

माँ जानती है कि जब भविष्य में इमारत ऊंची बनानी होगी तो बच्चे जब छोटे होंगे तभी थोड़ा ज्यादा

काम और मेहनत करनी पड़ेगी। रास्ते में खड्डा खोदती कोई एक मजदूर माँ हो या कोई सह-संचालन महिला कर्मि माँ, सभी माँ एक जैसी ही होती है। मजबूत इरादे और पक्के मनोबल की आड़ में वह मातृत्व की भावना को जाने कहीं छुपा ही देती हैं और वह उसे छुपाने में काफी हद तक सफल भी रहती है। सब के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए और खुद से अपने छोटे से बच्चे को अलग करके पैसे कमाने वाली हर माँ को शत-शत सलाम मिलना ही चाहिए। मेरा सभी माँ को बहुत बहुत नमन।

माँ का काम कभी खत्म ही नहीं होता बस जिम्मेदारियाँ बदलती रहती है। पूरा दिन बच्चों से दूर रहने का पछतावा हर माँ को पिंघला देता है। एक हाथ में बच्चे को और दूसरे हाथ में तलवार पकड़कर सीना तानकर जिंदगी का सामना करने की हिम्मत रखकर बहादुरी का परिचय देती है। इस काम के लिए आपको कोई परमवीर चक्र तो नहीं मिलने वाला परंतु आपके इस बलिदान से परिवार में बनी समृद्धि के लिए सभी माँ के लिए नतमस्तक होते हैं, वंदना करते हैं। हर माँ द्वारा कमाई गई करेंसी बाजार के रुपए से ज्यादा मजबूत होती हैं।

“दुनिया में एक माँ ही ऐसी शख्स है, जो अकेले सब के किरदार निभा सकती है, लेकिन माँ का किरदार कोई और नहीं निभा सकता।”

अंत में मैं इतना ही कहूँगी कि माँ का जीवन पूरे परिवार और बच्चों के लिए ही समर्पित होता है और अनवरत चलती रहने वाली इन जिम्मेदारियों में माँ का अस्तित्व जैसे उगते और डूबते सूरज की तरह होता है, जैसे सूरज अपने उगने के समय उग जाता है और डूबने के समय डूब जाता है। माँ का जीवन कहाँ शुरू होता है और कब और कहाँ खत्म हो जाता कभी पता ही नहीं चलता है। वह अपना पूरा जीवन पहले अपने मायके में, बाद में ससुराल में और ससुराल में तो वह इतने सारे रिश्तों से और अपने बच्चों के साथ जुड़ कर वह खुद इतनी बड़ी कब बन जाती है कि उसे खुद को पता ही नहीं चलता है। आज तक माँ की जगह न कोई ले सका है और ना ही कोई ले सकता है।

**“माँ खुद नहीं सोयी हमें सुलाया
हर कहानी और किस्से से हमें हंसाया
हर मुश्किल और परेशानी को गले से लगाया
और हमें दुनिया में कुछ अलग
तरीके से जीना सिखाया।”**





समय और सफलता



श्रीमती निरमा कुमारी गुप्ता
क. हिन्दी अनुवादक

“समय एक उपहार है जिसे हम में से अधिकांश लोग इसे हल्के में लेते हैं”

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा कही गई यह पंक्ति समय के महत्त्व को और भी उजागर करती है। समय हमारे जीवन में एक अनुपम संसाधन है। समय इसलिए अनुपम है क्योंकि इसका न उत्पादन किया जा सकता है और न ही इसे नियंत्रित किया जा सकता है। दुनिया में आए हर मनुष्य के पास निश्चित मात्रा में समय होता है। यह वह धन है जो किसी के पास ज्यादा तो किसी के पास कम भी होता है। समय की सीमा बड़े या छोटे धनी या गरीब का भेद नहीं करती हैं।

जीवन में ऐसी अनेक क्रियाएं व वस्तुएं हैं जो केवल उसी समय मूल्यवान होती हैं जब वे उचित समय पर हो। **“का वर्षा जब कृषि सुखानी”** वर्षा का समय पर होने का महत्त्व किसान से बेहतर कोई नहीं समझ सकता है। इसी तरह मरीज को उचित समय पर दिया गया इलाज उसे नया जीवन दे सकता है। विद्यार्थी के लिए परीक्षा के दौरान दिया गया निर्धारित समय उसके लिए बहुत मूल्यवान होता है, जो उसके जीवन की दिशा निर्धारित करता है।

हमारे जीवन में कुछ ऐसी भी घटनाएँ होती हैं, जिनका समय निश्चित है। हम चाह कर भी उसे आगे या पीछे नहीं कर सकते हैं, जिसे हम नियति का नाम देते हैं। हमारे जीवन में ऐसा समय भी आता है, जिसे हम चाहते हैं कि जल्दी बीत जाए, पर न चाहते हुए भी हमें उस समय को झेलना ही पड़ता है, क्योंकि बहुत सी ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं, जिनका उनका अपना एक समय निर्धारित होता है।

इसी समय को अगर हम सफलता से जोड़े, तो यह हमारे जीवन के हर पहलू से जुड़ जाता है। समय का चक्र इतना बलवान है, जो हमारे व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों जीवन को प्रभावित करता है। समय के महत्त्व की बात करने से हमारा दिमाग केवल पेशेवर जीवन से जोड़ता है पर वास्तविकता तो यह है कि समय जितना हमारे पेशेवर जीवन में महत्वपूर्ण है उतना ही व्यक्तिगत जीवन में भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि समय का महत्त्व हमें अनुशासनात्मक बनाता है, जो हमारे व्यक्तिगत जीवन में खुशहाली लाता है। व्यक्ति के जीवन में सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह समय का कितनी कुशलतापूर्वक प्रबंधन करता है। सफलता के परिदृश्य में सर्वप्रथम हमें अपना लक्ष्य निर्धारित कर समय का प्रबंधन करना चाहिए और उसी रास्ते पर चलते रहे तो एक न एक दिन सफलता अवश्य कदम चूमेगी। समय के कुशलतापूर्वक प्रबंधन से ही लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। आलसी और भाग्य के भरोसे रहने वाले लोग कभी भी समय के महत्त्व को नहीं समझ पाते। ऐसे आलसी और भाग्य के भरोसे वाले लोगों के लिए “अब पछतावे होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत” जैसी कहावतें बिल्कुल सही ढंग से चरितार्थ होती है।

जिसने समय को पहचाना उसी ने जीवन को जाना। समय का सदुपयोग ही सही मायने में सफल इंसान की पहचान है। हमने जितने भी महान हस्तियों को जाना सब ने समय के सदुपयोग से ही सफलता हासिल की और सभी संसार में दूसरों के लिए एक उदाहरण के रूप में अपनी छाप छोड़ गए।

**काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में प्रलय होगी, बहुरि करोगे कब॥**

कबीरदास जी का यह दोहा जीवन में सफलता के लिए समय के सदुपयोग को दर्शाता है। आज के दौर में हम ज़्यादातर समय खुद के मनोरंजन में गवां देते हैं और जिसमें हमारे हाथ से यह मूल्यवान समय भी चला जाता है, जिसके सदुपयोग से हम अपना तथा समाज का कल्याण कर सकते हैं। अतः जिस तरह हम धन की बचत कर अपने भविष्य में लगाते हैं, उसी तरह यदि हम समय की बचत कर उसका सही जगह उपयोग करें, तो हम अपने भविष्य को स्वर्ण अक्षरों से लिख सकते हैं।



दोस्ती



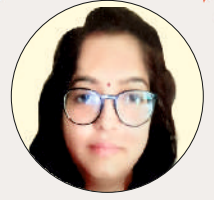
सुश्री कविता कुमारी गुप्ता
बहन श्रीमती निरमा कुमारी गुप्ता

दुनिया का सबसे हसीन रिश्ता,
ऐ दोस्ती! मैंने तुझे ही माना।
मैंने भी इस बंधन में बांध,
खुद को खुशनसीब है जाना।।

ऐ मित्र ! तूने ही तो मेरी जिंदगी को अमृत सा बनाया,
सब से ज्यादा लम्हा तो मैंने तेरे संग ही बिताया।।
खट्टी-मीठी अमिट स्मृतियों से मेरे जीवन को तूने ही सवारा,
हर शूल को भूल जाने का तरीका तो तूने ही सिखाया।।

हर तनाव को छोड़ बिंदास जीने का सलीका तुझसे ही तो जान पाया,
हर मुसीबत से लड़ने का हौसला मैंने तुझसे ही तो पाया।।
अपनी हिम्मत भरी बातों से मेरे जीवन को सफल तूने ही बनाया,
जब भी मैं तुझसे मिली मैंने खुद को अपने बचपन में पाया।।

ऐ मित्र ! तूने ही तो मेरी जिंदगी को अमृत सा बनाया...
ऐ मित्र ! तूने ही तो मेरी जिंदगी को अमृत सा बनाया...



एक भयंकर हादसा और गर्मी के मौसम में आग लगने के अनेक कारण

श्रीमती नीलम

(पत्नी श्री बिजेंद्र बेरवाल, व.हिंदी अनुवादक)

कहते हैं कि “इंसान का जीवन एक पानी के बुलबुले की तरह होता है, जब तक चल रहा है, तब तक चल रहा है, और फिर अचानक ही कुछ ऐसा हो जाता है कि वही पानी का बुलबुला रुपी इंसानी जीवन कब बस्ट (खत्म) हो जाए पता ही नहीं चलता है”। प्राचीन काल से आज तक ध्यान से देखे और समझे तो इस दुनिया में आने का तरीका तो भगवान ने सिर्फ एक ही बनाया है, जैसे कि आज भी इंसान को जन्म तो माँ की कोख से ही लेना पड़ता है, फिर चाहे ऐसी कोई बात जीव-जंतुओं के मामले से संबंधित हो या इंसानी जिंदगी से, सभी को इस दुनिया में आने के लिए माँ की कोख का ही सहारा लेना पड़ता है इसके साथ ही यह भी कहा जाता है कि माँ का दर्जा तो इतना बड़ा बताया गया है कि स्वयं भगवान जी, जो सारी सृष्टि के रचयिता माने जाते हैं, उनको भी इस धरती पर आने के लिए माँ की कोख का सहारा लेना ही पड़ा, चाहे वह प्रभु श्री राम हो, या प्रभु श्रीकृष्ण। इन अवतारी शक्तियों ने भी माँ के गर्भ से जन्म लेकर माँ की महानता को और भी महान बना दिया है।

लेकिन दूसरी ओर देखें तो आज की आधुनिक कलपुर्जों की दुनिया जिसे हम कलयुग के नाम से भी जानते हैं, इंसान के इस दुनिया से जाने के अनेक तरीके भी बन गए हैं जैसे कि, कोई व्यक्ति अपने जीवन की किसी भी समस्या से, जो सुलझने का नाम ही नहीं ले रही होती है चाहे पैसे संबंधी हो या कोई बीमारी संबंधी या किसी और विषय से संबंधित, से बहुत ज्यादा दुखी होकर आत्महत्या तक कर लेता है और अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेता है तो कोई किसी के द्वारा हत्या करके मार दिया जाता है। कोई पानी में डूबने, डूबाने या तैरना आदि नहीं जानने के कारण ऐसी घटनाओं का शिकार हो जाता है तो कभी कोई या तो अपनी किसी गलती के वजह से या कभी-कभी किसी दूसरे के वजह से या कभी-कभी अपने आप ही आग लगने वाली घटनाओं का शिकार हो जाता है और न चाहते हुए भी व्यक्ति मृत्यु के अनेक उपरोक्त कारणों के कारण काल के गाल में समा जाता है। कारण चाहे जो भी हो एक ओर जहां व्यक्ति को हर समय कार्य करते समय सावधानी बरतने की जरूरत है जोकि हमेशा से ही व्यक्ति की सुरक्षा हेतु आवश्यक रही है और रहेगी भी, तो वहीं दूसरी ओर प्रभु से भी यही विनती है कि व्यक्ति के जीवन में इन कष्टकारी मृत्यु संबंधी हालात कभी भी न बने। एक संपूर्ण जीवन जीने का बाद और अपने जीवन में सभी जिम्मेदारियों से संबंधित कार्यों से मुक्त होकर ही वृद्ध अवस्था में ही व्यक्ति जाता हुआ अच्छा लगता है।

लेकिन, इन सभी तथ्यों के बीच आज के इस समय में किसी भी समय कोई भी घटना घटने की एक परंपरा भी बनती जा रही है, जो निरंतर इस संसार में प्राणियों के बीच अचानक ही किसी भी समय किसी भी कारण से घटने वाली घटनाओं के घटने के कारण बनी हुई है, उसको भी झुठलाया नहीं जा सकता है।



उपरोक्त घटनाओं से संबंधित यदि हम मृत्यु के अनेक कारणों में से अगर जहाँ तक आग लगने की घटनाओं की बात करें तो इस प्रकार की घटनाओं के भी अनेक कारण होते हैं या हो सकते हैं। इस तरह की घटनाओं में वृद्धि भी अधिकतर हमें गर्मी के मौसम में ही देखने को मिलती है। जैसे कि एक तो वातावरण में पहले से ही सूरज की इतनी तपिश होती है कि गर्मी पड़ने वाले महीनों में तो व्यक्ति की जान पर ही बन आती है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है वैसे-वैसे ऐसा लगने लगता है कि मानो कि इसी गर्मी ने हर चीज को इतना गर्म कर दिया है कि उसकी वजह से हर चीज तपती हुई नजर आती है। किसी भी चीज पर अगर गलती से भी हाथ लग जाए तो दिन में ही तारे नजर आने लगते हैं। तापमान में निरंतर वृद्धि होने के कारण अब तापमान 50 डिग्री को छूने लगा है। गर्मी का मौसम ऐसा होता है कि हर कोई इस बढ़ती गर्मी से चाहे कोई बच्चा हो, जवान हो, बूढ़ा हो, या कोई जीव-जंतु हो सभी का बुरा हाल हो जाता है। एक तो भयंकर गर्मी और ऊपर से उसका हीट-वेव के रूप में लगातार बने रहना गर्मी में बेतहाशा वृद्धि कर देता है, ऐसे में पानी की कमी और उस समय बारिश का ना होना माहौल को और भी गंभीर और कष्टकारी बना देता है और उसी कारण सभी का बुरा हाल होने लग जाता है। इसी तरह, दिन के साथ-साथ रातों में भी तापमान इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति को न तो दिन में चैन और न ही रात में आराम मिल पाता है।

बढ़ती गर्मी के ऐसे ही समय में आग लगने की घटनाएं भी बढ़ने लगती हैं, इनमें से कुछ तो मानव द्वारा गलतियों के कारण घट जाती हैं, जैसे कि राजकोट में उक्त गेमिन जॉन में घटना एक छोटी सी वेल्डिंग की घटना के कारण घट गई। ये आग लगने की एक ऐसी घटना थी जो मानव की लापरवाही का एक उदाहरण कही जा सकती है जो दिनांक 25-05-2024 को राजकोट में भी घट गई, जो अखबारों में छपी खबर के अनुसार वहाँ एक वेल्डिंग संबंधी की जा रही कार्रवाई को लेकर घटित हुई। जिसमें बहुत लोगों की दुखद मृत्यु हो गई, जिसमें बच्चे, युवा सभी थे। उस दिन सारा राजकोट शहर दुखी था और लोगों में इस घटना को लेकर बहुत गुस्सा और रोष व्याप्त था, कि कैसे और क्यों इस प्रकार की घटना गेमिन जॉन में घट गई।

गर्मियों का मौसम होने के कारण स्कूलों में छुट्टियां चल रही थी, रविवार का दिन था, हर बार की तरह बच्चों जैसे कि हर बार अपने अपने अभिभावकों से कहीं बाहर ले जाने के जिद्द करते ही हैं, तो इसी प्रकार, उस दिन भी बच्चों ने गेमिंग जॉन में जाने की बात अपने अभिभावकों के सामने रखी होगी जिसके कारण उनके माता-पिता ने भी उनकी बात को मानते हुए उन्हें वहाँ ले गए होंगे और जैसा कि अमूमन होता भी यही है कि ऐसा कोई सोचता भी नहीं है कि कहीं बाहर अकेले या बच्चों के साथ जाए और वहाँ कहीं कुछ ऐसी कोई घटना घट जाए, जो उस समय कल्पना से भी परे हो, अगर घट जाए तो घटना घटने पर सिवाय दुख और पछतावे के हाथ कुछ नहीं आता और उस दिन भी ऐसा ही कुछ हो गया जो हर किसी की कल्पना से भी परे था।

इस प्रकार की घटनाओं में जहाँ एक ओर आग तो अपना भयानक रूप दिखाती ही है, तो वही दूसरी ओर धुएं के बढ़ने से लोगों का दम घुटने के कारण भी लोगों को सांस लेने में कठिनाई होती है, जिससे उनका दम घुटने लगता है और एक समय के बाद मृत्यु हो जाती है। फिर ऐसे में हर किसी को अपनी जान बचाने की लगी होती है, तो हर कोई इधर-उधर भाग रहा होता है, जिसके कारण सारे माहौल में भगदड़ सी मच जाती है, और ऐसे में लोग आपस में ही टकराने लगते हैं और बाहर निकलने हेतु रास्ता नहीं मिलने के कारण भी

मृत व्यक्तियों का आंकड़ा बढ़ जाता है। ऐसी दुर्घटना में बाहर निकलने वाले रास्ते भीड़ से एकदम भर जाने के कारण भी दुर्घटना एक विकराल रूप ले लेती है, क्योंकि जैसा कि हम सभी यह जानते और मानते भी हैं कि इस दुनिया में सबसे ज्यादा हमें अपनी जान ही प्यारी होती है, तो ऐसी स्थिति में सभी अपनी जान बचाने के लिए केवल और केवल बस उस स्थिति से बाहर निकलने की होड़ में लगे रहते हैं कि कैसे भी करके हमारी जान बच जाए और बात भी सही है क्योंकि ऐसे में किसी भी व्यक्ति को कुछ सूझता ही नहीं है, दिमाग एक तरह से खाली सा हो जाता है और दिमाग में बस एक ही बात आती रहती है कि कैसे भी करके बस हमारी जान बच जाए, कैसे भी करके हम यहाँ से सुरक्षित रूप से बाहर निकल जाए। इसी तरह की घटना बहुत साल पहले दिल्ली में उपहार सिनेमा हॉल में फिल्म बार्डर की रिलीज होने पर इसके दूसरे शो के दौरान घट गई थी। उस दुर्घटना में भी बहुत लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी।

इसी तरह गर्मी के मौसम की ही यदि हम और बात करें तो और भी बातें सामने आती हैं जैसा कि हम सभी को इस बढ़ती गर्मी के मौसम से निजात पाने हेतु पंखे, कूलर और एसी का सहारा लेना पड़ता ही है, लेकिन अब गर्मी का आलम यह हो चला है कि अब पंखे, कूलर से काम नहीं चलता है, बल्कि आजकल की गर्मी से राहत पाने के लिए ए.सी. का सहारा लेना ही पड़ता है, अब जोकि अब हर व्यक्ति और हर घर की जरूरत बनता जा रहा है। अब हम कहीं भी नजर उठाकर देख ले, लगभग हर घर में एसी लगा हुआ तो मिल ही जाएगा अब ये सब चीजें बाजार में पहले से कहीं अधिक उपलब्ध भी हैं और कंपनियों द्वारा ई.एम.आई. पर चीज ले जाने वाली आदि योजनाओं से ये सब चीजें खरीदना आसान भी हो गया है, इसलिए ये गर्मी से राहत दिलाने वाली वस्तुएँ पहले की तुलना में आजकल हमारे घरों में अधिक नजर आने लगी हैं। इन्हीं ए.सी. की बढ़ती संख्या के कारण और निरंतर चलने के कारण भी आग लगने की घटनाएँ भी होने लगी हैं, कहीं चलते-चलते गर्म होने के कारण फट जाते हैं तो कहीं-कहीं गर्म होने के कारण इन उपकरणों में शार्ट-सर्किट हो जाता है, जिसके कारण भी आग लग जाती है।

आग लगने की घटनाओं में एक और प्रमुख कारण सिलेंडर का फटना भी बताया जाता है। कई बार तो हमारे घरों में रखे खाने बनाने वाले गैस सिलेंडर भी गर्मी और कई बार हमारी ही लाहपरवाही के कारण फट जाते हैं और तो कई बार बड़े-बड़े उद्योगों में लगे सिलेंडर भी निरंतर चलने और भयंकर गर्मी पड़ने के कारण या तो फट जाते हैं या उनमें आग लग जाती है, जैसे कि दिनांक 13-06-2024 को कुवैत के मंगफ शहर में एक इमारत में एक चौकीदार के कमरे में रखे गैस सिलेंडर में धमाके के कारण आग लग गई, जिसमें 50 लोगों की दुःखद मृत्यु हो गई, जिसमें 40 भारतीय भी बताए गए थे। इसी तरह गाडियों में भी आग लगने की घटनाएँ हो जाती हैं, उन घटनाओं का भी प्रमुख कारण वाहनों का निरंतर चलना और ऊपर से तापमान में वृद्धि, दोनों बातें ही आग लगने की घटनाओं के कारण बन जाती हैं।

आग लगने संबंधी घटनाओं में हम कुछ और बातें भी शामिल कर सकते हैं जैसे कि कई बार खबरें आती हैं कि पटाखे बनाने वाली फैक्ट्री में भी किसी की भी गलती की वजह से आग लग जाती है, जिसमें जान-माल का बहुत ही नुकसान होता है। इस प्रकार, की घटनाओं में गर्मी भी कई बार इजाफा कर देती है, क्योंकि समय-समय पर त्यौहारों के समय में मांग बढ़ने से सामान की मांग भी बढ़ जाती है और जिसकी वजह से वहाँ दिन-रात काम चलता रहता है और ऊपर से बढ़ती गर्मी के माहौल और व्यवसाय की ऐसी ही गर्म प्रकृति होने के कारण फैक्ट्री का सारा माहौल बहुत ही गर्म हो जाता है, जिससे कि ऐसे में वहाँ भी आग

लगने से घटित होने वाली घटनाओं की संभावनाएं बढ़ जाती हैं और आग लगने के कारण दुर्घटना एक भयंकर अंजाम के रूप में सामने हमारे सामने आती है।

इसी प्रकार, जहाँ प्लास्टिक के सामान वाली फैक्ट्री में, कपड़ा फैक्ट्री और लकड़ी के काम संबंधी आदि कोई भी फैक्ट्री होती है तो वहाँ भी गर्मी के मौसम में आग लगने की संभावनाएं बहुत ही मानी और समझी जाती है, ऐसी जगहों पर भी आग से बचने संबंधी सभी बातों की जानकारी होनी नितांत आवश्यक है। इसलिए, मौटे-मौटे तौर पर एक बात तो अवश्य सामने आती है कि उपरोक्त सभी कारणों से होने वाली मृत्यु बहुत ही भयंकर और दुखदायी होती हैं। इसके अलावा, गर्मी के मौसम में बढ़ती गर्मी की वजह से और इंसानी लाहपरवाही के भी आग लगने की अनेक घटनाओं के कारण माने जा सकते हैं। इसमें कुछ तो मानव द्वारा की गई गलतियों के कारण ही होते हैं जैसा कि इस संबंध में राजकोट की घटना कही जा सकती है, और कई बार बढ़ती गर्मी के कारण सिद्ध हो जाते हैं।

इसलिए, हम अपने स्तर पर जिन आग लगने वाली घटनाओं के बनने वाले कारणों को रोक सकते हैं तो उन्हें तो कम से कम रोका ही जाना चाहिए या आग लगने संबंधी घटने वाली किसी भी घटना को ध्यान रखते हुए कार्य करना चाहिए जिससे कि इन घटनाओं को रोका जा सके, जैसे कि इस प्रकार के कार्य करते समय हम अलर्ट रहना चाहिए, जिससे कि हमारा कार्य भी सही से संपन्न हो सकेगा और किसी भी आग लगने संबंधी भयंकर घटना के शिकार होने से बच भी जाएंगे। गर्मी में निरंतर चलने वाले ए.सी. को समय-समय पर विराम देना चाहिए, जिससे कि वे भी ज्यादा गर्म न हो, और कोई शार्ट-सर्किट जैसी घटना भी न घटे और ऐसी घटनाओं से भी बचा जा सके। निरंतर चलने वाली गाड़ियों के इंजनों को भी समय-समय पर और जरूरत पर कुछ-कुछ देर के लिए बंद करके उन्हें भी विराम देना चाहिए, जिससे उनको भी थोड़ी राहत मिलेगी और इससे इंजन भी फिर से कार्य करने हेतु कुछ अच्छी स्थिति में तैयार हो सकेंगे और ज्यादा गर्म भी नहीं होंगे, परिणामस्वरूप, आग लगने की सभी संभावित स्थितियों से से बचा जा सकेगा।

इसी तरह, घरों, गोदामों में काफी समय से प्रयोग में नहीं आ रहे सिलेंडरों के साथ साथ बड़े-बड़े उद्योगों में लगे बड़े-बड़े सिलेंडरों की भी प्रयोग किए जाने हेतु समय-समय पर जांच-पड़ताल करते रहना चाहिए, जिससे कि किसी भी प्रकार से सिलेंडर ना फटे और हम सब भी ऐसी घटनाओं के शिकार होने से बचे रहें। किसी भी गेमिन जॉन जैसे घटनाओं की बात करें तो जहाँ भी अति संवेदनशील सामान (जैसे कि कपड़ा, रैक्सिन, या कोई ज्वलनशील पदार्थ/ वस्तु पड़ी हुई है तो वहाँ अग्नि संबंधी वेल्डिंग कार्य या कोई किसी और प्रकार का अन्य कार्य जिसमें अग्नि का प्रयोग होना हो या किया जा रहा हो तो ऐसे मामलों में भी किए जाने वाले कार्य करते समय अत्यधिक सावधानी बरतने की जरूरत है, ताकि किसी भी अनहोनी से बचा जा सके) या ऐसे स्थलों पर आग संबंधी कार्य किए ही नहीं जाने चाहिए। समय-समय पर ऐसे जगहों की भी जांच-पड़ताल आवश्यक है, उनका ऑडिट होना चाहिए जिससे कि खामियों का पता चल सके और ऐसी सभी प्रकार की दुखद घटनाओं को घटने से रोका जा सके। अग्नि शमन यंत्र ऐसी जगह स्थापित होने के साथ-साथ वे हर समय आग लगने की स्थिति में उपयोग हेतु सदैव ही तैयार रहने चाहिए और उस संयंत्र के साथ उसके प्रयोग संबंधी पूर्ण जानकारी क्षेत्रीय भाषा के साथ साथ हिन्दी और अंग्रेजी में भी लगी होनी चाहिए, ताकि कोई सामान्य व्यक्ति भी ऐसी स्थिति में उस संयंत्र का प्रयोग कर सके। अग्नि शमन विभाग द्वारा विशेषकर अत्यधिक गर्मी पड़ने के समय में जब ऐसी आग लगने वाली घटनाएं घटित होने की संभावना

अधिक प्रतीत होने लगे तो समय-समय पर ऐसी घटनाओं से बचने हेतु, स्कूलों कॉलेजों और सार्वजनिक स्थानों पर ज्यादा भीड़-भाड़ वाले इलाकों में लोगों को जागरूक करने हेतु आग बुझाने संबंधी अधिक से अधिक मोक ड्रिल आदि की जानी चाहिए ताकि लोग इसको प्रत्यक्ष रूप से देखें समझे और यदि कहीं आग लगाने जैसे स्थिति उत्पन्न होती है तो उससे निपटने हेतु तैयार रह सके साथ ही आजकल चल रहें संचार के विभिन्न माध्यमों से जानकारी बताई जानी चाहिए जिससे अधिक से अधिक लिखित और व्यावहारिक दोनों प्रकार की जानकारी जनमानस के ध्यान में लाई जा सके।

पर्यावरण पर भी ध्यान देते हुए और इसे और हरित बनाने में भी योगदान देने का प्रयास करना चाहिए, ताकि पेड़ों की संख्या में वृद्धि होगी और जिससे हरियाली बढ़ेगी जिसके साथ-साथ पर्यावरण में भी गर्मी का कुछ तो प्रकोप कम होगा ही और इसी बढ़ती गर्मी से सभी को राहत मिल सकेगी। इसलिए, अंत में कहा जा सकता है कि गर्मी में बढ़ती आग लगने जैसे वाली घटनाओं को रोकने या उनसे निपटने हेतु हर समय तत्पर रहने के साथ-साथ उससे संबंधित सभी बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जो आग लगने के कारण बनते हैं। इससे अगर पूरी तरह से तो नहीं, लेकिन कुछ हद तक ऐसी घटनाओं को रोका ही जा सकता है या जा सकेगा।

भारत का सिरमौर - कश्मीर



श्री सोमदत्त यादव
क. हिन्दी अनुवादक



कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग, दिव्य सौंदर्यधाम या फिर पूर्व का स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है। गगन स्पर्शी हिमाच्छादित गिर श्रृंखला, सघन वनराजी बहते झरने, जल से भरे विशाल तालाब, रंगबिरंगे पुष्पों के उद्यान, विविध फलों की मधुर उर्वरा भूमि कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग भी है।

भारत माता के मुकुट के समान इस प्रदेश की सैर यादगार एवं दिल को छू लेने वाले अविस्मरणीय पलों से भरी रही जिसे कागज कलम से बयां करना भी मुश्किल है। इस प्रदेश के प्रत्यक्ष रूप से रूबरू होना, महसूस करना ही आनंदायक अनुभव है।

भारत के मुकुटमणी कश्मीर प्रदेश के उत्तर पूर्व में चीन की सरहद, पश्चिम में पाकिस्तान, एवं दक्षिण की ओर हिमालय व पंजाब के प्रदेश हैं। पूरे साल भर पानी से बहती नदियाँ जैसे चिनाब, लिडर, सिंधु, शिगार, झेलम इत्यादि कश्मीर के सौंदर्य में बढ़ोतरी करके पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। कश्मीर पर्वतीय प्रदेश होने के कारण वहाँ पर्वतीय भाषा एवं उर्दू का प्रयोग किया जाता है।

यात्रा में जाने से पहले हमें पूरी तरह प्लानिंग करनी पड़ती है। कुछ महीने पहले ग्रुप में शामिल व्यक्तियों की जानकारी तथा यात्रा किस माध्यम से करनी है? उसके मुताबिक आने-जाने की टिकटें, कितने दिन ठहरना है? सभी बातों को ध्यान में रखकर टिकटों का आरक्षण करवा लेना अच्छा है। जिस जगह पर जाना है उस जगह के होटल बुकिंग करवा लेना भी जरूरी है। आज के समय में इन्टरनेट के जरिए ऑनलाइन बुकिंग सिर्फ टिकटों या होटल की ही नहीं और भी दर्शनीय स्थल या अन्य बुकिंग करवा सकते हैं। जो हमारे सफर के दौरान एवं दर्शनीय स्थल पर उपयोगी बनता है। साथ में समय की बचत भी होती है। सफर के दौरान आवश्यक सामान जैसे गर्म ऊनी कपड़े, रेनकोट, हैट, चैन, डायरी, सामान इत्यादि अवश्य रखें। संभव हो तो असली ज्वेलरी साथ में न रखें। यादगार पलों को समेटने हेतु कैमरा अवश्य रखें।

हमारी यात्रा की शुरूआत जयपुर से हुई। रात्रि ट्रेन द्वारा दिल्ली स्टेशन पर सुबह 5:00 बजे पहुँच गए। रेलवे स्टेशन के वेटिंग रूम में तैयार होकर रेलवे की कैन्टीन में चाय-नाश्ता लिया। रेलवे स्टेशन से बाहर जाकर दिल्ली एयरपोर्ट पहुँचे। दिल्ली एयरपोर्ट से श्रीनगर एयर इन्डिया का सफर अच्छा रहा। हवाई जहाज से टेक-ऑफ और लैन्डिंग के समय जहाज की खिडकी से बाहर का नजारा देखना भी शानदार था। श्रीनगर एयरपोर्ट पर हवाई जहाज से बाहर निकलते समय ही पता चला कि तापमान 18 डिग्री के आसपास है। जैसा कि पहले बताया था कि यात्रा शुरू करने से पहले पूरी प्लानिंग करना जरूरी है। हमने दिल्ली से ही श्रीनगर ठहरने के लिए होटल बुकिंग एवं एयरपोर्ट से ले जाने के लिए तथा छोड़ने के लिए एवं श्रीनगर के आसपास

साइटसीन के लिए वाहन बुकिंग करवा लिया था। इसलिए हमारे लिए वाहन टवेरा श्रीनगर एयरपोर्ट पर पहले से ही आ गया था। टवेरा में हमारा सामान रखकर करके हम सब टवेरा में बैठ गए। पहले बताया था कि कश्मीर घाटी का हृदय स्थल श्रीनगर झेलम नदी के दोनों किनारों पर अवस्थित है। रास्ते में श्रीनगर की सुंदरता का आचमन करते करते हम हमारे बुक किये हुए होटल पर आ गए। अपना सामान इत्यादि रखकर, फ्रेश होने के बाद श्रीनगर साइटसीन के लिए निकले। हवाई सफर होने कारण श्रीनगर पहुँचते ही कुदरती सौंदर्य का अनुभव किया, इसलिए सफर की थकान बिल्कुल महसूस नहीं हुई थी।

जम्मू कश्मीर राज्य आतंकवादियों के आतंक की वजह से कई सालों से आतंकवाद से जूझता रहा। भारत सरकार ने आतंकवादियों का सफाया कर पर्यटकों का भय दूर कर दिया फिर भी कभी-कभी कहीं कोई हादसा होता रहता है इसलिए आज पूरे राज्य में राज्य की एवं यात्रियों की सुरक्षा के लिए सेना तैनात है और इस वजह से आज पूरे राज्य में पर्यटक बिना भय के घूम भी रहे हैं। इसीलिए राज्य के किसी भी पर्यटक स्थल पर सुरक्षा जांच से गुजरना आवश्यक होता है। हमारा समूह शालीमार गार्डन की तरफ रवाना हुआ। शालीमार बाग संसार के सर्वश्रेष्ठ उद्यानों में से एक है, बादशाह जहांगीर ने अपनी बेगम नूरजहां के लिए इसे बनवाया था। चमकते हुए पत्थरों के बीच से एक छोटी सी झील बहती रहती है और इस बाग में तकरीबन 150 फव्वारे भी हैं। आपने कही भी न देखा होगा कि इसमें इतने सारे किस्म के गुलाब के फूल और अन्य फूलों की विविधताएं हैं, जिसे देखकर हम भी खुश हो गए। मानो पूरे बाग ने एक रंग-बिरंगी चादर ओढ़ ली हो। अलग-अलग एंगल से फोटोग्राफी करते हुए, बाग में घूमने पर एक अलग सी खुशबू महसूस होती थी। बाग में से निकलने का मन ही नहीं हो रहा था। लेकिन समय को भी ध्यान में रखना पड़ता है। बाग से बाहर निकलने के बाद जलपान का आस्वाद लिया और हम अपने गेस्ट हाउस पहुँचे। रात्रि का भोजन होटल के बाहर करके आज के खूबसूरत बाग एवं सुनहरे पलों को याद करते करते करते हम सबको कब नींद आ गई पता ही नहीं चला।

श्रीनगर का आज हमारा दूसरा दिन है। हमारी योजना के अनुसार आज हमें पूरे दिन के लिए श्रीनगर शहर की सुंदरता एवं अन्य आस पास के लोकल साइट सीन देखने का कार्यक्रम बनाया था। इसलिए सुबह की प्रातः विधियाँ, चाय-नाश्ता पूर्ण करके हमारे गाड़ी वाले ड्राइवर/गाइड जिसका अली नाम था और जो श्रीनगर के ही रहने वाले थे उनके पास श्रीनगर के बारे में काफी अच्छी खासी जानकारी थी। हमें अच्छा गाइड भी कर रहे थे। थोड़ी देर में अली आ गया। यहाँ मैं आपको एक और बात बता दूँ कि श्रीनगर में खाने-पीने के लिए आपको आपके बजट में आप के स्वाद अनुसार चाय-नाश्ता व भोजन आसानी से मिल जाएगा। दूसरी बार हमारे ग्रुप में हम आठ सदस्य थे, इसलिए हम सभी आठों मेम्बर्स आसानी से सफर कर सके इसके लिए हमने (टवेरा) एक बड़ा वाहन बुक किया था। आप अपने ग्रुप के अनुसार वाहन पसंद कर सकते हैं। श्रीनगर में आज पहले हम बोटनिकल गार्डन, इसे चश्मेशाही गार्डन भी कहते हैं, देखने के लिए गये। 1632 ई. में शाहजहां द्वारा निर्मित यह गार्डन भी देखने लायक है और झील के साथ-साथ रंगबिरंगे फूलों से सजे यह मुगल गार्डन की याद दिलाता है। यहाँ से हम डल सरोवर की सैर करने निकले। तकरीबन 18 स्कवेयर किलोमीटर में फैला हुआ यह सरोवर चार विभागों में बंटा हुआ है।



इस सरोवर में दो द्वीप भी हैं। एक का नाम सोनालक और दूसरा रूपालक नामक द्वीप है। इस द्वीप पर चार-चिनार के वृक्ष भी हैं। इस सरोवर में नौका विहार करना अत्यंत आनंददायक है। सरोवर के किनारे पर होटल की तरह सुसज्जित एवं लोकल संस्कृति से सजे हुए बोट हाउस हमें आकर्षित कर रहे थे जिसे वहां की स्थानीय भाषा में शिकारा भी कहा जाता है। सरोवर में शिकारे इधर-उधर घूम रहे थे और पर्यटक इसमें मजा ले रहे थे। सरोवर में अद्भुत फव्वारों की व्यवस्था देखना, सरोवर का हरा रंग रूपी शांत पानी, कहीं-कहीं सरोवर की सतह से निकली हुई वनस्पति देखना, सब कुछ दिल को छू जाता था। हमने एक किनारे से शिकारा लिया जो सरोवर में हमें धीमी-धीमी रफ्तार से चार चिनार के द्वीप तक ले गया। इस सरोवर में आपको लोकल व्यापार करने वाले भी मिल जाएंगे। वे हमारी बोट (शिकारे) के साथ-साथ वे अपनी चीजे बेचने का प्रयत्न करते हुए हमारे साथ-साथ चल रहे थे। चार चिनार वाले द्वीप पर हमने फोटोग्राफी की और लोकल कश्मीरी ट्रेडिशनल कपड़े पहनकर हमने फोटो भी खिंचवाई। कुछ देर झील में सैर करने के बाद हम सब वापिस किनारे पर आ गए।

हमारा अगला पर्यटक स्थल शंकराचार्य मंदिर था। श्रीनगर में एक ऊँची पर्वतमाला पर यह शंकराचार्य मंदिर एक प्राचीन मंदिर है। मंदिर के परिसर से श्रीनगर का व्यू देखना, डल सरोवर देखना बहुत अच्छा लगा। मंदिर से नीचे आकर भोजन लिया। यहाँ से एक और गार्डन निशांत बाग देखने गये। वैसे श्रीनगर सुंदरता के साथ-साथ उद्यानों से भरा हुआ एक शहर भी है। श्रीनगर में यह उद्यान सबसे बड़ा नयन रम्य उद्यान है, जिसका वर्ष 1633 में नूरजहां के भाई आसफम ने निर्माण करवाया था। फव्वारों के साथ फूलों की खुशबु दिल को भा जाती है। यहाँ से हमारी सवारी परी महल देखने के लिए गई। परी महल गार्डन के साथ साथ पहले एक बौद्ध मठ भी था जहां पुराने समय में एक ज्योतिष अध्ययन केन्द्र भी चलता था। आज के समय में इसे एक उद्यान के रूप में विकसित किया गया है। गुफाओं में से निकलना, स्टेप वाइज उद्यान देखना, सबसे ऊपर के स्टेप से नीचे देखना सब कुछ अद्भुत था। सभी उद्यान फोटोग्राफी के लिए काफी बढ़िया जगह हैं। पूरा दिन कैसे निकल गया पता भी नहीं चला। शाम को होटल आकर थोड़े आराम के बाद हम सब रात्रि भोजन के लिए चले गए। पूरे दिन की यादों को याद करते-करते अच्छी नींद आ गई थी।

आज श्रीनगर में हमारा तीसरा दिन था, आज हमारा प्रोग्राम था श्रीनगर के पास के स्थल सोनमर्ग जाने का। वैसे तो श्रीनगर के आसपास 100 किलोमीटर के एरिया में बहुत सारे दर्शनीय सौंदर्य से भरपूर स्थल हैं, लेकिन उनके लिए अतिरिक्त समय भी चाहिए। इसलिए हमने श्रीनगर के आसपास के तीन-चार दर्शनीय स्थलों पर जाकर जायजा लेने का निर्णय किया। सोनमर्ग, श्रीनगर लेह मार्ग पर आने वाला प्राकृतिक सुंदरता से सुसज्जित एक दर्शनीय स्थल है। सोनमर्ग समुद्र तल से 2740 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। ट्रेकिंग व घुड़सवारी के लिए भी प्रसिद्ध है। सोनमर्ग से ग्लेशियर बर्फ से सजा हुआ पर्वत देखने के लिए हमारे कुछ लोग घुड़सवारी के साथ दूर ग्लेशियर की ओर चले गए। इसके अलावा, अगर आप के पास अगर साथ में गर्म वस्त्र, स्वेटर या जेकेट और बर्फ पर चल सके ऐसे जूते हैं तो ठीक है, नहीं तो सोनमर्ग से ही घुड़सवारी के साथ आप ये सब चीजें किराए पर भी ले सकते हैं। वैसे मौसम बिल्कुल साफ होने के कारण सफर का आनंद और बढ़ जाता है। हम भाग्यशाली रहे कि हमें मौसम बिल्कुल साफ ही मिला। पहाड़ों, घाटियों एवं जंगल में से झीलों के पास से घोड़ी पर सवार होकर घोड़ों के साथ निकलना हमारे यादगार पल रहे। घोड़ी को नियंत्रित करने वाला उनका गाइड भी हमारे साथ ही चलता रहा। तकरीबन 6 किलोमीटर के बाद हम ग्लेशियर के पास पहुँच गए थे।

यहाँ आप बर्फ पर पैदल भी ऊपर चढ़कर बर्फ का मजा ले सकते हैं। (एक प्रकार की बर्फ पर चलने वाली गाड़ी) का उपयोग करके स्लेजिंग भी कर सकते हैं। बर्फ पर चलना, फिसलना, स्लेजिंग का आनंद

लेना एक प्रकार से अच्छा अनुभव रहता है। नीचे घाटी में चाय-नाश्ते के लिए छोटी-छोटी स्टालें हैं आप इनका उपयोग कर सकते हैं। तीन घंटे के सफर का आनंद ले कर हम वापिस आ गए। हमारे कुछ लोगों ने वहाँ लोकल खरीदारी भी की। श्रीनगर से सोनमर्ग 90 किलोमीटर की सूरी पर है। शाम को हम सब वापिस श्रीनगर आ गए। आज हमारा चौथा दिन था और योजना के अनुसार हमें गुलमर्ग जाना था। गुलमर्ग श्रीनगर से 49 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गुलमर्ग, चारों दिशाओं में उत्तुंग हिमाच्छादित पहाड़ियों के बीच बसा यह स्थल हरियाली एवं सुंदरता की वजह से पर्यटकों के लिए एक आदर्श दर्शनीय स्थल के रूप में जाना जाता है। पर्वतों में बना रास्ता प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। गुलमर्ग पहुँचते ही घुड़सवारों द्वारा वाहन को रोक कर घुड़सवारी करवाने के लिए प्रयास करवाया जाता है। आस-पास के पॉइंट्स इतने दूर नहीं हैं और चलकर भी मजा लिया जा सकता है। गुलमर्ग के पास ही गंडोला रोप-वे बना हुआ है। गंडोला रोप-वे की टिकटें आप सफर से पहले ऑनलाइन भी बुक करवा सकते हैं। हमने यहाँ आने से पहले हमने दिल्ली से ही ऑनलाइन टिकटें बुक करवा ली थी। वैसे हमने देखा कि अच्छा मौसम की होने की वजह से भीड़ कुछ ज्यादा ही थी। जहाँ देखो वहाँ यात्री ही यात्री। यहाँ गंडोला रोप-वे के लिए टिकट लेना फिर बोर्डिंग पास लेना और अंत में सुरक्षा जांच से गुजरना, इन सब में तो इस तरह से आपके दो से तीन घन्टे ऐसे ही निकल जाते हैं। आखिर में रोप-वे की कार में बैठे। रोप-वे की बंद कार से बाहर का दृश्य बड़ा अच्छा लग रहा था। यहाँ गंडोला पहुँचते ही अगले पड़ाव के लिए फिर से लाइनों में लग कर टिकटें लेना और रोप-वे की कार में बैठ कर आगे बढ़ना पड़ता था। लेकिन गंडोला आगे जाने की परमिशन तब ही मिलती है जब मौसम अच्छा हो। ऊपर बर्फ के पहाड़ बिल्कुल साफ दिखाई देते हैं। हमारा टिकट गंडोला तक का ही था। आगे हम नहीं गये। लेकिन पास के दर्शनीय स्थल ग्लेशियर पर जाकर बर्फ का मजा लिया। कुछ घंटों के बाद हम रोप-वे कार के जरिये नीचे वापिस गुलमर्ग आ गए। गुलमर्ग का सफर रोप-वे की वजह से यादगार बन गया। शाम तक वापिस श्रीनगर आ गए थे।

आज हमारा पाँचवा दिन था। गुप पहलगाँव जाने वाला था। श्रीनगर से पहलगाँव 95 किलोमीटर का सफर है। शुरू में सीधे दिखने वाले रास्ते, बाद में सर्पिलेकार पहाड़ी रास्ते बनते चले जाते हैं। अमरनाथ यात्रियों के लिए यह पहलगाँव एक प्रस्थान स्थल होने के साथ-साथ एक पवित्र स्थल भी है। पहलगाँव लिडर एवं शेषनाग नदियों के किनारे बसा एक अलौकिक स्थल है। 2130 मीटर की ऊँचाई पर स्थित इस स्थल के आस-पास देवदार एवं पाइन के जंगल और हिमाच्छादित गिरिश्रृंखला से भरपूर रमणीय सौंदर्य है। पहलगाँव पहुँचते ही इसके आस-पास के दर्शनीय स्थलों और अद्भुत घाटियों को देखने के लिए पहलगाँव में एक पर्यटक प्रिपेड टैक्सी स्टैंड भी है। वाहन की क्षमता, कितने पैसेंजर हैं, कौन-कौन से दर्शनीय स्थलों पर जाना चाहते हैं इत्यादि-इत्यादि आधारों पर टैक्सी किराये पर ले सकते हैं। हमने तीन स्थल उर वैली, बालटाल वैली एवं चंदन वैली कवर करने के लिए के लिए एक टवेरा हायर की। तीनों वैलियों का नजारा, इनका सौंदर्य, आस-पास नदियों के पानी, और अद्भुत जंगल देखकर हम सभी प्रसन्न हो गए। सबसे अच्छा चंदनवाडी (चंदन वैली) लगा। यहाँ ग्लेशियर के साथ स्लेजिंग करना भी एक आनंदमयी और यादगार अनुभव बन गया। अमरनाथ यात्रियों के लिए यह स्थल अंतिम स्थल है। यहाँ से अमरनाथ 32 किलोमीटर दूर है। सुरक्षा बल आयोजित होने वाली यात्रा से पूर्व तैयारी में लग गए थे। पहलगाँव आकर हम हमारे वाहन में शाम तक श्रीनगर आ गए थे। आज छठे दिन सुबह का चाय-नास्ता पूर्ण करके हमने जम्मू की ओर जाने के लिए तैयारी कर ली थी। हमारे ड्राइवर और हमारे गाइड भी रहे अली हम से श्रीनगर एयरपोर्ट पर हमें छोड़ने के बाद हम से विदा हुए। उनके साथ हमने कुछ फोटोग्राफ भी खिंचवाए वह हमसे बहुत खुश था और हम उनसे बहुत खुश थे। पृथ्वी पर स्थित स्वर्ग जैसा आनंद लेने के लिए एक बार तो कश्मीर की सैर करनी ही चाहिए। यह सफ़र हम सभी के लिए एक यादगार सफ़र बन गया।



श्रीमती प्रियंका यादव
पत्नी श्री सोमदत्त यादव
(क. हिंदी अनुवादक)

आद्वितीय असम

हमारा भारत प्राकृतिक विविधताओं से भरा एक प्यारा देश है। दुनिया के सब रंग इस भारत देश में हमें देखने को मिलते हैं। कहीं कुदरती सौन्दर्य से भरपूर प्रदेश, कहीं रण प्रदेश, कहीं जंगल से भरा प्रदेश, कहीं मालाओं की तरह सूखे पर्वत-मालाओं के दर्शन तो कहीं कहीं बर्फ-आच्छादित पर्वतमालाएँ है। हमारे देश में इतने दर्शनीय स्थल है कि अगर सोचे तो भारतीयों को दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने के लिए विदेश यात्रा पर जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। अगर किसी को कृत्रिम कॉक्रीट के जंगल या मानव सर्जित आधुनिकता का दर्शन करना है तो उन्हें जरूर विदेश की सैर करनी चाहिए। बाकी अगर प्रकृति के सानिध्य में रहना है, प्राकृतिक वातावरण एवं प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठाना है तो इस भारत वर्ष में इतना भरपूर सौन्दर्य है कि हमारा पूरा जीवन भी इसके लिए कम पड़ेगा। आइए, भारत को करीब से देखें और इसे जानने का अनुभव करें। मेरा भाई भारतीय सेना में है। हमारे इस कार्यक्रम के दौरान उनकी तैनाती असम में थी। इसलिए, हमें असम में भाई के साथ घूमने में बड़ा आनंद आया। हमारी यात्रा कुछ इस प्रकार थी। हम सबसे पहले गुवाहाटी पहुँचने पर किराये के वाहन से सीधा ही काजीरंगा नेशनल पार्क पहुँचे। यहाँ काजीरंगा दो रातें रुकने के पश्चात, गुवाहाटी एक रात के लिए ठहरकर दूसरे दिन गुवाहाटी साइट-सीडिंग करके हवाई सफर द्वारा दिल्ली पहुँचना इत्यादि सब कुछ मजेदार रहा।



गुवाहाटी से हमारे ड्राइवर ने हमें काजीरंगा नेशनल पार्क पहुँचाने में काफी समय लिया। रास्ते में असम प्रदेश के बारे में, यहाँ की कला-संस्कृति और वन्य जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करते रहे। रास्ते में भोजन के लिए एक रेस्टोरेन्ट में भोजन कर, थोड़ा आराम किया, फिर आगे चल पड़े। रास्ते में दोनों तरफ जंगल तो कहीं ऊँचे घास के मैदान। अद्भुत नजारा देखना आनंदमयी था। एक जगह गाड़ी खड़ी करके बताया गया कि यह एक रायनों (एक सींग वाला वन्य जीव- गेंडा) पॉइंट है यहाँ से दूर घास के पानी से भरे मैदानों में रायनों दिखाई देते हैं। जीवन में पहली बार लाइव एक सींग वाले गेंडे को देखा। यहाँ पर दूरबीन/बायनोकूलर वाले खड़े रहते हैं। इसका उपयोग करके दूर खड़े एक सींग वाले गेंडे को इस दूरबीन द्वारा नजदीक से देखने का आनंद लिया। रायनोस के दर्शन करके सवारी आगे बढ़ी। थोड़ी देर में ही हम हमारे बुक किए हुए होटल पहुँचें। चाय के लिए ऑर्डर दिया और रेस्ट लिया।

काजीरंगा का विवरण: आगे बढ़ने से पहले काजीरंगा नेशनल पार्क के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी बताना आवश्यक है। काजीरंगा नेशनल पार्क को 'विश्व धरोहर स्थल'/'वर्ड हेरिटेज साइट' का दर्जा प्राप्त है। दुनियां में ऐसे प्रसिद्ध स्थल पर पहुंचना, यहाँ रहना, यहाँ के अद्भुत नजारों को नजदीक से देखना एवं इसका आनंद लेना यादगार और अविस्मणीय बन जाता है।



प्रकृति के अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण भूमि पर शांत, मनोरम घने जंगल, तो कहीं-कहीं पहाड़, चाय के सुंदर बागान, हरी-भरी मनोरम घाटियां, आदिवासी संस्कृति और कला का मनोहर दृश्य आदि से भरा भारत का यह क्षेत्र जिसमें पूर्वोत्तर के सभी सात राज्य आते हैं, के जन-जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। अपनी पुरानी, विशिष्ट और मनमोहक संस्कृति को सदियों से अपरिवर्तित रखते हुए ये लोग आज भी आदिवासियों की तरह आदिम रूप में अपना जीवन यापन कर रहे हैं और उत्तरी पूर्वी राज्यों का ही इलाका एक ऐसा क्षेत्र है जहां सबसे अधिक आदिवासी तथा जन-जातियां पाई जाती हैं। इनका जीवन आज भी युग की रफ्तार से अछूता सा लगता है। यहाँ के लोग सबसे शानदार मिजाज और उन्मुक्त विचारों वाले होते हैं। विश्व का सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान चेरापूंजी/मासिनराम इन राज्यों की शोभा बढ़ाता है। आज समय के साथ थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन इन जनजातियों में दिखाई देने का कारण भी अब यही माना जाने लगा है कि इन राज्यों में पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण अब ये राज्य भी अब पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित होने लगे हैं जिससे लोगों का अब वहाँ आना-जाना आसान हो गया है।

भारत के सबसे हरे और सबसे प्यारे राज्यों में असम प्रकृति का एक अद्भुत उपहार है। घाटियों और मैदानी प्रदेशों में सबसे उपजाऊ धराओं में से यह एक धरा है। ऐसे अद्भुत राज्य असम के गोलाघाट-नागोंन एरिया में स्थित है काजीरंगा नेशनल पार्क। यह वन्य जीवअभ्यारण और एक सींग वाले गेंडे/रायनोस के लिए प्रसिद्ध है जो असम सरकार के वन विभाग एवं कुछ अधिकृत एनजीओ द्वारा यह संरक्षित है। दुनिया के रायनोस की दो-तिहाई आबादी काजीरंगा में पाई जाती है।



आज इस नेशनल पार्क में 2400 के आस-पास रायनोस ने बसेरा बनाया हुआ है। इसके साथ ही इस पार्क में बाघ, हाथी, हिरण और पक्षियों की कुछ प्रजातियाँ भी पाई जाती है। 430 वर्ग किमी में संरक्षित इस विस्तार के आस-पास आदिवासी गाँव है। इस पार्क में अंदर आने के लिए अलग-अलग दिशाओं में एंट्री गेट बनाए गए हैं। पूर्ण अनुमति के पश्चात ही आप इस पार्क में जा सकते हैं। पार्क में अंदर जाने के लिए निजी वाहन के लिए प्रवेश निषेध है, इसलिए वन विभाग के मान्य वाहन द्वारा ग्रुप में या परिवार के साथ ही प्रवेश कर सकते हैं। मान्य एलिफेंट सफारी के जरिये भी आप अंदर प्रवेश कर सकते हैं। दोनों का अपना अपना रूट होता है और दोनों का मजा भी कुछ अलग होता है। आप अपनी पसंद अनुसार जीप सफारी या हाथी पर सवारी का आनंद ले सकते हैं। दो-ढाई घंटे तक पार्क के अंदर गहरे विस्तार में जहाँ रायनोस

एवंअन्य जीवों का बसेरा होता है वहाँ तक आप सफर जारी रख सकते हैं।

इस जंगल एरिया में कहीं-कहीं ऊंची आरसीसी की गेलरी/स्टैंड बनाई गई है जहां से आप ऊपर जाकर पार्क के दूर तक का नजारा देख सकते हैं। यह नेशनल पार्क में हाथी की ऊंचाई तक के ऊंचे घास, घने उष्णकटिबंधीय एवं चोड़े पत्तों वाले जंगलों का एक विशाल विस्तार देखने को मिलता है। जिसमें चार प्रमुख नदियां हैं जिनमें प्रमुख ब्रह्मपुत्र है। दलदली भूमि के आर-पार सुंदर नजारा लिए हुए ब्रह्मपुत्र का विस्तार शानदार है। काजीरंगा ने वन्य जीव संरक्षण में उल्लेखनीय सफलता हंसिल की है। पूर्वी हिमालय जैव विविधता वाले स्पॉट के किनारे स्थित पार्क उच्च प्रजाति विविधता और दृश्यता को जोड़ती है। काजीरंगा कई किताबों, गीतों और वृत्त-चित्रों का विषय रहा है।

सामान्यतः इस विस्तार में स्थित होटल वाले ही हमको इस नेशनल पार्क में ले जाने के लिए जीप सफारी या हाथी सवारी की योजना बना देते हैं, क्योंकि वे वन विभाग के अधिकृत एजेंट होते हैं। अपनी पसंद के हिसाब से सफारी एवं समय अनुकूलता के अनुसार सवारी पहले ही बुक करवा देते हैं। भीड़ अधिक होने के कारण हमें हाथी सफारी का टिकट नहीं मिला क्योंकि बुकिंग पहले से ही पूर्ण हो गई थी। बाद में जीप सफारी की बुकिंग हमने करवा ली थी। यहाँ वन विभाग द्वारा निर्धारित चार्ज ही लिया जाता है। इसमें कैमरा या वीडियो चार्ज अलग से लिया जाएगा। सुबह निकलना था इसलिए रात में भोजन के करने के पश्चात सोना पसंद किया।

इस विस्तार में रहने के लिए या खाने-पीने की कोई समस्या नहीं रहती। अपनी पसंद का होटल/रेस्टोरेन्ट मिल जाता है। सुबह होटल पर ही हमारी बुक की हुई जीप आ गई। हमें पहले दिए गए निर्देश के अनुसार हम इस पार्क में कोई भी खाने-पीने की चीजे निषेध होने के कारण साथ में केवल छाता/रैनकोट, कैमरा और पानी की बोतल ही साथ ले जा सकते हैं। यह सब जीप में रखकर हम भी जीप में सवार हो गए। जीप ने थोड़ा ही रास्ता काटा होगा और हम पार्क के एक प्रवेश द्वार के पास आ गए। सुरक्षा गार्ड द्वारा जीप एवं हमारी जाँच की गई, पार्क में जाने का समय हो गया था इसलिए भीड़ अधिक होने के कारण जीपों की लंबी लाईनें हो गई थी। प्रवेश-पत्र एवं सुरक्षा जाँच के पश्चात हमें अंदर जाने दिया गया गया।





पार्क में जीप एवं हाथियों के लिए कच्ची सड़के बनाई गई हैं जो पार्क में अंदर दूर तक जाती हैं। पार्क के अंदर का नजारा अद्भुत, शांत एवं मनमोहक था। चारों तरफ हरियाली, घास के मैदान, कहीं पानी भरे लंबे घास के मैदान यह सब अविस्मरणीय था। कुछ दूर आगे जाने पर ही रायनोस (जिसको देखने के लिए हम यहाँ तक आए हैं।)

और अन्य वन्य जीव जैसे हाथी, हिरण सभी एक साथ अपने-अपने ग्रुप में चरते हुए घास में दिखाई दे रहे थे। क्या शानदार नजारा था! जो हम टीवी या फिल्मों में देखते हैं, वह सब कुछ वहाँ देख रहे थे। जरूरत पड़ने पर जीप ड्राइवर हमें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर जीप खड़ी करके या धीरे करके यह अद्भुत नजारा हमें दिखाते थे। कैमरा साथ में ही था, कहीं फोटोग्राफी तो कहीं वीडियो-क्लिप द्वारा इन सुंदर नजारों को कैद करना नहीं भूलते थे। थोड़े-थोड़े अंतराल में सभी जीपें चल रही थी। जहाँ कहीं अच्छा नजारा देखने को मिलता तो जीप वहीं खड़ी करके धन्य हो जाते थे। यहाँ आने का हमारा मकसद पूरा हुआ और साथ ही ऐसा महसूस करके हमें परम आनंद की प्राप्ति भी हुई।

यहाँ पार्क में कुछ ऐसी भी जगह हैं जहाँ पर एक-दो मंज़िला स्टैंड बनाकर व्यू-पॉइंट बनाया गया है। जीप से उतर कर इस व्यू पॉइंट द्वारा पार्क के चारों तरफ का सुंदर व अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। फोटो व वीडियो के लिए यह जगह उत्तम हैं। यहाँ का वातावरण भी सुंदर था जो दूर-दूर तक साफ व सुंदर दिखाई देता था। यादगार एवं सौम्य पलों का आनंद लेते लेते हमारे तीन घंटे कब निकल गए पता भी नहीं चला। आनंद के क्षणों को याद करते-करते होटल पहुंचे। यहाँ चाय नाश्ता लेकर हम अगले पड़ाव की ओर यानी कि इस नेशनल पार्क के आस-पास बहुत ऐसे दर्शनीय स्थल बनाए गए हैं जो देखने लायक हैं और यह सब हमारी Itinerary सूची में शामिल था, की ओर बढ़े। पहले हम Orchid पार्क और इसके साथ ही लगे बायो-डायवर्सिटी पार्क भी गए। यहाँ देखने लायक बहुत कुछ हैं, जैसे ओर्चिडेरियम (नेटिव ओरचिड का बड़ा कलेक्शन), फोटो हाउस (नेटिव ओरचिड के दुर्लभ फोटो), ओरचिड के कुदरती संरक्षित प्लांट्स, नेशनल सीड कलेक्शन सेंटर, पक्षियों की अलग-अलग प्रजातियाँ, ईथनो बोटनिकल गार्डन, नेटिव फ्लावर गार्डन, नेटिव फ्रूट गार्डन, ईथनो मेडिसिन कलेक्शन सेंटर, रॉक पार्क, बोटिंग, ट्री-हाउस, बाम्बू एंड केन कलेक्शन, फूड जोन, कल्चरल प्रेक्टिस, चिल्ड्रन एम्यूजमेंट पार्क इत्यादि इत्यादि इन्हें देखने के लिए आपके चार-पाँच घंटे कैसे निकल जाएंगे पता भी नहीं चलेगा। एक-एक पॉइंट को देखना, आनंद लेना और प्लस पॉइंट यह होता है कि हर एक पॉइंट पर गाइड मौजूद रहता है और जो हमें उस दर्शनीय स्थल के बारे में विस्तार से बताता है। जीवन में पहले कभी नहीं देखे ऐसे ओरचिड प्लांट-फूल को देखना कमाल का था। प्रकृति का करिश्मा बस यहीं पर देखने को मिलता है। वहाँ फूलों के जैसे आकार वाले पक्षी, प्राणी या मनुष्य रूपी ऐसे ऐसे फूल थे जिन्हें पर लगता था कि हम भी उन्हें पहली बार देख रहे हो और वो भी हमें पहली बार देख रहे हो। फोटोग्राफी के बाद आगे बढ़े। कहीं पर अपनी पुरानी संस्कृति व परम्पराओं के दर्शन तो कहीं कला के उत्तम नमूनों का दर्शन, सही में अद्भुत था। यहाँ पर असम के ट्रेडिशनल डांस जैसे बिहू और बाम्बू डांस इत्यादि को प्रेक्षकों के लिए लाइव पेश किया जाता है। जो टीवी/फिल्मों में देखते हैं वह यहाँ पर लाइव ट्रेडिशनल डांस देखकर मन आनंद-विभोर हो गया था। एक से बढ़कर एक लाइव डांस का ट्रेडिशनल संगीत के साथ मजा लेना यादगार बन गया और मन प्रफुल्लित हो गया। यहाँ फूड-जोन में असम की प्रसिद्ध थाली का आनंद लेने की इच्छा हो गई क्योंकि भोजन का समय भी हो गया था। असम के पारंपरिक खाने का आनंद जीवनभर याद रहेगा। बड़ी थाली में 16 कटोरी के साथ अलग-अलग चीज़ें और ओर्गेनिक फूड के साथ शुद्ध एवं सात्विक भोजन का आनंद ही कुछ और था। खाने के बाद बाहर की ओर प्रस्थान किया। बाहर

की तरफ असम की पारंपरिक कला की चीजों की दुकाने थी।

आप अपनी वित्त क्षमताओं के हिसाब से पसंद करके लोकल व ट्रेडिशनल चीजें खरीद सकते हैं जो आपको अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को देने के लिए उपहार स्वरूप बेहतरीन तोहफे यहाँ से मिल जाएंगे। होटल पहुंचे। थोड़ा आराम किया। चाय ऑर्डर दिया और चाय के पश्चात अगले दर्शनीय स्थल की ओर रवाना हुए।



थोड़े अंतराल पर यहाँ एक ऐथिक विलेज बनाया गया है। जहां पर कुछ ट्रेडिशनल स्टेच्यू गार्डन में बनाए गए हैं, जो आदि-जनजाति के लोगों की संस्कृति का दर्शन करवाते हैं। इस बड़े विस्तार में कुछ अलग-अलग प्रकार के बड़े घास व बाँस से घर भी बनाए गए हैं। कुदरती वस्तुओं का उपयोग करके बनाए गए एवं पारंपरिक तरीके से सजाए गए यह छोटे-बड़े घर देखना विस्मयकारी एवं अविस्मरणीय नजारा था। सब कुछ कैमरे में कैद करते गए। शाम तक वापस होटल आ गए थे। रात को खाना खाने पास के एक रेस्टोरेंट में गए। अचानक बारिश शुरू हो गई और थोड़ी देर तक हमें रेस्टोरेंट में ही रुकना पड़ा। बारिश रुकने पर होटल पहुंचे और निशा-निमंत्रण स्वीकार किया। गुवाहाटी के एक और दर्शनीय और पर्यटन स्थल माँ कामाख्या के मंदिर गए। ऐसा माना जाता है कि प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर घूमे बिना गुवाहाटी की यात्रा अधूरी मानी जाती है। हिन्दू धर्म के अनुसार यह 51 शक्तिपीठों में से एक है और जिसकी गिनती सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में होती है। अगले दर्शनीय स्थल बालाजी मंदिर गए जो विशाल परिसर गार्डन और अन्य रमणीयताओं के साथ खूबसूरत लगता है। इस मंदिर का दक्षिण के मंदिरों से मिलता-जुलता स्वरूप है। सुंदर एवं कलात्मक और स्थापत्य कला का उत्तम नमूना देखना सुखमय लगा। इसके अलावा गुवाहाटी में स्टेट-म्यूजियम, तारामण्डल और शहर के ढेर सारे मंदिर देखने वाले दर्शनीय स्थल है, जो देखें जा सकते हैं। लेकिन हमें दो बजे तक एयरपोर्ट पहुंचना था क्योंकि 5 बजे फ्लाइट पकड़कर दिल्ली पहुंचना था। पूर्वोत्तर भारत के यह प्रदेश खास करके असम मेरे जीवन का यादगार व अद्भुत अविस्मरणीय टूर बन गया। जब कभी भी वीडियो क्लिप और इस प्रदेश के लिए गए फोटोग्राफ देखते हैं तो असम का पूरा नजारा जीवंत हो जाता है और मुझे लगता है कि मेरे साथ आपने भी असम की इस यात्रा का आनंद लिया होगा।

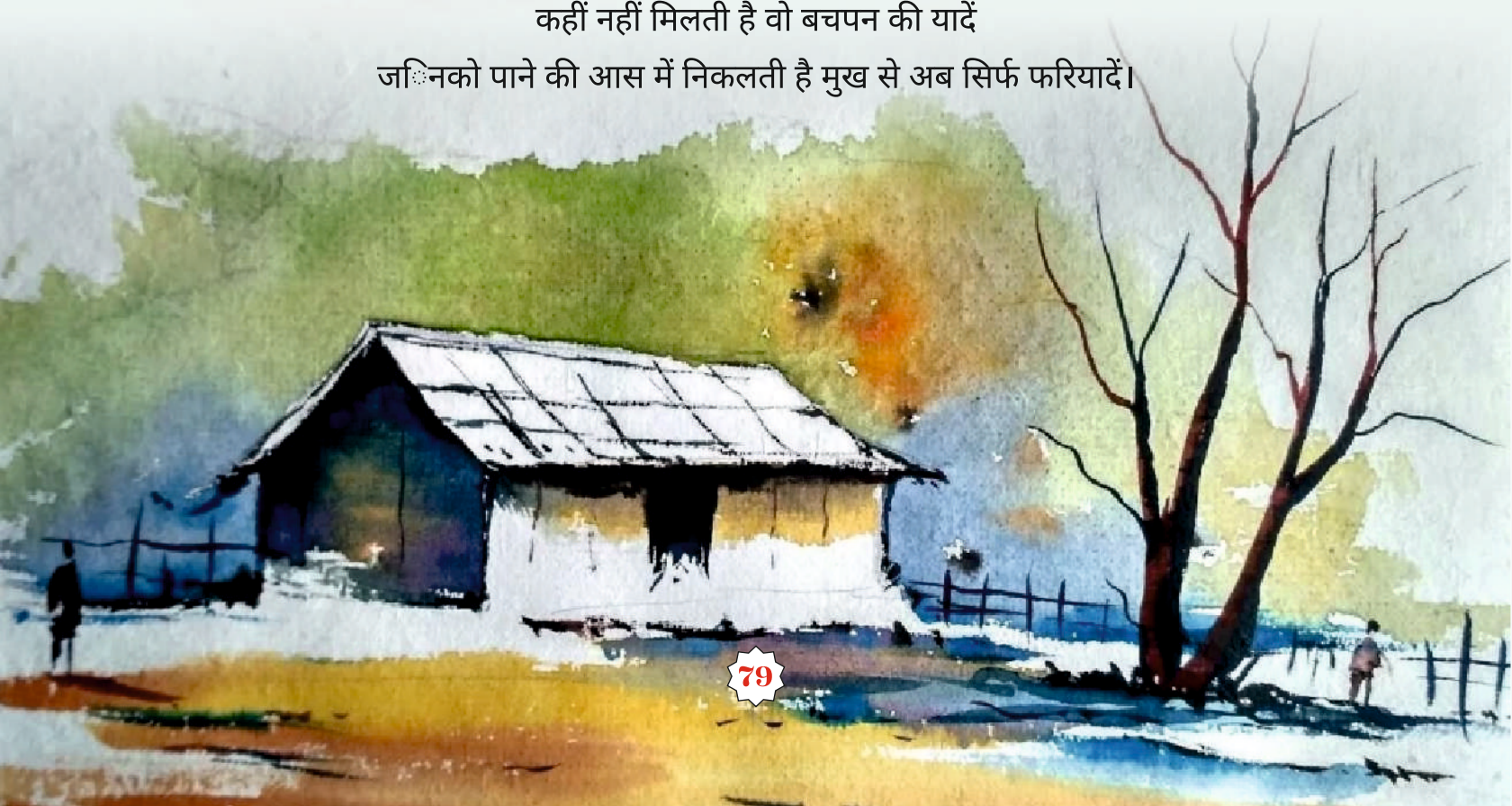


विकास



श्री दीपक परमार
एमटीएस

काश न होता कोई ऐसा विकास
न गिरता कोई घर
न होता कोई बेघर
जहां न बनते पक्के मकान
न गिरती कोई कच्ची दुकान
न मिलें जहां कोई सरकारी मकान
वहाँ नहीं कोई अब हमारी पहचान
गलियां थी वहाँ मोहल्ले की तंग
मगर त्यौहारों की थी अब भी मन में उमंग
भाइयों से बढ़ कर थे वहाँ हमारे संबंध
मगर यहाँ के लोगों के तो दरवाजे हैं बंद
यहाँ की रोशनी में दिखते है सिर्फ तारे
मगर वहाँ के अंधेरे में दिखते थे सितारे
कहीं नहीं मिलती है वो बचपन की यादें
जिनको पाने की आस में निकलती है मुख से अब सिर्फ फरियादें।





भारत, अर्थात् इंडिया

श्री अभिषेक पंड्या
(वरिष्ठ लेखाकार)

भारतीय संविधान के हिंदी संस्करण के अनुच्छेद 1 भाग 1 " भारत, अर्थात् इंडिया, राज्यों का संघ होगा।" दर्शाता है कि स्वतंत्रता के बाद "भारत" और "इंडिया" दोनों शब्द एक ही देश को दर्शाते हैं। जहां अंग्रेजी भाषा में देश के नाम के लिए इंडिया शब्द का इस्तेमाल हुआ वहीं हिंदी भाषा में भारत। आज भी कहीं भी सरकारी संस्थाओं, सरकारी दस्तावेजों और मुद्रा में हिंदी में भारत और अंग्रेजी में इंडिया नाम लिखा होता है। कैसे एक ही देश के दो अलग अलग नामों को अपनाया गया, क्या इसके अलावा भी हमारे देश को अलग नामों से जाना जाता था और क्यों इन सिर्फ दो नामों इंडिया और भारत को ही चुना गया। इसके लिए हमें इतिहास के कुछ तथ्यों को समझना होगा।

भारत : विष्णु पुराण के अनुसार धरती के सात द्वीप हैं- जम्बू, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौंच, शाक एवं पुष्कर। इसमें से जम्बू द्वीप सभी के बीचोबीच स्थित है। जम्बू द्वीप के 9 खंड हैं- इलावृत, भद्राश्व, किंपुरुष, भारत, हरि, केतुमाल, रम्यक, कुरु और हिरण्यमय। समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में भारतवर्ष स्थित है। इसका विस्तार 9 हजार योजन है। यह स्वर्ग अपवर्ग प्राप्त करवाने वाली कर्मभूमि है।

महाभारत के आदिपर्व में यह उल्लेख मिलता है कि महर्षि विश्वामित्र और अप्सरा मेनका की एक बेटी हुई जिनका नाम था शकुंतला। शकुंतला और हस्तिनापुर के महाराज दुष्यंत का गंधर्व विवाह हुआ। उनकी एक संतान हुई, भरत, जो आगे जाकर हस्तिनापुर के महाराज बने। इन्हीं भरत ने एक विशाल भूखंड पर लम्बे समय तक राज किया और उन्हीं के नाम पर उनके राज्य का नाम भारतवर्ष पड़ा।

भागवत पुराण : के स्कंद 5 और अध्याय 4 के श्लोक में इसका उल्लेख मिलता है कि धरती के राजा महान प्रियव्रत थे। उनके पुत्र अग्नीन्ध्र हुए, जो संपूर्ण जम्बूद्वीप के सम्राट बने। नाभि के पुत्र ऋषभदेव ने इस क्षेत्र पर जब तक शासन किया तब तक इस क्षेत्र का नाम अजनाभखंड या अजनाभवर्ष था। ऋषभदेव के पुत्र भरत जब इस संपूर्ण क्षेत्र के सम्राट बने तो उनके नाम पर इस क्षेत्र का नाम भारत पड़ा। एक तर्क यह भी दिया जाता है कि भारत वैदिक समुदाय भरत के नाम से लिया गया है, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में आर्यावर्त के मूल समुदाय जोकि सरस्वती और सिंधु नदी के आसपास रहा करता था, में से एक के रूप में किया गया है और विशेष रूप से दस राजाओं की लड़ाई में भाग लेने वाले के रूप में किया गया है। जिसे दासराज्ञ का युद्ध कहा जाता है।

इंडिया : इंडिया शब्द की उत्पत्ति इंडस वैली के कारण हुई है। भारत के रोम और यूनानी लोगों से प्राचीनकाल में संबंध रहे हैं। यूनानी यानी ग्रीक लोग भारत में शिक्षा प्राप्त करने और व्यापार करने के लिए आते थे। उनका मुख्य पड़ाव सिंधु नदी और घाटी के क्षेत्र में भी होता था। उस काल में सिंधु एक बहुत बड़ी नदी थी। इस नदी की 7 सहायक नदियां थीं। इसी सिंधु नदी को ग्रीक लोगों ने इंडस कहा। यह इंडस शब्द पहले इंडिका हुआ और बाद में अंग्रेजों के प्रभाव से इंडिया हो गया। अंग्रेजों ने भारत का नाम अपने शासन में ब्रिटिश इंडिया किया।

ऐसा कहा जाता है कि ईरानी यानी पारसी लोग इस संपूर्ण क्षेत्र को हिंदूस कहते थे। इसी को ग्रीक लोगों ने इंडस कर दिया। चंद्रगुप्त मौर्य के काल में यूनान का एक यात्री मेगस्थनीज आया था। वह ग्रीक और संस्कृत भाषा का विद्वान था। उसने भारतवर्ष का वर्णन अपनी किताब 'इंडिका' में किया है। इसमें विशेषकर मौर्यकालीन भारत के इतिहास का विवरण मिलता है।

हिन्दुस्तान : सिंधु से बना हिंदू : ऐसा कहते हैं कि सिन्धु से बना 'हिन्दू' शब्द। भाषाविदों के अनुसार हिन्द-आर्य भाषाओं की 'स्' ध्वनि (संस्कृत का व्यंजन 'स्') ईरानी भाषाओं की 'ह' ध्वनि में बदल जाती है इसलिए सप्त सिन्धु अवेस्तन भाषा (पारसियों की धर्मभाषा) में जाकर हफ्त हिन्दू में परिवर्तित हो गया (अवेस्ता : वेदीदाद, फर्गर्द 1.18)।

इसके बाद ईरानियों ने सिन्धु नदी के पूर्व में रहने वालों को 'हिन्दू' नाम दिया। इसी से कहा गया हिंदू स्थान जो आगे चलकर हिंदुस्तान बन गया। हालांकि कुछ भाषा शास्त्री कहते हैं कि यदि पारसियों को 'स्' के उच्चारण में दिक्कत होती तो वे सिन्धु नदी को भी हिन्दू नदी ही कहते और पाकिस्तान के सिंध प्रांत को भी हिन्द कहते और सिन्धियों को भी हिन्दू कहते। इन्दु से बना हिन्दू : चीनी यात्री ह्वेनसांग के समय में 'हिन्दू' शब्द प्रचलित था। यह माना जा सकता है कि 'हिन्दू' शब्द 'इन्दु' जो चन्द्रमा का पर्यायवाची है, से बना है। चीन में भी 'इन्दु' को 'इंतु' कहा जाता है। अतः चीन के लोग भारतीयों को 'इंतु' या 'हिन्दू' कहने लगे। मुस्लिम आक्रमण के पूर्व ही 'हिन्दू' शब्द के प्रचलित होने से यह स्पष्ट है कि यह नाम पारसियों या मुसलमानों की देन नहीं है।

बाबरनामा में बाबर ने लिखा है। सरहिंद के पास एक हिंदुस्तानी आया और उसने मुझे बताया कि वो सुल्तान इब्राहिम लोदी का दूत है। ऐसे ही खानवा में जब बाबर और राणा सांगा की लड़ाई हुई तो कई मुस्लिम सरदारों ने बाबर का साथ छोड़ दिया। इस पर बाबर ने लिखा, "हैबत खान संभल चला गया है, हिंदुस्तानी साथ छोड़कर जा रहे हैं।" मुगलकाल में हिंदुस्तान नाम का प्रचलन काफी बड़ा लेकिन बहुतायत में उत्तर भारत के लिए इस शब्द का इस्तेमाल होता था। जबकि विंध्याचल के नीचे के इलाके को दक्कन कहकर पुकारते थे। ये बात कई मुगल दस्तावेजों में दिखाई देती है, फिर चाहे हो अकबर या औरंगजेब। सब खुद को हिंदुस्तान का बादशाह मानते थे।

संविधानसभा में फॉरवर्ड ब्लॉक के हरिविष्णु कामत प्रमुख ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। उनका प्रस्ताव था, **'इंडिया, जोकि भारत है' के बदले होना चाहिए** भारत, जो अंग्रेज़ी भाषा में इंडिया कहलाता है" सेठ गोविन्द दास का प्रस्ताव था- **"भारत जो विदेशों में इंडिया के नाम से जाना जाता है"**। कमलापति त्रिपाठी बोले, 'इंडिया जो कि भारत है' के बदले 'भारत जो कि इंडिया है' होना चाहिए। इन सभी लोगों ने क्रम में बदलाव का प्रस्ताव दिया और अपने-अपने तर्क भी रखे। तर्क सारे इतिहास से जुड़े थे जिनकी हमने ऊपर चर्चा की, लेकिन किसी ने भी इंडिया नाम हटाने की बात नहीं कही। सिवाय हरगोविंद पंत के, पंत चाहते थे कि भारत का नाम भारतवर्ष होना चाहिए, और कुछ नहीं। इस पूरी बहस का नतीजा ये निकला कि संविधान सभा में सभी संशोधनों पर वोटिंग हुई लेकिन अंत में सभी अस्वीकार कर दिए गए 'इंडिया जोकि भारत है' इसी रूप में स्वीकार कर लिया गया। संविधान निर्माताओं ने अपने विवेक से जो भी निर्णय लिया वो लागू हुआ। आज के परिवेश में इंडिया जहां देश के आधुनिक इतिहास के साथ भविष्यवादी दृष्टिकोण, व्यापार, तकनीक, उन्नत आधारिक संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा युद्ध हथियार में संसार के विकसित राष्ट्रों के समक्ष अपनी चुनौती रखता है। वही भारत अपनी सांस्कृतिक उन्नत सभ्यता, गौरवशाली इतिहास, दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं और वसुधैव कुटुंबकम् की मान्यता बताता है।

हमें भारत के सांस्कृतिक मूल्यों के साथ आधुनिक इंडिया के निर्माण में कार्यरत होना चाहिए तभी हम संसार के विकसित देशों के बीच अपने आधारभूत मूल्यों के साथ विकसित होकर परस्पर सौहार्द और सद्भाव के साथ आगे बढ़ पाएंगे।



मोटे अनाज और हमारा स्वास्थ्य



श्री राकेश कुमार
(सहायक लेखा अधिकारी)
अहमदाबाद शाखा कार्यालय

मोटे अनाज अत्यधिक पोषक, अम्ल रहित, ग्लूटेन मुक्त और आहार गुणों से युक्त होते हैं। इसके अलावा बच्चों और किशोरों में कुपोषण खत्म करने में मोटे अनाज का सेवन काफी मददगार होता है।

मोटे अनाज को पोषक तत्वों का भंडार माना जाता है। **ज्वार, बाजरा, रागी, मक्का, जो, कोदो, सवा लघु, धनिया, कुटकी, कंगनी और चीन जैसे अनाज मिलेड्स यानी मोटे अनाज होते हैं।** इनमें **बीटा कैरोटीन, विटामिन B6, फोलिक एसिड, पोटैशियम, मैग्निशियम, जस्ता** आदि से भरपूर मात्रा होने पर ही इन अनाजों को सुपर फूड भी कहा जाता है।

गेहूं, दाल, चावल का प्रयोग तो लगभग हर घर में होता है, रोटी दाल चावल खाने की परंपरा पिछले कई दशकों से हैं लेकिन कई ऐसे अनाज है जो कभी खूब चलते थे इन्हीं को मोटा अनाज कहा जाता है। एक समय ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो मोटे अनाज से अपना भरण पोषण करते थे। एक तो यह महंगा नहीं था और आसानी से उपलब्ध भी हो जाता था। यह जल्दी खराब नहीं होता था। धीरे-धीरे मोटे अनाज की जगह गेहूं, धान, चावल ने ले ली और यही चीज लोगों की थाली का नियमित हिस्सा बन गया। खास बात यह है कि मोटे अनाज को उगाने के लिए बहुत अधिक सिंचाई और पानी की जरूरत नहीं पड़ती है। मोटे अनाज का प्रयोग पारंपरिक फसलों पर निर्भरता को काफी कम कर सकता है, यह फसले आमतौर पर सीमांत और असिंचित भूमि पर उगाई जाती है इसलिए इनकी आज स्थाई खेती फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन करती है।

भारत के प्रस्ताव के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने साल 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष घोषित किया था। अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के लिए आठ मोटे अनाजों को शामिल किया गया इसमें बाजरा, रागी, कुटकी आदि शामिल है। भारत में परंपरागत रूप से मोटे अनाज का उत्पादन होता रहा है। कृषि क्षेत्र में आधुनिकीकरण और मशीनीकृत कृषि उपकरण और अधिक उपज वाले बीज आ गए इसके बाद लोगों का रुझान चावल और गेहूं के उत्पादन के प्रति बढ़ गया परिणामस्वरूप मोटे अनाज की खपत और खेती दोनों सीमित हो गए। हमारे देश में मोटे अनाज मुख्य रूप से खरा कृषि जलवायु क्षेत्र में उगाए जाते हैं इन फसलों को उच्च तापमान वाले क्षेत्र में उगाया जाता है और इन्हें शुष्क भूमि फसल कहा जाता है। यह फर्स्ट टाइम मिट्टी की कमियों के प्रति कम संवेदनशील होती है और इन्हें जलोढ़ मिट्टी में उगाया जा सकता है। इन्हें पानी, उर्वरक और कीटनाशकों की भी न्यूनतम आवश्यकता होती है। मोटे अनाज की खेती कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद करती है जो आज एक वैश्विक समस्या है। मोटे अनाज में मानव शरीर के सामान्य कामकाज के लिए आवश्यक अधिकांश पोषक तत्व प्रदान करते हैं। मोटे अनाज में कम ग्लिसेमिक इंडेक्स होता है और मधुमेह की रोकथाम में मददगार होता है। यह आयरन जिंक और कैल्शियम जैसे खनिजों का अच्छा स्रोत है। मोटे अनाज वजन कम करने और उच्च रक्तचाप को संतुलित करने में मददगार होते हैं। इनका आमतौर पर फलियों के साथ सेवन किया जाता है जो प्रोटीन युक्त होती है। न्यू टीवी एंड

जनरल के अध्ययन के अनुसार भारत में 3 साल के बच्चे यदि 100 ग्राम बाजरे के आटे का सेवन करते हैं तो वह अपनी प्रतिदिन की आयरन की आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं। बाजरे का आटा विशेष कर भारतीय महिलाओं के लिए खून की कमी को पूरा करने का एक सुलभ साधन है समय के साथ बदलती जीवन शैली, दिनचर्या, खान-पान और मशीनीकरण ने इस युग में हमारी शारीरिक क्षमता को कम कर दिया है।

संक्रमण के महामारी के साथ ही गैर संचारी रोगों तथा जीवन शैली से जुड़ी बीमारी जिसे मधुमेह स्ट्रोक रक्तचाप किडनी लीवर अधिक रोगों के बढ़ते मामलों के अलावा पुरानी बीमारियों की गंभीर समस्याओं से हम जूझ रहे हैं। रोगों की विकरालता में अस्वस्थ खान-पान की मुख्य भूमिका है जो सभी आयु वर्ग के लोगों को समान रूप से प्रभावित करती है। जंक फूड को अलविदा कहकर हमें अपने पारंपरिक भोजन के ओर लौटने की नितांत आवश्यकता है। ऑर्गेनिक खेती के विकल्प के रूप में भी अनाज वाली फसलों में रासायनिक उर्वरक कीटनाशक का प्रयोग करने की जरूरत नहीं होती है कोरोना के बाद मोटे अनाज इम्यूनोटी पोस्ट के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। मोटे अनाजों में ओमेगा 3 फैटी एसिड की प्रचुर मात्रा होने के कारण यह हमें हृदय रोगों से भी बचाते हैं।



जीवन की सार्थकता



श्री विकास कुमार सोह्रा
(सहायक लेखा अधिकारी)
अहमदाबाद शाखा कार्यालय

ज्ञान विज्ञान एवं मशीनों के इस युग में जानवरों, पशु पक्षियों, समुद्री जीव जंतुओं एवं अन्य जीवों की हजारों प्रजातियां आदि की खोज की जा चुकी हैं जो अनवरत अभी भी जारी है। मनुष्य की प्रजाति एवं जीवन को इन सबसे सर्वोत्तम माना जाता है।

मनुष्य जन्म के साथ ही कुछ पाने की बेचैनी प्रारंभ हो जाती है। एक बच्चा जब जन्म लेता है, तब से लेकर मृत्यु तक सदैव संघर्षशील रहता है, चाहे संघर्ष का रूप समय-समय पर अलग-अलग जरूर बदलता रहे। इस जीवन में बेचैनी हमेशा बनी रहती है। जिंदगी में संघर्ष के दौरान खुद को स्थिर, शांत और खुश तथा धैर्यशील रख पाना आसान नहीं होता है। लोग अपनी खुशी के लिए कभी-कभी अपने उसूल और मर्यादा तक को भी लांघ जाते हैं। उन्हें पता भी नहीं चलता कि इस दौरान उन्होंने दूसरों की जिंदगी को बर्बादी में धकेल दिया है। दूसरों के प्रति उत्सुकता ही इसे जन्म देती है, जिस बात के लिए आमतौर पर आदमी उत्सुक रहता है उससे उसका कोई लेना-देना नहीं होता है। लोगों को कुछ पाने की चाह बेशक रखनी चाहिए किंतु नहीं पा सकने पर गलत तरीकों का चुनाव नहीं करना चाहिए।

एक प्रसिद्ध लेखक ने सच ही कहा है:-

**जो चाहा वह मिल जाना सफलता है,
जो मिला उसको चाहना प्रसन्नता है।**

हमें अपने बेहतर भविष्य या आने वाले कल के लिए खुद पर ध्यान देना चाहिए और जो भी प्राप्त नहीं कर सके तो अच्छे समय का इंतजार करना चाहिए। समय खुद को दोहराता जरूर है और मौका देता है। यह सच है कि प्रगति बदलाव और संघर्ष के बिना संभव नहीं है लेकिन जो अपनी सोच नहीं बदल सकता तो वो जीवन में कुछ भी नहीं बदल सकता है। मनुष्य कुछ पाने के लिए चापलूसी, दूसरों की बुराई, गलत तरीकों आदि को अपनाता है। इस संबंध में कवि रामधारी सिंह दिनकर की कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं जिससे जीवन के संपूर्ण यथार्थ को व्यक्त किया जा सकता है:-

छोड़ो मत अपनी आन चाहे शीश कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए |
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,
मरता जो एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मृत्यु के मुख पर चरण धरो रे,
जीना हो तो संघर्ष से नहीं डरो रे।

कई महापुरुषों, ऋषियों, दार्शनिकों आदि ने जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने के भरसक प्रयास किए हैं। इसी संदर्भ में एक प्रेरक प्रसंग है कि एक बार गुरु “अगस्त्य” के पास एक राजकुमार आया।

वह उनसे शिक्षा प्राप्त करना चाहता था। शिक्षा प्राप्त करने के लिए राजकुमार अगस्त्य ऋषि से मिला और बोला ; मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ किंतु उससे पहले आपको मेरे कुछ सवालों का जवाब देना होगा। “यदि मैं आपके उत्तरों से संतुष्ट हुआ तो ही मैं आपको अपना गुरु स्वीकार करूंगा।

राजकुमार ने गुरु से सवाल पूछे ;

1. “क्या आप मुझे मानव जीवन का उद्देश्य बता सकते हैं ?”

2. “क्या आप मुझे जीवन का अर्थ बता सकते हैं ?”

3. “मृत्यु क्या है और उसके बाद कौन सा जीवन है ?”

गुरु ने उसके तीनों प्रश्नों के जवाब नहीं दिए। शिष्य ने बोला; **“मैं आपका शिष्य नहीं बन सकता।”** सभी अन्य शिष्य राजकुमार के इस हरकत पर बहुत क्रोधित हुए। गुरु ने राजकुमार से कहा; **“तुमने तो अभी जीवन जीना शुरू ही नहीं किया है, तुम उसके अर्थों के बारे में क्या जानोग”** गुरु ने कहा; “तुम्हें यह बात मैं उदाहरण के माध्यम से समझाता हूँ।” “मान लो तुम्हारे सामने भोजन रखा हुआ है। उसके बारे में अटकलें लगाने से कि वह भोजन अच्छा है या बुरा, बेहतर होगा कि उसे चख लिया जाए। यही बात जीवन के बारे में भी लागू होती है दूसरों को जीते देखकर कभी जीवन का अर्थ नहीं समझा जा सकता है। स्वयं जीवन को जीने से सब सवालों के जवाब मिल पाएंगे।” गुरु की बात सुनकर सभी शिष्यों के चेहरों से शंका के भाव समाप्त हो गए।

अर्थात् यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मानव जीवन संघर्ष से भरा पड़ा है लेकिन हमें धैर्य और सकारात्मक विचारों के साथ अपने जीवन को आगे बढ़ाने का और जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।



मैं क्यों रुकूँ



श्री राजेश सी. तिवारी
(सहायक लेखा अधिकारी)
अहमदाबाद शाखा कार्यालय

मैं क्यों रुकूँ

साँझ अभी ढली नहीं

मैं क्यों रुकूँ

मंजिल अभी मिली नहीं

मैं क्यों रुकूँ

रास्ता बहुत लंबा है

मैं क्यों रुकूँ

अभी टूटा नहीं जड़बा

मैं क्यों रुकूँ

कारवाँ मुझसे वाबस्ता है

मैं क्यों रुकूँ

मेरे कंधे उम्मीदों का बस्ता है

मैं क्यों रुकूँ

हौसलों को आजमाना है

मैं क्यों रुकूँ

अभी खुद से नज़र मिलाना है

मैं क्यों रुकूँ

कदमों में जान बाकी है

मैं क्यों रुकूँ

जिंदा हूँ, अरमान बाकी है

-अज्ञानी-



कोई ख्वाब



श्री रोहित जुरेल
एमटीएस
अहमदाबाद शाखा कार्यालय

कोई ख्वाब अधूरा छूट गया
सुबह का भुला घर आया,
कोई शाम ढले पे रूठ गया
कोई ख्वाब...

किस्मत को कोई क्या कोसे
जब किस्मत बनाने वाला रूठ गया
कोई ख्वाब...

पक्के थे घर सबके, खूब नहाए बारिश में
एक मेरा घरौदा कच्चा था, जो चंद बूंदों से ही टूट गया,
कोई ख्वाब...

छलक आए अशक आँखों में
हँसते हँसते घूँट गया,
यार-ए जिगरी में माहिर थे हम भी
यारो बाहर से ही समझा,
कुछ अंदर ही अंदर टूट गया
कोई ख्वाब.....

सावधान थे गैरों से नाज़िम
फिर भी कोई जालिम,
अपनो से मजे लूट गया
कोई ख्वाब अधूरा छूट गया।

एकांत और अकेलापन



श्री सुखदेव गोयल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
अहमदाबाद शाखा कार्यालय

मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रयोगात्मक निष्कर्षों से यह सिद्ध कर दिया है कि मानव के साथ-साथ पृथ्वी पर विचरण करने वाली लगभग सभी प्रजातियाँ किसी न किसी रूप में सामाजिक होती हैं। मानव ने तो सदियों पुरानी सभ्यताओं से ही समाज में रहना शुरू कर दिया था। समय के साथ सामाजिकता के स्वरूप एवं अर्थ बदलते गए। समाजीकरण के फलस्वरूप ही मानव की सभ्यताएँ आगे बढ़ी एवं मानव प्रजाति का विकास अन्य प्रजातियों की अपेक्षा द्रुत गति से हुआ।

समाजीकरण का अर्थ यह है कि समाज में रहकर इसकी विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना और सक्रिय भागीदार होने के साथ-साथ समाज की विभिन्न परम्पराओं में श्रद्धा रखना। कालांतर में समाज का स्वरूप और बदलने लगा। इसके व्यापक अर्थ एवं स्वरूप के स्थान पर इसका संकुचित अर्थ लिया जाता है। वर्तमान में माने तो इसका अर्थ यह है कि परिवार और कुछ रिश्तेदारों के साथ सामाजिक रूप से मिल जुल कर रहना।



समाज के इस बदलते स्वरूप में अकेलेपन की अवधारणा विकसित होने लगी है। एकांत और अकेलापन लगभग एक जैसे ही लगते हैं लेकिन इनके सूक्ष्म अंतर के कारण इनकी अवधारणा विशुद्ध रूप से अलग है। एकांत में विचार सकारात्मक रहते हैं और अकेलेपन में विचार नकारात्मक हो जाते हैं, एकांत में आनंद मिलता है और अकेलेपन में निराशा बढ़ती है जब भी कोई व्यक्ति कहीं अकेला होता है तो उसे एकांत समझ लिया जाता है। जबकि, ये सही नहीं है। इन दोनों शब्दों के अर्थ अलग-अलग हैं।

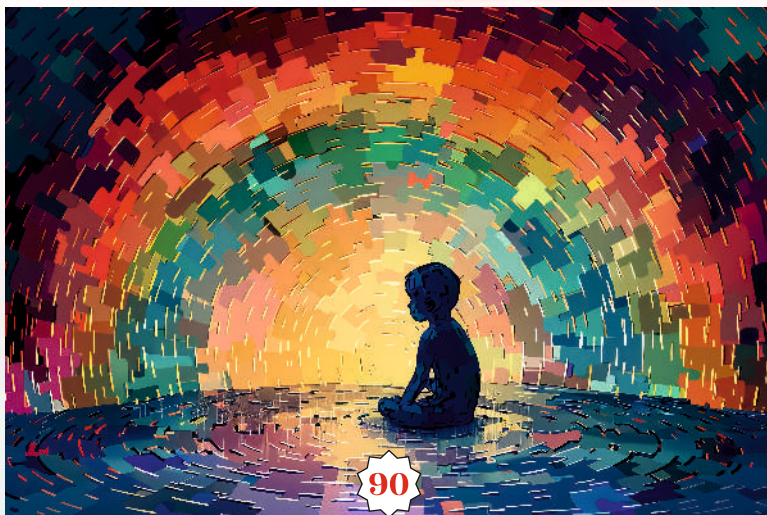
आजकल के कई युवा कुंठित अवस्था में **“एकांत” शब्द का अर्थ “एक का भी अंत से लेते हैं”** जो कि इसके नकारात्मक अर्थ विस्तार को प्रस्तुत करता है।

अकेले होकर स्वयं का सामना करना भयावह और दुखदाई है, और प्रत्येक को इसका कष्ट भोगना पड़ता है। इससे बचने के लिए और मन को वहां से हटाने के लिए कुछ भी नहीं करना चाहिए। हर एक को इस पीड़ा को भोगना होगा और इससे गुजरना होगा। यह कष्ट और यह पीड़ा एक अच्छा संकेत है कि तुम एक नये जन्म के नजदीक हो, क्योंकि हर जन्म के पूर्व पीड़ा अवश्यंभावी है। इससे बचा नहीं जा सकता और इससे बचने का प्रयास भी नहीं करना चाहिए क्योंकि यह तुम्हारे विकास का एक आवश्यक अंग है।

जब तुम अकेले होते हो तो पीड़ा क्यों होती है? पहली बात यह है कि तुम्हारा अहंकार बीमार हो जाता है। तुम्हारा अहंकार तभी रह सकता है जब तक दूसरे हैं। यह संबंधों में विकसित हुआ है, यह अकेले में जी नहीं सकता। इसलिए यदि ऐसी स्थिति आ जाए जिसमें यह जी ही नहीं सकता, तो यह घुटन महसूस करने लगता है, उसे लगता है कि यह मृत्यु के कगार पर है। यह सबसे गहरी पीड़ा है। तुम ऐसा महसूस करते हो जैसे तुम मर रहे हो। लेकिन यह तुम नहीं हो जो मर रहे हो, यह केवल तुम्हारा अहंकार है, जिसे तुमने स्वयं होना मान लिया है, जिसके साथ तुम्हारा तादात्म्य हो गया है। यह जिंदा नहीं रह सकता क्योंकि यह तुम्हें दूसरों के द्वारा दिया हुआ है। यह एक योगदान है। जब तुम दूसरों को छोड़ देते हो तब तुम इसे ढूंढ नहीं सकते।

अकेले में तकलीफ तो होगी क्योंकि यह एक कला है। ध्यान की अवस्था होने पर ही अकेलापन, एकांत में बदल जाता है। जिस दिन अकेलेपन में दूसरे की कमी नहीं खलती और अकेले रहने में आनंद का आभास होने लगता है उसी दिन यह सकारात्मक अकेलापन अर्थात एकांत में बदल जाता है।

अकेलापन एवं एकांत की अवधारणा कुछ इस तरह है कि हमें इसे “मानने” की बजाय “जानने” की कोशिश करनी पड़ेगी। इस सन्दर्भ में जानने के लिए पहला कदम यह है कि इसकी सामान्य अवधारणा को “मानने” से मुक्त हो जाना। अंततः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि “एकांत” जीवन के नए द्वार खोलता है जबकि भीड़ आपको भेड़ बनाती है। एकांत ही जीवन जीने का एक सर्व सुलभ तरीका है जो आपको मनुष्य बना सकता है।



संवाद जो तुमसे कभी हुए नहीं...



श्री नीरज नागल
सहायक लेखा अधिकारी

1. **चलो आज मैं ले चलता हूं तुम्हें कहीं दूर सुनसान सड़क पर,**
जहां कोई न हो,
जहां ना हो कोई भी सभ्यता, ना कोई रिश्ता, ना कोई बंधन....।
जहां हों सिर्फ हम दोनो,
जहां हवा की भी आवाज ना हो और सुन सकें एक दूसरे को बिना कुछ कहे....।
जहां हो इतनी शांति की महसूस कर सकें एक दूसरे की धड़कन को....।
हो जाऊं मैं गूंगा कुछ देर सिर्फ तुझे सुनने के लिए....।
जहां न हो कोई सोच का बंधन और कह सको तुम अपनी सारी बातें बिना सोचे समझे....।
जहां देखते रहें एक दूसरे को घंटो, जहां पलको का झपकना भी मंजूर न हो....।
जहां भूल जाएं इस दुनिया को और समझें एक दूसरे को जो इस दुनिया में समझना मुश्किल है....।
चलो ले चलता हूं तुम्हें एक सुनसान सड़क पर.....।।

2. **कौन हो तुम....?**
एक आने वाले गजल की रूपरेखा,
जो लिखी जाएगी तुम्हारी आंखों पे,
जो संवारी जाएगी तुम्हारे झुमके से,
जो होगी उतनी ही खूबसूरत जितनी लगती हो तुम मंद मंद रोशनी में
जो होगी खत्म तुम्हारी हंसी पे,
क्योंकि उसके बाद मैं मौन हो जाता हूं,
कुछ सोच ही नहीं पाता।।



सेवा में,

वरिष्ठ हिंदी मलुमादक
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) गुजरात,
रेस कोर्स रोड, राजकोट - 360001

विषय:- हिंदी पत्रिका "गिरनार" के 37वें अंक की ई-प्रति - के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "गिरनार" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतद्विषय में पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के राजभाषाक अन्तर्गत आपकी कार्यालय के राजभाषा अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सकारात्मक है।

पत्रिका का यह अंक राज-राज्या एवं मुख्य स्तरों के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है। साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "गिरनार अपनी - अपनी" एवं "अनसुख की सुख बूझ" बहुत ही प्रेरक एवं भावपूर्ण है। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएँ अत्यंत प्रेरक, उत्प्रेरक, उत्प्रेरणापूर्ण एवं सकारात्मक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Signed by Rajesh Kumar
Swayambhu
Date: 24-04-2024 15:32:08

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन

मुख्य नम, अतिरिक्त प्रमुख, ई-मेल-35-सी-1, विपुल बाजार, सोनी नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.) दूरभाष : 0522-2970789, फ़ैक्स : 0522-2970780 (ए.प्र.)
3rd Floor, Audit Bhawan, T.C-35-V-1, Vibhuli Khanda, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone: 0522-2970789, Fax: 0522-2970780 (FD)

भारत सरकार
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान मन्त्री कार्यालय (लेखापरीक्षा)
विभाग प्रमुख, विभाग - 171 003



Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla 171 003

संदर्भ: हि.क./बाह्य पत्रिका/2023-24/1610930/2024दिनांक:-09-05-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.), गुजरात,
रेस कोर्स रोड, राजकोट-360001

विषय:- "गिरनार" पत्रिका के 37वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "गिरनार" के 37वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए बधाई एवं सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित लेख "प्रकृतिक संसाधन लेखाकन, ईश्वर का अस्तित्व-2, शिक्षा का बदलता स्वरूप, गाँव आधारित खेती, भारत विश्व का मार्गदर्शक, शब्दों का ताना बाना, किस्मत अपनी-अपनी, मनोवैज्ञानिक प्रबंधन, आवश्यकता एवं अविष्कार, मानव मूल्य आदि लेख रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं। इस के अतिरिक्त कविताएँ, "जिंदगी, ऐसा एक अंतरिक्ष बनाएँ, दोस्ती, लापरवाही, हौसला आदि भी काफी उत्कृष्ट एवं रोचक हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Signed by Anuradha Sood
Date: 09-05-2024 16:56:10

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
Anuradha Sood, SAO(HINDI)-AS,
HINDI

संदेश

भारतीय प्रमुख निदेशक लेखापरीक्षा (लेखा एवं हक) विभाग प्रमुख

लेखा भवन, रेलवे रोड, राजकोट - 474002

क्रमांक / प्रशासन(हिंदी) अभिमत/ प्रमुख संख्या-47/हि-07

दिनांक -16/05/2024

सेवा में,

आपके अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक),

गुजरात, राजकोट

विषय:- भारतीय प्रमुख निदेशक लेखापरीक्षा के 37वें अंक पर अभिमत।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "गिरनार" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित लेख विचारप्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं। पत्रिका में अतिरिक्त विभिन्न रचनाओं में जो ध्यानकेंद्रित करते हैं, उनमें श्री सतीश कुमार द्वारा रचित लेख "शिक्षा का बदलता स्वरूप", श्री स्वप्ति कुमार का लेख "शब्दों का ताना-बाना", श्री हुसैनी सद्दिकोत का लेख "ईश्वर का अस्तित्व", श्री मुकेश कुमार का लेख "अनसुख की सुख बूझ", श्री राकेश कुमार का लेख "गाँव आधारित खेती", श्री वैभव मिश्रा की कविता "जिंदगी-विशेष" अत्यंत रोचक हैं। पत्रिका की संपादक भी मनमोहक हैं।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को धन्यवाद है। साथ ही कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की सेवा एवं प्रसार में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। पत्रिका की प्रगति प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

Signed by Ravindra Singh
Date: 06-05-2024 11:15:15



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाऊस, नई दिल्ली
NORTHERN RAILWAY, BARODA HOUSE, NEW DELHI - 110001



दिनांक:

सं. हिंदी/17-18/2015/पत्रिका-1

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

गुजरात, राजकोट - 360001

विषय:- हिंदी पत्रिका "गिरनार" के 37वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका "गिरनार" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ देश की निरंतर छूती ऊँचाइयों का परिचय देता हुआ अत्यंत मनमोहक है। श्री सतीश कुमार द्वारा रचित लेख "शिक्षा का बदलता स्वरूप", श्री राकेश कुमार द्वारा रचित "गाँव आधारित खेती", श्री योगेश कुमार द्वारा रचित लेख "आइए जीवन को सार्थक बनाएँ" अत्यंत विचारणीय व सराहनीय हैं। श्री अभिषेक पाण्डेय द्वारा रचित कविता "एक ऐसा अन्तरिक्ष बनाएँ" व श्री दीपक परमार द्वारा रचित कविता "हौसला" प्रेरणादायक हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी



